* श्री वीतरागायनम *

॥ सव्व जग जीव रक्खणदयट्ठयाए ॥
॥ पावयण भगवया सुकहियं ॥

चित्रमय।

अनुकम्पा-विचार

संशोधित तथा परिवर्द्धित संस्करण
जिसे

श्री साधुमार्गी जैन पूज्य श्री १००८ श्री हुक्मीचन्द जी महाराज की सम्प्रदाय के वर्तमान आचार्य्य श्री श्री १००८ श्री जवाहिरलाल जी महाराज ने भोले जीवों के लाभार्थ रचा।

संग्रहकर्त्ता—
पं० कृष्णानन्द त्रिपाठी,

वीर सं० २४५६ ⎫ मूल्य ⎧ वि० सं० १९८६
श्री लाल सं०-१२ ⎭ १।≈) ⎩ प्रथमवार २०००,

आजकल कतिपय जैन नामधारी व्यक्तियों ने अपने विपरीत मन्तव्यों द्वारा दया दान आदि पवित्र महावीर स्वामी के सिद्धान्तों का जिस निष्ठुरता के साथ विरोध किया है उसका अवलोकन करते हुये कहना पडता है कि—तीथकरों के उत्तम सिद्धान्तों को इन निर्दय सिद्धान्तों से बचाना प्रत्येक धार्मिक जैन का कर्त्तव्य है।

मारवाड और मेवाड में रहनेवाली बहुसंख्यक जनता अशिक्षित तथा शास्त्र सम्बन्धी ज्ञान से रहित होकर दान, दया के विपरीत सिद्धान्त को मानती है, उसके सुधार तथा शिक्षा का कोइ उपयुक्त साधन सम्प्रति नहीं है, वल्कि दया दान के विरोधी नामधारी "जैन साधुओं" की बनाइ हुई ढालों (पदों) के फेर में पडकर बुरी तरह से अज्ञानान्धकार में फसी हुई है।

इनके उद्धार का उपाय—तर्क वितर्क करना—सच्छास्त्र अवलोकन करना, अत्यन्त निषेध (सख्त मना) किया गया है। अत इनके उद्धार तथा धर्म सम्बन्धी शास्त्रीय ज्ञान का एक यही उपाय शेष रह गया है । वह है अनुकम्पा आदि विषयक ढालों का प्रचार करना।

इन नामधारी "जैन साधुओं" की ढालों में महावीर स्वामी के सिद्धान्तों की जैसी छीछा लेदर की गई है उसे देखकर प्रत्येक सहृदय व्यक्ति को अवश्य महान क्लेश होगा। जो 'दया' जैन-धर्म का प्राण है, उसे एकान्त पाप कह कर इन लोगों ने धर्म को अधर्म का स्वरूप दे दिया है।

अतः इस अज्ञानान्धकार में फंसी हुई जनता की दयनीय दशा पर ध्यान देकर २२ सम्प्रदाय के आचार्य श्री १००८ पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज ने सद्धर्म ज्ञान कराने के निमित्त यह आवश्यक समझा कि—इनकी धर्म विरुद्ध ढालों का प्रतिशोध उसी प्रकार की ढालें बनाकर किया जाय, जिससे सर्व साधारण की बुद्धि मे सत्य ज्ञान का प्रकाश हो जावे। ऐसा धार कर पूज्यश्री ने शास्त्रीय प्रमाणों के अनुकूल उसी भाषा में ढाले बनाकर (क्रमशः) उनकी ढालों का उत्तर योग्यता पूर्वक दिया हैं, जिसका जनता पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा है।

उनकी उपयोगिता देखकर शास्त्रीय घटनाओं की वास्तविकता चित्रों द्वारा भी प्रगट करने का भाव उत्पन्न हुवा, जिससे साधारण जनता और भी सुगमता से उन्हें हृदयङ्गम कर सके उसीके फलस्वरूप "चित्रमय—अनुकम्पा—विचार" नामक यह ग्रंथ आपके कर कमलों में शोभित हैं। पुस्तक की भाषा के सम्बन्ध में भी कुछ निवेदन करना है।

पूज्य श्री का जन्म मालवा देश के अन्तर्गत थाँदला नामक ग्राम में वि० स० १९३२ में हुवा था। आपकी माता का नाम

नाथी बाई तथा पिता का नाम श्री जीवराज था। आप ओस-वाल वंश में कुवाड गोत्रीय थे। सांसारिक विषयों को विष के समान समझ कर पूर्ण वैराग्य सम्पन्न हो, आत्म कल्याणार्थ मुनी श्री १००८ श्री मगन मुनी जी से सं० १९४९ वि० में दीक्षा ग्रहण की। अत आपका जन्म मारवाड मे न होने से मातृ भाषा मारवाडी नहीं है। तथापि अपनी विमल प्रतिभा से थोडे ही समय मे मारवाडी भाषा भी अच्छी प्रकार जानली।

धर्म सम्बन्धी सिद्धान्तों को यदि मारवाडी भाषा मे न बना कर शुद्ध हिन्दी में रचना करते तो जिस सिद्धान्त को लक्ष्य करके इसकी रचना की गई है उससे सर्वथा नहीं ता अधिकाश में जनता को उस ज्ञान से वंचित रहना पडता, क्योंकि प्रत्येकप्राणी अपना मातृ भाषा में जितना शीघ्र किसी ज्ञान को धारण कर सक्ता है उतना किसी अन्य भाषा से नहीं। ऐसा निश्चय कर पूज्यश्रीजी ने इन ढालों को मारवाडी भाषा में उसी तर्ज और उदाहरण पर रचा, जिस तर्ज और उदाहरणमें दया-दान को पाप बतला कर धर्म विरुद्ध ढाले बनाई गई थीं।

पूज्यश्रीजी ने भाषा और कविता पर उतना ध्यान नहीं दिया है जितना इन तेरह पंथी नामधारी साधुओं के अध्यारोपित दान-दया के विरुद्ध जमे हुये भावों के मिटाने पर दिया है। आपने अपनी कवित्व-शक्ति का परिचय देने के लिये नहीं, किन्तु भयंकर अंधकार में पडी हुई जनता का उद्धार करनेके लिये ही इनका निर्माण किया है। अत पाठक वृन्द इस पुस्तक

को कविता की दृष्टि से नहीं, भावों की दृष्टि से देखने की कृपा करेंगे ।

पूज्य श्रीजीने यद्यपि शास्त्रानुकूल ही ढालो की रचना की है तथापि अपने दृष्टि दोष से यन्त्रालय की या किसी कार्यकर्त्ता की असावधानी से (जैसा होना स्वाभाविक है) कोई भूल रह गई हो तो उसके लिये कार्यकर्त्ता ही उत्तरदायी है। पुस्तक के आदि मे शुद्धिपत्र लगा दिया गया है परन्तु मात्रायें यंत्रालय चलते २ टूट जाती हैं। अतः कुल पुस्तक का शुद्धिपत्र होना किसी अंश मे असम्भव नही तो दुस्साध्य अवश्य है।

इस संस्करण मे पूज्य श्री १००८ श्री जवाहिरलाल जी महाराज के सुयोग्य शिष्य श्री गब्बूलाल जी महाराज की बनाई हुई ढाले भी उपयुक्त समझकर अन्त मे सम्मिलित कर दी गई है। हमे पूर्ण विश्वास और आशा है कि निष्पक्ष तथा सरल मनोभाव से अध्ययन करने पर अज्ञान का परदा अवश्य खुल जायगा।

विनीत—

कृष्णानन्द त्रिपाठी।

विषय-सूची

पहली ढालके दोहे

ढाल पहली

दूसरी ढालके दोहे पेज-५६

ढाल दूसरी

तीसरी ढालके दोहे

ढाल तीसरी

छठी ढालके दोहे—पेज-१७६

ढाल—छठी — पेज-१७८

—

ढाल नवमी

श्री गब्बूलालजी कृत ढालें

॥ इति शुभम् ॥

चित्रमय अनुकम्पा-विचार

दोहा

करुणा वरुणालय प्रभो, मङ्गलमूल अनन्त ।
जय-जय जिनवर विबुधवर, सुखमय सुषमावन्त ॥१॥
अनन्त जिन हुआ केवली, मनपर्य्यव मतिमन्त ।
अवधिधर मुनि निर्मला, दशपूर्व लगि सन्त ॥ २ ॥
आगम बलिया ये सहू, भाषे आगम सार ।
वचन न श्रद्धे तेहना, ते रूलसे ससार ॥ ३ ॥
अनुकम्पा आछी कही, जिन आगम रे माय ।
अज्ञानी सावज कहे, खोटा चोज लगाय ॥ ४ ॥
ढाला नहि, जाला हुई, अनुकम्पा री घात ।
पचमकाल प्रभाव थो, हा ! हा ! त्रिभुवन तात ॥५॥
अनुकम्पा उठायवा, माडो माया जाल ।
मूरख मछला ज्यों फॅस्या, रूले अनन्तो काल ॥ ६ ॥
दुःखमि आरे पचमे, कुगुरु चलायो पन्थ ।

अनुकम्पा खोटी कहे, नाम धरावे सन्त ॥ ७ ॥
आक-थोर ना दूध सम, अनुकम्पा बतलाय ।
मन सों सावज नाम दे, भोलाने भरमाय ॥ ८ ॥
सपाप सावज नाम है, हिन्सादिक थी होय ।
अनुकम्पा हिंसा नहीं, सावज किस विध होय ॥ ९ ॥
अनुकम्पा रक्षा कही, दया कही भगवन्त ।
पाप कहे कोई तेहने, मिथ्या जाणो तन्त ॥ १० ॥
अमृत एक सो जाणज्यो, अनुकम्पा पिण एक ।
भेद प्रभू नहिं भाषियो, सूतर मांही देख ॥ ११ ॥
तो पिण कुगुरु कदाग्रहे, चढ़िया बिस्वा बीस ।
मन सूं करे परूपणा, करड़ी ज्यांरी रीस ॥ १२ ॥
निरवदने सावद वलि, अनुकम्पा रा भेद ।
अणहूंता कुगुरु करे, ते सुण उपजे खेद ॥ १३ ॥
भरमजाल ताड़न तणू, रचूँ प्रबन्ध रसाल ।
धारो भवजीवां ! तुम्हें, बरते मंगलमाल ॥ १४ ॥

—— * ——

ढाल—पहली

१—अधिकार मेघकुंवरका

(तर्ज—धिग धिग छे उणी नागश्रीने)

मेघकु वर हाथी रा भवमें,
करुणा करी श्री जिनजी बताई।
प्राणी, भूत, जीव, सत्व री
अनुकम्पा की, समकित पाई।
अनुकम्पा सावज मत जाणो ॥ अनु० ॥१॥
निज देह री परवा नहिं राखी,
पर अनुकम्पा रो हुवो रसियो।
बीस पहर पग ऊचो राख्यो,
पर-उपकार सूँ मन नहिं खसियो ॥अनु०॥ २॥
पडतससार कियो तिण विरिया,
श्रेणिक घर उपनो गुन पाई।

आठ रमणी तज दीक्षा लीधी;
ज्ञाता अध्ययने गनधर गाई ॥अनु०॥ ३ ॥
(कहे) "बलता जीव दावानल देखी,
सुण्डसूँ पकड़के नाय बचाया !"
मूढ़मत्यांरी या खोटी कल्पना,
बलता जीव सूतर न बताया ॥अनु०॥४॥
मण्डल जीवां थी पूरण भरियो,
शस बैठन ने स्थान न मिलियो।
जीव लाय किण जागा मेले,
खोटो—पक्ष मिथ्याती झलियो ॥अनु०॥५॥
सुसलो न मार्‌यो अनुकम्पा बतावे,
(तो) एक जोजन मण्डल रे मांई।
जीव घणा जामें आइने बसिया,
(त्यां) सगलांने हाथी तो मार्‌या नाहीं ॥अनु०॥६॥
(जो) सुसलो न मार्‌या रो धर्म बताओ,
(तो) दूजा (ने) न मार्‌यां रो क्यों नहि केवो।
(जो) सुसला रा प्राण बचाया धर्म है,
तो दूजा जीव बचाया रो (पिण) केवो ॥अनु० ॥७॥
जोजन मन्डले जीव जो बचिया,

हाथी भवसें मेघकुमार।

ढाल पहली गाथा ७, ८ का भाव चित्र।

"(जो) सुसल्यो न मास्यो रो धर्म बतावो,
(तो) दूजा (ने) नमास्याँ रो क्यों नहिं केवो॥

(जो) सुसलारा प्राण बचाया धर्म है,
तो दूजाजीव बचाया रो (पिण) केवो॥ अनु० ॥७॥

जोजन मण्डल जीव जो बचिया,
मंदमती ताने पाप बतावे॥

त्यांरे लेखे सुसलो बंचियारो,
'धर्म" कहो जी किण विध थावे॥अनु०॥८॥

मन्दमती ताने पाप * बताये ।

त्यार लेखे, सुमलो बचिया रो,

'धर्म' कहो जी किण विध थावे ॥अनु०॥८॥

उलटी मती सू ऊँधी ताणे,

जीव बचायामे पाप बखाणे ।

हाथी तो जीव बचाह ने तिरियो,

उत्तम जन शङ्का नहिं आणे ॥अनु०॥९॥

२-नेमनाथजीका करुणा -अधिकार

तीन ज्ञान धर नेम प्रभूजी,

ब्याव न करणा निश्चय जाणे ।

बाल-ब्रह्मचारी बाविसमों,

शोभी जिनवर जिनजी बखाने ॥अनु०॥१॥

---

* जैसा कि व कहते हैं —

माछलो एक जोजन नो कीधो,

घणा जीव बचिया तहां मांई ।

तिण बचिया रो धम न चाल्यो

समकित आयां बिन समझ न कांई ।

आ अनुकम्पा सावज्ज जाणो ॥

(अनुकम्पा ढाल १ गाथा ४)

जीव दया सब जगने बतावा,
जादवी हिंसा मेटण काजे ।
पंचेन्द्रि प्राणी रा प्राण बचावा,
प्रत्यक्ष न्याय प्रभूजी रो राजे ॥ अनु०॥२॥
इत्यादि उपकार रे अर्थे,
ब्याव करण री वात ज मानी ॥
स्नान अर्थे पानी बहु देख्यो,
जोमें भी जीव जाने वहु ज्ञानी ॥अनु०॥३॥
पिन पशु-पक्षी री हिंसा मोटी,
रक्षा पिण ज्यारी मोटी जानी ।
यो ही भेद सब जगने बतावा,
स्नान कियो सूतर री या वानी ॥ अनु०॥४॥
मन्दमती कहे जीव सरीखा,
एकेन्द्री पंचेन्द्री भेद न दाखे ।
छोटी, मोटी हिंसा रा भेदने,
केई अज्ञानी 'सरीखा' भाखे ॥अनु०॥ ५ ॥
जो या श्रद्धा नेम री होती,
तो पानी ने देखि स्नान न करता ।
वाड़ा रा जीवां थी असंख्यगुनो ये,

भगवान श्री नेमीनाथजी का जीव छुड़ाना।

ढाल पहली गाथा ३, ४ और १३, १४ का भाव चित्र।
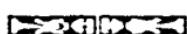
इत्यादि उपकार रे अर्थ,

व्यावकरणरो वातज मानो ॥

स्नान अर्थे पाणी बहु देख्यो,

जामेभी जीव जाणे बहु ज्ञानी ॥३॥

पिण पशु पक्षीरो हिंसा मोटी,

रक्षा पिण ज्याँरी मोटी जाणी ॥

योही भेद सब जगने बतावा,

स्नान कियो सूतररी या वाणी ॥४॥

"व्याहरे काज मरें बहु प्राणी,

हिंसा से डरिया निर्मल ज्ञानी ॥

सारथि प्रभुजीरो मनस्या जाणी,

जीवा ने छोड़ दिया अभय दानी ॥१३॥

जीव छुट्याँसुं नेमजी हरण्या,

बक्षीसी दीनी सूत्रमें गाई ॥

कुंडल युग्म अरु कणडोरो,

सर्व आभूषण दीधा वधाई ॥१४॥

तत्क्षन देखि ने पीछो फिरता ॥अनु०॥६॥

पशुपखी री दया (रक्षा) र माहीं,
लाभ घनो प्रभु परगट कीनो।
अल्प हिंसा पानी री जाने,
तिन थी पचेन्द्रियमे मन (ध्यान) दीनो ॥अनु०॥७॥

छोटी मोटी हिंसा रक्षा रा,
ज्ञानी तो भेद परगट जाने।
मन्दमती रक्षा नहिं चावे,
तेथी ते तो ऊँधी ताने ॥अनु०॥ ८ ॥

स्नान करी परनोजन चाल्या,
तोरन पर देख्या बहु प्रानी।
वाडा पिंजरमे रूकिया दुखिया,
सूत [सारथि] से पूछे करुना आनी ॥अनु०॥९॥

सुख अर्थी ये जीव बिचारा,
क्योंकर याने दुखिया कीया।
तब ना सारथि इनविध बोले,
स्वामी वचन सुनो हम सीया ॥अनु०॥ १०॥

ये सहु भद्रक प्रानी प्रभुजी,
" ब्याह कारन तुमरा मन आणी।

आमिष (मांस) भक्षी रे भोजन सारू,
बांध्या छे घात दिल ठानी ॥अनु०॥ ११॥
सारथि वचने रु ज्ञान से जाणी,
दीन दयालु दया दिल आणी।
जीवां तणो हित बंछ्यो स्वामी,
आतम सम जाण्या ते प्राणी ॥अनु०॥१२॥
व्याह रे काज मरें बहु प्राणी,
हिंसासे डरिया निर्मल ज्ञानी !
सारथि प्रभुजी री मनस्या जाणी,
जीवांने छोड़ दिया अभयदानो॥अनु० ॥१३॥
जीव छुट्या सूँ नेमजी हरष्या,
बक्षीसां दीनी सूत्र में गाई।
कुण्डल युग्म अरू कणडोरो,
सर्व आभूषण दीधो बधाई ॥अनु०॥१४॥
पीछे वरषीदान जो दीधो,
दान-दया दोनूँ ओलखाया।
संजम सहस्रावनमें लीधो,
केवल ले प्रभु मोक्ष सिधाया ॥अनु०॥१५॥
(कहे) "जीवां री हित नहिं नेमजी वंछ्यो"

दीपिकादिक री साख बतावे ।
दीपिकामे हितकारी (अर्थ) * भाख्यो,
उणने अज्ञानी जाण छिपावे ॥अनु०॥१६॥
नहिं मारण ने हित बताओ,
(तो) जीव बचाया अहित किम थावे ।
नहिं मारण निज हित पहिचाणो,
मरतो बचाया स्व परहित पावे ॥अनु०॥१७॥
जीव बचे जीने रक्षा कही प्रभु,
देही (जीव) री रक्षा ने दया बताई ।
सम्वरद्वार मे पाठ उघाडो,
मन्दमती र मन नहिं भाई ॥ अनु० ॥१८॥
"जीवाने नेमजी नांय छुड़ाया,
मन्दमती एवी बात उचार ।
"अवचूरी दीपिका टीका" अर्थ ने,
मत्सर उदर रो नाय विचारे ॥ अनु० ॥१९॥

---

* "साणुक्कोसे जिएहिओ"
(उत्तराध्ययन सूत्र, अ० २२ गा० १८)
टीका—सानुक्रोश सह अनुक्रोशेन वर्तते इति सानुक्रोश: सदय जीवे हित जीव विषय हितेष्वु ।

जोव छुड्या री बक्षीसी दीधी,
"अवचूरी दीपिका टीका +" देखो ।

+—"जइ मज्झ कारणा ए ए, हम्मंति सुबहू जिया । न मे एयं तु निस्सेसं परलोगे भविस्सई ॥ सो कुण्डलाण जुयल, सुत्तग च महायसो । आभरणाणि य सव्वाणि, सारहिस्स पणामई ॥
(उत्त० सूत्र अध्य० २२ गाथा १९-२०)

दीपिका—तदा नेमिकुमारः किं चिंतयतोत्याह यदि मम विवाहादि कारणेन एते सुबहवः प्रचुराजीवाः हनिष्यन्ते । मारयिष्यन्ते तदा एतत् हिंसाख्य कर्म परलोके परभवे निःश्रेयसं कल्याणकारी न भविष्यति परलोक भीरुत्वस्य अत्यन्तं अभ्यस्ततया एवं अभिधानं अन्यथा भगवतश्चरमदेहत्वात् अतिशय ज्ञानत्वाच्च कुत एवं विधा चिन्ता इति भावः ॥ १९ ॥ स नेमिकुमारो महायशाः नेमिनाथस्याऽभिप्रायात् सर्वेषु जीवेषु बन्धनेभ्यो मुक्तेषु सत्सु सर्वाणि आभरणाणि सार्थये प्रणामयति ददाति तान्याभरणाणि कुण्डलानां युगलं पुनः सूत्रकं कटिदवरक चकारात् आभरण शब्देन हारादीनि सर्वाङ्गोपाङ्ग भूषणानि सार्थये ददौ ॥ २० ॥

टीका—भवान्तरेषु परलोक भीरुत्वस्यात्यन्तमभ्यस्ततयैवमभिधानमन्यथा चरम शरीरत्वादतिशय ज्ञानित्वाच्च भगवतः कुत एवंविधचिन्तावसरः ? एवं च विदित भगवदाकूतेन सारथिना मोचितेषु सत्त्वेषु परितोषितोऽसौ यत्कृतवां स्तदाह—'सो' इत्यादि 'सुत्तकचे' तिकटीसूत्रम्, अर्पयतीत योगः, किमेत देवेत्याह—आभरणानि च सर्वाणि शेषाणीति गम्यते ।

मूल पाठे बक्षीसी भाषी,
मन्दमती ! जरा समझो लेखो ।अनु०॥२०॥
आज दिन या परतख दीखे छे,
मनमाने कामसे स्वामी रीझे ।
जब राजी हो बक्षीसो देवे,
पंडित न्याय विचारी लीजे ॥अनु०॥२१॥
जीव छुट्या प्रभु राजी न होना,
बक्षीस नेमजी काहेको देना ।
"निर्दय एसो न्याय न लेवे,
करुनाकर यों परगट वेना ॥अनु०॥२२॥

३-धर्मरुचिजीका करुणा अधिकार

कटुक आहार जेहर सम जानी,
परठन री गुरु आज्ञा दीनी ।
ग्यावन रो निषेध जा कीनो,
धर्मरुचिजो 'तहत' कर लीनी ॥अनु०॥ १ ॥
कटुक आहार हुँ किडिया मरती
अनुकम्पा मुनि मन माहीं आनी ।
करवा तुम्बा रो भोजन कीनो,

धर्मरुचीजी ! धन गुणखानी ॥अनु०॥२॥
गुरु आज्ञा विन आहार कियो मुनि,
किड़ियां री अनुकम्पा आणी ।
विशुद्ध भाव मुनि रा अति आछा,
आराधिक हूवा गुणखानी ॥ अनु० ॥३॥
कहत कुतर्की "धर्मरुचीजी [तो],
किड़ियां बचावण भाव न ल्याया ।
आपां सूँ मरता जीव जाणी ने,
पाप हटा मुनि कर्म खपाया" ॥ अनु० ॥४॥
जीव बचावा में पाप बतावा,
इण विध भोलो [जन] ने भरमावे ।
न्यायवादी ज्ञानीजन पूछे,
[तो] मंदमती ने ज्वाब न आवे ॥ अनु० ॥५॥
अचित मही मुनि विन्दू परठ्यो,
किड़ियां मारण रा नहिं कामी ।
ज्ञान बिना किड़ियां खा मरती,
जाने बचावण कामी स्वामी ॥ अनु० ॥६॥
अचित भू परठ्यां पाप जो लागे,
तो गुरु परठण री आज्ञा न देता ।

उच्चारादि नित मुनि परठे,
उपजे मर जीव त्यां माहीं केता ॥ अनु० ॥७॥
तिण री हिंसा मुनि ने नहिं लागे,
सूतर माहीं गणधर भाखे ।
धर्मरुचीजी तो विध से परठ्यो,
जिनमें पाप कुनकीं दाखे ॥ अनु० ॥८॥
जो मुनि कडवा तुम्बो न खाता,
तो परठ्यां दोष मुनी ने न काई ।
करुणासागर कीडियां रे खातिर,
निज तन री परवा नहिं लाई ॥ अनु० ॥९॥
या अधिकाई जीवदया री,
सूतर में गणधरजी गाई।
"पराणुकम्पे नो आयाणुकम्पे *"
चौथा ठाणामें यों दरशाई ॥ अ० ॥१०॥

---

*—चत्तारि पुरिसजाया प० तं०—आयाणुकम्पए, णाममेगे नो पराणुकम्पए ॥

(ठाणांगसूत्र ठाणा ४ उद्दे० ४ सूत्र ३५२)

टीका—आत्मानुकम्पक—आत्महित प्रवृत्त प्रत्येकबुद्धो जिनकल्पिको वा परानपेक्षो वा निर्घृण, परानुकम्पको निष्ठितार्थतया तीर्थंकर आत्मानपेक्षो वा दयैकरसो मेतार्यवत्, उभयानुकम्पकः स्थविरकल्पिक उभयाननुकम्पकः पापात्मा कालशौकरिकादिरिति ॥

परजीवां रा प्राण बचावन,

अपना प्राण री परवा न राखे।

ऐसा तो विरला इण जग में,

धर्मरूची सा शास्तर साखे ॥ अनु० ॥११॥

४—श्री महावीरस्वामीका गोशालकपर अनुकम्पाका अधिकार

केवलज्ञानी वीर जिनेश्वर,

गौतमजी को भेद बतायो।

दयाभाव [से] अनुकम्पा करने,

में पिण गोशाला ने बचायो ॥ अनु० ॥१॥

गोशाल बचाया में पाप होतो तो,

गोतमजीने क्यों नहिं कीनो।

"पाप किया मैं, तुम मत करज्यो,"

यो उपदेश प्रभू क्यों न दीनो ॥ अनु० ॥२॥

केवली तो अनूकम्पा केवे,

मन्दमती तामें पाप बतावे।

ज्ञानी वचन तज मूढ़ां रा माने,

वे नर मोह मिथ्यातम पावे ॥ अनु० ॥३॥

पाप नहीं अनुकम्पा किया रो ॥ अनु० ॥८॥
अनुकम्पा उठावन कारण,
वीरने द्वेषी पाप बतावे।
सूत्र रो न्याय बतावे ज्ञानी,
तो मंदमती ने जवाब न आवे ॥ अनु० ॥९॥
[कहे] "दोय साधां ने क्यों न बचाया,
गोशाला थी बलता जाणी।"
(उत्तर) आयुष आयो ज्ञानी जाण्यो,
न्याय न सोचे खेंचाताणी ॥ अनु० ॥१०॥
विहार कराया तो थारे [पिण] लेखे,
दोष तो कोई लेश न लागे।
क्यों न विहार करायो स्वामी,
घात जाणता [था] दोनांरी सागे ॥ अनु० ॥११॥
जद कहे "निश्चय ज्ञानमें देख्यो,
दोनां री घात यहां इज आई।
जासूँ विहार करायो नाहीं,
भवितव्यता टाली नहिं जाई" ॥ अनु० ॥१२॥
सरल भाव यों ही तुम शरधो,
अनुकम्पा में [तो] पाप न कांई।

ज्ञानी ज्ञान देखे ज्यों धारी,
तिणरी न्याय करो मन मांहि ॥ अनु० ॥१३॥
अनुकम्पा भावन थापण ने,
सूत्रपाठ रा अर्थ ने ठेले ।
छै लेश्या छद्मस्थ वीर रे,
बोले मिथ्याती पापको ठेले ॥ अनु० ॥१४॥
किसन, नील, कापात लेश्या रा,
भावमें साधुपणा नहिं पावे ।
प्रथम शतक दूजे उद्देश,
(सा) वीरमें षट्लेश्या किम थावे ॥अनु० ॥१५॥
"कषाय कुशील" रो नाम लेई ने,
अज्ञानी भाग (न) भरमावे ।
मूल उत्तर गुण दोष न सेवे,
साध मांही लेश्या किम पावे ॥ अनु० ॥१६॥
कषाय कुशील चार लेश्या जो मांही
भाखी (सा) भगवतिमें पर्या वरणा ।
इन लेखे छव लेश्या ए जाणा,
साध लेश्या (रा) द्रव्य भाव वरणा ॥अनु०॥१७।

'कषायकुशील' 'सामायिक' चारित्रे,
छे लेश्या रो नाम जो आयो ।
प्रथम शतक दूजे उद्देशे,
टीकामें तिण रो भेद बतायो ॥ अनु० ॥१८॥
किसन नील कापोत द्रव्य लेश्या (में),
साधुपणो शुद्ध भावे जाणो ।
छे लेश्या तिण लेखे कहिये,
भावे तो तीनों ही शुद्ध पिछाणो ॥अनु० ॥१९॥
तेथी छे लेश्या द्रव्य कहिये,
भावे तो तीनों ही शुद्ध पिछाणो ।
कषायकुशील अरु संजम मांहीं,
भाव खोटी लेश्या मत ताणो ॥अनु० ॥२०॥
छेदोस्थापन अरु सामायिक,
संयम छे लेश्या द्रव्य जाणो ।
यो ही न्याय मनपर्यवज्ञाने,
भावे तो तीनों ही शुद्ध पिछाणो ॥अनु० ॥२१॥
इण न्याय द्रव्य छे लेश्या पावे,
ज्ञानी न्याय जुगतसे बतावे ।
बाहा होय विवेक सूँ तोले,

खोटी ताणने समकित जावे ॥अनु० ॥२२॥
पुलाक पडिसेवन कुशील ने,
मूल उत्तरगुण दोषी भाख्या ।
ते (पिण) तीनूँ भाव शुद्ध लेश्यामें,
मूलपाठे मुनर मे दाख्या ॥ अनु० ॥२३॥
सुक्षम पिण उत्तरगुण दोषी,
तीन भावलेश्या तिण पावे ।
कषायकुशील तो दोष न सेवे,
खोटी लेश्या रा भाव क्यों आवे ॥अनु० ॥२४॥
कल्पातीत अरु आगम विहारी,
छद्मस्थपणे प्रभु पाप न कीनो ।
आचारंग नवमें अध्ययने,
केवलज्ञानी परकाश यूं दीनो ॥अनु० ॥२५॥
अनुकम्पा कर गोशाले बचायो,
मन्दमती रे मन नहीं भायो,
अशुभ लेश्या प्रभु र लगाई,
अनुकम्पा-द्वेषी आल चढ़ायो ॥अनु० ॥२६॥

५—जिनऋषीका अधिकार

(कहे) "जिनऋषि यह अनुकम्पा कीधी,
रेणादेवी सामो तिण जोयो ।
शैलक यक्ष हेठो उतार्‌यो
देवी आय तिण खड्ग में पोयो ।
आ अणुकम्पा सावज्ज जाणो"

(अनु० ढाल १ गा० १०)

सूत्र विरुद्ध यों बात उठा केई,
अनुकम्पा सावज बतलावें ।
अनुकम्पा पाठ तिहां नहिं चाल्यो,
अज्ञानी झूठरा गोला चलावे ॥अनु०॥१॥
'कलुणरसे रयणा जद बोली,
जिन ऋषियां रे कलुणरस आयो ।
कलुण पाठ ज्ञातासूतरमें,
तो पिण भोला भरम फैलायो ॥अनु०॥२॥
कलुणरस अनुयोग दुवारे,
आठवों (रस) पाठमें वीर बतायो ।

प्रिय रो वियोग दुखा यो आवे,
ऐसो श्री गणधरजी गायो ॥ अनु० ॥३॥
ऊइज रस जिण ऋषिया रे आयो,
रणादेवी रा वियोग थी पायो ।
दोनूं सूतर रो पाठ सरीखो,
लक्षण से भी तुल्य दिखायो ॥ अनु० ॥४॥
मोह कलुणरसमें अनुकम्पा,
भेषधारया ए झूठी गाई ।
शंका होवे तो सूतर देखो,
मत पड़ज्यो झूठा फंद माई ॥ अनु० ॥५॥
ठाणाङ्ग दशमें ठाण रे माहीं,
अनुकम्पा-दान प्रथम बतायो ।
कालुणी दान रो पाठ छे न्यारो,
अर्थ दान्या रो न्यारो दिखायो ॥ अनु० ॥६॥
'कलुण' (रस) 'अनुकम्पा' एक नहीं छे,
"ज्ञातासूत्र" रो भेद बतायो ।
अनुकम्पा, दया, रक्षा कहिये,
कालुण (रस) दुःख वियोगमें गायो ॥अनु०॥७॥
रात दिवस ज्यों दोनों ही न्यारा,

तो पिण मंद भोला भरमावे ।
कलुणरस तो मोह मलिन है,
अज्ञानी अनुकम्पामें लावे ॥ अनु० ॥८॥
आश्रवद्वार तीजा रे मांहीं,
दीन आरत रे कलुण बतायो ।
दूजे अंग प्रथम श्रुतखंधे,
घणा अध्ययन में योहीज आयो ॥ अनु० ॥९॥
शोक आरत भावे कलुणरस है,
सूतर साख लेवो तुम धारी ।
कलुणरस अनुकम्पा, करुणा,
एक सरीखी न सूत्र उचारी ॥ अनु० ॥१०॥

६—हिरणागमेषी का अधिकार

हिरणगमेषि (देव) अनुकम्पा करने,
देवकि-बालक सुलसा ने दीधा ।
चर्मशरीरी छव जीव बचिया,
संजम पालि ने होगया सिद्धा ॥ अनु० ॥१॥
मन्दमत्यां रे मन नहिं भाया,

(तासूँ) हिरणगमेषी ने पाप बतावे ।
जावण आवण रो नाम लेई ने,
अनुकम्पा ने सावज गावे ॥ अनु० ॥२॥
जावण आवण री तो किरिया न्यारी,
अनुकम्पा (तो) परिणामां मे आई ।
जिन वन्दन देव आवे ने जावे,
[तो] वदना सावज जिन ना बनाई ॥अनु०॥३॥
आवण जावण [से] अनुकम्पा जो सावज,
[तो] वन्दना ने पिण सावज कहणी ।
[जो] आवण जावण वदना नहिं सावज,
[तो] अनुकम्पा पिण निरवद् वरणी ॥अनु०॥४॥
मदमतो ऊंधो शरधा सू,
अनुकम्पा सावज बतलावे ।
वन्दनो ने तो निरवद् के गो,
जाणे म्हारी पूजा उठजावे ॥ अनु० ॥५॥
देव करी सुलसा री करुणा,
ते थी छेट् बाल बचाया ।
कंस रा भय थी निरभय कीधा,
अभयदान फल देवना पाया ॥ अनु० ॥६॥

७—अधिकार हरिकेशी मुनिका

हरिकेशी मुनि गोचरी आया,

जांरी निन्दा ब्राह्मण कीनी।

जक्षदेव अनुकम्पक मुनि रो,

शास्तरयुक्त समझ बहु दीनी ॥ अनु० ॥१॥

अनुकम्पा थो धर्म बतायो,

मूलपाठ रा वचन है सीधा।

मन्द कहे "अनुकम्पा रे कारण,

रुधिर वमन्ता ब्राह्मण *कीया" ॥अनु०॥२॥

अनुकम्पा रा द्वेषी वेषो,

मिथ्या बोलता मूल न लाजे।

ज्ञानी सूतरपाठ दिखावे,

अज्ञानी जब दूरा भाजे ॥ अनु० ॥३॥

---

* —जैसे कि वे कहते हैं —

यक्ष रे पाड़े हरिकेशी आया, अशनादिक त्याने नहीं दीधा।
यक्ष देवता अनुकम्पा कीधी, रुधिर वमंता ब्राह्मण कीधा ॥

(अनु ० ढाल १ गाथा १३)

माचा हेतू जक्ष सुणाया,
[जद] ब्राह्मण बालक मारण आया।
राजकुमारी भद्रा वारथा,
ता पिण मूढ नर्ण शरमाया ॥ अनु० ॥२॥
यक्षदेवने कोप जा आया,
कष्ट दई ब्राह्मण समझाया।
कृतकार ने जक्ष कृत्या,
शास्तर मांह प्रगट बताया ॥ अनु० ॥३॥
अनुकम्पा थी तो यतन उतारथा,
पिण न दया थी ब्राह्मण मारथा।
भवजीवा ! तुमे साची जाणा,
[illegible] ॥ अनु० ॥६॥

८—अविकार धारणीकी गर्भ विषयक अनुकम्पा

गर्भ री अनुकम्पा करी राणी
पाली [illegible] ।
[illegible] पेट ने [illegible],
[illegible] ॥ अनु० ॥१॥

आपने गमता भोजन छोड़्या,
गर्भ हितकारी भोजन करती।
चिन्ता, भय, अरु शोक, मोहादी,
दुखदाई जाणी परहरती ॥ अनु० ॥२॥
ऊंधो अर्थ करी कहे मूरख,
"धारणीजी अनुकम्पा आणी।
आपने गमता भोजन खाया *"
झूठी बात कुगुरु मुख आणी ॥३॥
अनुकम्पा कर भय, मोह त्याग्यो,
या तो पन्थो दोनी छुपाई।
भोजन पण मनमान्या न खाया,
मनमान्या खावारी झूठी उठाई ॥ अनु० ॥४॥
मोह त्याग्यो अनुकम्पा रे अर्थे,
तिणने मोह अनुकम्पा बतावे।
मत अन्धा होय झूठा बोलो,

---

* जैसा कि वे कहते हैं: —

मेघकुमार गर्भ माँहीं हूँता, सुख रे तई किया अनेक उपायो।
धारणी राणी अनुकम्पा आणी, मनगमता अशनादिक खायो॥
आ अनुकम्पा सावज जाणो॥
(अनु० ढा० १ गा० १४)

ऑधा री लारे आधा जावे ।। अनु० ।।५।।
श्रावक रा पहला व्रत माई,
पञ्चम अति चारे प्रभु केवे ।
अशन समय भात पाणी न देवे,
[तो] अतिचार लागे व्रत नहिं रवे ।।अनु०।।६।।
भातपाणी छोडाया हिंसा,
[तो] गर्भ भूखे मारथा किम धर्मी ।
अज्ञानी इतनो नहिं सोचे,
गर्भ रा दया उठाई अधर्मी ।। अनु० ।।७।।
जो बालक ने नाय चुँखावे,
[तो] पेहलों व्रत श्राविका रो जावे।
[जो] गर्भने थाई भूखाँ मार,
तो तप-व्रत तिण र किम थावे ।। अनु० ।।८।।
गर्भवती ने तपस्या करावे,
उपवासादि रो उपदेश देवे ।
गर्भ मरे तिण री दया नाहीं,
प्रगट अधर्म ने धर्म वे केवे ।।अनु०।।९।।
गर्भ आहार माता र आहारे,
'भगवती' माहीं वीरजी भाखे ।

आहार छोड़ावे ते भूखा मारे,
वेषधारी दया दिल नहिं राखे ॥अनु०॥१०॥
गर्भ अनुकम्पा धारणी कीनी,
सूतर माहीं गणधर गाई ।
दया रहित रे [तो] दाय न आई,
ज्ञानी अनुकम्पा आछी बताई ॥अनु०॥११॥
गर्भ ने दुःख न देणो कदापि,
समदृष्टी अनुकम्पा राखे ।
दोपद चौपद भूखा न मारे,
पहले व्रतमें जिनवर भाखे ॥अनु०॥१२॥

६—अधिकार कृष्णाजीका वृद्ध विषयक अनुकम्पा

श्री कृष्ण नेम ने वन्दन चाल्या,
बूढ़ा ने अति हो दुखियो जाणो ।
जीर्ण जरा थी थर-थर कम्पे,
देखि ने मन अनुकम्पा आणी ।
अनुकम्पा सावज मत जाणो ॥१॥
उणरी ईंट श्रीकृष्ण उठाई,

वूढा रे घर निज हाथ पुगाई ।

दुरगुण नाशक सद्‌गुण भासक,

अनुकम्पा री रीत दिखाई ॥२॥

मोह अनुकम्पा इणने वतावे,

अज्ञानी ऊंधा हेतु लगावे ।

स्वार्थ रहित अनुकम्पा धरम ने,

सावज कहि कहि जन्म गमावे ॥३॥

ईंट तोकण जिन आज्ञा न देवे,

तिन सुं अनुकम्पा सावज केवे ।

ऊंधी श्रद्धा थी ऊंधो सूझे,

तिणरी कुहेतु पहुत्तर देवे ॥४॥

अनुकम्पा परिणाम मे आई,

ईंट तोकण किरिया छे न्यारी ।

[जो] नेमवन्दन री मनसा जागी,

[तब] चतुर गी सेना सिणगारी ॥५॥

सेन्या री जिन आज्ञा नहिं देवे,

वन्दनभाव तो निर्मल जाणे ।

(तिम) ईंट तोकण री आज्ञा न देवे,

(पिण) अनुकम्पा जिन आछी बखाणे ॥६॥

बन्दनकाजे सेना चलाई,
अनुकम्पा काजे ईंट उठाई ।
सेना चले बन्दन नहिं सावज,
अनुकम्पा ईट थी सावज नांई ॥७॥

ऊंच गोत्र बन्दन फल आख्यो,
उत्तराध्ययन १ गुणतीस रे मांहिं ।
अनुकम्पा फल सातावेदनो,
भगवतिसूत्रे २ जिन फुरमाई ॥८॥

दोनों कारज आछा जाणों,
समदृष्टी रे आज्ञा मांई ।
भवछेदन (संसार पड़त) सकाम निर्जरा,
ज्ञातादिक सूतर में आई ॥९॥

पुण्य बंधे अज्ञानीजन रे,
अकाम निर्जरा ते पिण पावे ।
आगे चढ़तां समकित पावे,
जद वो जिन आज्ञा में आवे ॥१०॥

दुखिया दीन दरिद्री प्राणी,

पचेंद्रिय जीवा ने मारण धावे ।
मास अर्थी भूख दुःख रा पीड्या,
वा अज्ञानी जीवाने कोण चेतावे ॥११॥
दयावन्त [वाने] उपदेशे वारया,
अचित वस्तु देई कारज सारया ।
पचेन्द्रिय जीव रा प्राण बचाया,
हिंसक हिंसादि पाप ज टारया ॥१२॥
मूरख इणमे पाप बतावे,
ज्ञानी पूछे जब जाब न आवे ।
जो हिंसा उपदेशे छुड़ावे,
बाहिज साज देई ने छुडावे ॥१३॥
हिंसा छूटी दोनों हि ठामे
जिण मे फर्क न दीसे काई ।
साज सूँ हिंसा छुटी तिण माहीं,
एकान्तपाप री कुमति ठेराई ॥१४॥
साज सू हिंसा छुट्या माहे पापो,
तो घोडा दोड़ावण* जुक्ति थी लायो ।

---

* जैसा कि ये कहते हैं —
आय राजाने इम कहै, सांभलज्यो महाशयजी ।

चित श्रावक परदेशी राय ने

केसी समण जद धर्म पलायो ॥१५॥

घोड़ा दोड़ाई राजाने ल्याश्रो,

इण सें तो धर्मदलाली वतावे ।

(तो) साज देई ने हिंसा छुड़ावे,

(जामे) पाप बतावनां लाज न आवे ॥१६॥

सुवुद्धि प्रधान थी जितशत्रु राजा,

पाणी परिचय थो समझाणो ।

या पण धर्म दलाली जानो,

आरम्भ हूवो ते अलग पिछाणो ॥१७॥

गाजर मूला रो नाम लेई ने,

कुमती भोलां ने भरमावे ।

घोड़ा देश कमोद ना, मे ताजा किया चरायजी ।

धर्म दलाली चित करे ॥१॥

किणविध ल्यावे राय ने, सांभलज्यो नरनारीजी ।

चित्त सरीखा उपगारिया; विरला इण संसारीजी ॥२॥

आप मोनें सूंप्या हूंता, ते देख लेज्यो घोड़ेजी ।

अवसर वरते एयवो, घोड़ो किसड़ाक दोड़ेजी ॥धर्म०॥३॥

-(परदेशी राजाकी संघ ढाल—१०)

अचित देई मूलादि छुड़ावे,
जारी तो चर्चा मूल न लावे ॥१८॥
अचित साहाय अनुकम्पा जो होवे,
(तो) सचित समदृष्टि क्याने खवावे।
ऋधा हेतु अणहूंता लगावे,
ज्ञानी रे सामे जवाब न आवे ॥१९॥

१०—अधिकार धूपमें पड़े हुए जीवाके सम्बधमें।

तड़के तड़फत जीवा ने देखो,
दया लाय कोई छाया* में मेले।
अज्ञानी तिण मे पाप बतावे,
खोटा दाव कुगुरु यों खेले।
अनुकम्पा सावज मत जाणो ॥ १ ॥

---

* जैसा कि वे कहते हैं —
ऊपाड़ी जा मेले छाया, असजती रो वियावच लागे।
या अनुकम्पा साधु करे तो, ताग पांचा ई महाव्रत भागे।
आ अनुकम्पा सावज जाणो ॥ १८ ॥

भगवति पन्दरहवें शतक में,
वीर प्रभू गौतम ने भाखे
तप तपे वैसायण तपसी,
बेले-बेले पारणो राखे ॥ २ ॥
सूर्य आताप ना लेतां जूँवां,
ताप लागया सूं नीचे पड़ता ।
प्राणी, भूत, जीव दया भाव थी,
त्यांने उठाई मस्तक धरता ॥ ३ ॥
बाल तपस्वी दया जूंवां पर,
तड़का सूं लेकर मस्तक मेले ।
जैन रो भेष ले पाप बतावे,
दया उठावण माया खेले ॥ ४ ॥
तप तो तिणरो निरवद्य केवे,
अनुकम्पा सावज कहि ठेले ।
अनुकम्पा प्रभु निरवद्य भाखी,
ज्ञानी न्याय सूतर से मेले ॥ ५ ॥
कीड़ा-मकोड़ाने छाया में मेले,
असंजती री व्यावच केवे ।

भेषधारी कहे "साधु मेले तो,
त्यारा पाचो ही (महा) व्रत नहिं रवे" ॥ ६ ॥
चतुर पूछे कोई भेषधारी ने,
जू वां असजति ने थे पोखो ।
नीचे पडी ने पाछो उठावो,
महाव्रत रो थारे रह्यो न लेखो ॥ ७ ॥
दशवैकालिक चौथे अध्ययने,
त्रसजीवा अनुकम्पा काजे ।
साधुने प्रभुजी विधी बतावे,
मूलपाठ मे इणविध राजे ॥ ८ ॥
उपासरा बलि उपधी माई,
त्रसजीव देख दया दिल लावे ।
रक्षा रे ठामे त्या ने मेले,
दु:ख रे ठाम नहा परठावे ॥ ९ ॥
जोव बचाया जो महाव्रत भागे,
(तो) शास्त्रमें आज्ञा प्रभु किम देवे ।
'भारीकर्मा लोगाने भीष्ट करण ने'
दया मे पाप मिथ्याती केवे ॥ १० ॥

११—अधिकार अभयकुमारकी अनुकम्पाका

अभयकुंवर तप तेलो करने,
ब्रह्मचर्य सहित पोसो कर बैठो।
पूरव संगति देव ने समरयो,
मन एकाग्रह राख्यो सैंठो।
अनुकम्पा सावज मत जाणो ॥ १ ॥
तीजे दिन रे कष्ट प्रभावे,
आसण चलता देवता देखे।
तेला री अनुकम्पा आई,
गुणरागी हुवो तप रे लेखे ॥ २ ॥
"अनुकम्पा कर बरसायो पानी,"
मिथ्यामती एवी झूठी भाखे।
अनुकम्पा तो तप री आई,
इणरो तो नाम छिपाई ने राखे ॥३॥
जल बरसावण कारज न्यारो,
तिहां अनुकम्पा रो नाम न आयो।
झूठा नाम सूतर रा लईने,

अनुकम्पा रो धर्म उठायो ॥४॥
(तप) संयमीरी अनुकम्पा करे कोइ,
समण माहाण पर प्रेम ज लावे ।
उत्तर वैक्रिय कर गुणरागी,
दर्श उमग धरी देव आवे ॥५॥
दर्शण अनुकम्पा गुण राग तो,
निर्मल श्रीमुख जिन फुरमावे ।
वैक्रिय करण आवण जावण री,
क्रिया तो तिण थी न्यारी बतावे ॥६॥
क्रिया योगे गुण-राग न सावज,
तिम अणुकम्पा सावज नाहीं ।
साचो न्याय सुणि मूढ भडके,
खोटा पक्ष री ताण मचाई ॥७॥

१२—अधिकार पशु बांधने छोड़नेका

कहे "साधु थी अनेरा त्रसजीवां ने,
अनुकम्पा थी बांधे ने छोड़े * ।
चौमासी दण्ड साधु ने आवे,
गृहस्थ रे (पिण) पापरो बन्ध चौड़े" ॥१॥
अनुकम्पा सावज इण लेखे,
अज्ञानी यों बात उचारे ।
'निशिथ' पाठ रो अर्थ ऊंधोकर,
भोला डुबाया मिथ्या मझधारे ।
अनुकम्पा सावज मत जाणो ॥२॥
न्याय सुणो हिवे निशिथ पाठ रो,
"कोलूणवड़िया" त्रस जो प्राणी ।

---

*जैसा कि वे कहते हैं:—
साधु विना अनेरा सर्व जीवां री,
अनुकम्पा आणे साधु बांधे बंधावे ।
तिण ने निशीथ रे बारहवें उद्देशे,
साधु ने चौमासी प्रायश्चित आवे।
आ अनुकम्पा सावज जाणो ॥
(अ० ढा० १ गा० २२)

डाभमु ज चरमादि रे फासे,
बाधे न छोडे सुनर री वाणी ॥३॥
डाभ चाम लक्कड रा फासा,
साधु रे पास मे रवे नाहीं ।
(तो) साधु इण फासे किम बाधे,
पण्डित न्याय तोलो मनमाही ४॥
चूरणी भाष्यमे न्याय बतायो,
सेजातर रा घर री या बातो ।
जिणरी जागामे साधु उतरिया,
तहा ये जोग मिले साक्षातो ॥ ५ ॥
साधु आचार सेजातर न जाणे,
जद वो साधु ने घर सभलावे ।
खेत खला रे कामे जाता,
बाधण छोडण पशु रो बतावे ॥ ६ ॥
साधु कहे हम बाधा न छोडा,
गृहस्थ रा घर रीचिन्ता न लावे ।
तब तो मुनि ने प्रायश्चित नाहीं,
बाधे छोडे तो अनुकम्पा जावे ॥७॥

विशिष्ट ओगेणावन्त गवादिक,
त्रसजीवां रो अर्थ पिछाणो ।
चूरणी भाष्य में अर्थ यो कीनो,
जूना केई टब्बा में जाणो ॥८॥

द्वीन्द्रियादिक जीव तरस रो,
अशुद्ध टब्बा में अर्थ बतायो ।
यो अर्थ मिलतो नहिं दीखे,
तिणरो न्याय सुणो चित चायो ॥९॥

लट, कीड़ी ने माखी, माछर,
द्वान्द्रियादिक जीव पिछाणो
(जाने) चाम बेंत फांसे बांधण रो,
अर्थ करे ते,मन्दमति जाणो ॥१०॥

अशुद्ध टब्बा री ताण करीने,
नाहीं हृदय सूँ न्याय विचारे ।
"टीका में नहीं तो टब्बा में क्यां थी"
पोते पण एहवो वाणा उच्चारे ॥११॥

यो ही न्याय यहां पिण जाणो,
टीका विरुद्ध टब्बो मत ताणो ।

भाष्य चूरणी थी मिले ते तो मानो,
विपरीत तो विपरीत पखाणो ॥१२॥
'फांसुण पडिया' सूतर पाठ रो,
चूरणी भाष्य थी अर्थ विचारो ।
बाध्या छोड्या अनुकम्पा न रंचे,
दोष लागे कीना निरधारो ॥१३॥
कुण कुण दोष पारण मे लागे,
भाष्य, चूरणी टब्बा मे देखो ।
आपणी पर री घात ज हावे,
तिणरो बतायो इण विध लेखो ॥१४॥
पारणा थी पशु पीड़ा पावे,
आटा खाय ने मर जाय ।
अन्तराय पाड्या थी लागे,
सबरदसी जति री दुःख पावे ॥१५॥
पर री विराधना या पहन्याई,
आप घात री लिख्या वाता ।
सींग थी मारे ने खुर था घाव
फेर पन्थी करे मुनि री घाता ॥१६॥

लोकां में पिण लघुता लागे,

साधू होकर टांडा बांधे।

इण कारण चौमासी प्राछित,

(पिण) अज्ञानी तो ऊंधी सांधे ॥१७॥

किण कारण मुनि छोड़े नांहीं,

तिणरो विवरो भाष्य में देखो।

छोड़्या वह परजीवां ने मारे,

कूवा खाड़में पड़वा रा लेखो ॥१८॥

चोर हरे अटवी में जावे,

सिंहादिक छूटा ने मारे।

इत्यादि हिंसा रा दोष बताया,

साधू तो चोखो चित धार ॥१९॥

छूटा सूं प्राणी दुखिया होस,

तो दयावान छोड़न नहीं चावे।

साधु तो अनुकम्पा रा सागर,

णे छोड़ण मन में किम लावे ॥२०॥

(जो) बांधे छोड़े अनुकम्पा न रेवे,

तिण थी चौमासी प्राछित आवे।

करुणा, दया, शान्ति, ऋपि चावे,
तिण रो दण्ड मुनी नहिं पावे ॥२१॥
अनुकम्पा लाया रो प्राछित केवे,
झूठा नाम सुतर रा लेवे।
भाष्य, सुतर, चूरणि, टव्या में,
कठेहि न चाल्यो तो पिण केवे ॥२२॥
अनुकम्पा रा द्वेपी धेपी,
झूठा नाम लेना नहिं लाजे।
अज्ञान अंधेरे स्याल ज्यों कूके,
ज्ञान प्रकाशे डरकर भाजे ॥२३॥
खाड में पडतां ने अग्नि में जलता,
सिंह थी खाता साधू जाणे।
लाय दया बांधे छोडे तो,
प्राछित नाहीं अर्थ प्रमाणे ॥२४॥
प्राचीन भाष्य अरु चूरणि में,
करुणानुकम्पा करणी बताई।
मरता जाण बांधे अरु छोडे,
इणविधि में कछु प्राछित नाहीं ॥२५॥

त्रस अर्थ बेन्द्रियादिक करने,
दया थी बांध्या दोष बतावे ।
(पोते) पाणी में माखी ठर मुरझाई,
कपड़ा में बांध ने मूर्छा मिटावे ॥२६॥
मूर्छा मिट्यां सूँ छोड़ उड़ावे,
तिण में तो ते पिण धर्म बतावे ।
(तो) अनुकम्पा थी बांध्या छोड़्या में,
पाप परूप के भेष लजावे ॥२७॥
साधू पण त्रसजीव कहीजे,
कारण करुणा थी बांधे ने छोड़े ।
भेषधार्‍यां रे अर्थ प्रमाणे,
पाप हूँसो वांरी शरधा रे जोड़े ॥२८॥
"साधू ने करुणा थी बांध्या छोड़्या में,
धर्म हुवे" यूँ ते पिण बोले ।
अर्थ कहो यह क्यां थी लाया ?
सूतर पाठ में तो नहिं खोले ॥२९॥
तव तो कहे म्हें जुगती से केवां,
पण्डित त्यां ने उत्तर देवे ।

"मोच्य थुरणि" 'टव्वा" री युक्ति,
क्यों नहिं मानो ? सुगुरु यों वेवे ॥३०॥
मन रे मते मतहीणा बोले,
शुद्ध-परम्परा सूत्र ने ठेले।
माखी ने तो बाधे अरु छोडे,
दूजा जीवा री कुयुक्ति क्यो मेले? ॥३१॥
सूत्र निशीथ उद्देशे द्वादश,
इणर नाम थी द्वन्द मचाया।
तिण कारण यो मैं कियो खुलासो,
सूत्र रो साँचो अर्थ बतायो ॥३२॥
जिण बाध्या अनुकम्पा न रखे,
तिण रो प्रायश्चित निश्चय जाणो।
बाध्या छोडया जीव बचे तो,
दण्ड नहीं तजो खेंचाताणो ॥३३॥

१३—अधिकार व्याधिमिटावण विषयक

व्याधि बहुत कोढादिक सुण ने,
वैद्य अनुकम्पा तिणरी लावे।
प्रासुक औषध दुःख मिटावे,

निर्लोभी ने पिण पाप बतावे।

अनुकम्पा सावज मत जाणो ॥१॥

दुःख न देणो तो पुन में बोले,

दुःख मिटावा में पाप बतावे ।

दुःख मिटायो तिण दुःख न दीधो,

मन्दमती क्यों पाप लगावे ॥२॥

जैन रा देखो अङ्ग उपाङ्गो,

वेद पुराण कुरान में देखो ।

दुःख न देणो अरु दुःख मिटाणो,

दोनां रो शुद्ध बतायो लेखो ॥३॥

दुःख मिटावा में पाप घणेरो,

मन्दमती विन दूजो न बोले ।

घोर अंधारो हिरदा में छायो,

भोला ने नाख दिया झकझोले ॥४॥

दुख देई कोई दुःख मिटावे,

तिण रो नाम तो मुख पर लावे ।

दुःख दिया विना दुःख मिटावे,

इण रो तो नाम मन्द छिपावे ॥५॥

साधु थी दूजा ने साता जो देवे,
पाप लगे अज्ञानी केवे।
नारिभोग दृष्टान्त देई ने,
दुर्गुणि केई मिथ्यामत सेवे ॥६॥
नारिभोगे पचेन्द्रिय हिंसा,
मोह उदेरणा दोनां रे होवें।
यो दृष्टान्त दया (अनुकम्पा) र जोडे,
जो देवे वो भव भव रोवे ॥७॥
रोग छुडावण तिरिया सेवण,
दोना ने कोई सरीखा केवे।
त्या दुर्गुण रो भेद न जाण्यो,
खोटा हेतु कुपन्थी देवे ॥८॥
रोग तो वेदनीं कर्म उदय में,
नारिभोग मोहकर्म से जाणो।
रोग मिटाया दुःख मिट जावे,
नारिभोग मोह बंधवा रो ठाणो ॥९॥
रोग मिटावामें पाप घणेरो,
नारीभोग समान बतावे।

माता रो भोग अरु रोग मिटावण,
तिणरी श्रद्धा में सरीखो थावे ॥१०।

कोई माता गेन रो रोग मिटावे,
कोई तिण थो भोग कुकर्मा चावे ।
दोनों पापकर्म रा कर्त्ता;
तुल्य कहे ते धर्म लजावे ॥११॥

लब्धिधारी री लब्धि प्रभावे;
रोग मिटे सूतर में बतायो ।
[पिण] लब्धिधारी मुनि रे परितापे;
पाप बंधे यो कठेहि न आयो ॥१२॥

दुःख छुटे मुनि रे परतापे;
या तो बात सभी जग जाणे ।
पर-स्त्री पाप मुनि परतापे;
ऐसी तो कोई मूरख माने ।।१३॥

:ख मिट्यो दगुण में थे केवो;
तो साधु प्रतापे दुगुण मानो ।
साधु थी दुगुण वधतो न समझो,
तो रोग मिट्यो दुगुण में न जानो ॥१४॥

जिन जिन देश तीर्थङ्कर जावे,
सौ-सौ कोसां रो दु:ख मिट जावे ।
धान (रो) उपद्रव मूल न होवे,
'ईति' मिटण अतिशय यो थावे ॥॥१५ ॥
मिरगी र रोग मनुज घणा मरता,
जिनजी गया मिरगी नहिं रवे,
लाखों मनुष्य मरण थी बचिया,
मिथ्यात्वी इणने कुगुण केवे ॥ १६ ॥
देश री सेन्या देशने मार,
स्वचक्री नृप री भय थावे ।
ए गुणतीस अतीसे प्रभावे,
सोनि (भय) मिटे जन शान्ति पावे ॥ १७॥
'पर' राजा री सेना आवे,
देश लूटे यो दुःख अति देवे ।
प्रभु परतापे भय मिट जावे,
तीस अतिशय सुनर केवे ॥ १८ ॥
अति वर्षा थी जन दु:ख पावे,
नदी री बाढ़े जन घबरावे ।

जिण देशे श्री जिनजी विराजे,
तिण देशे अति वृष्टि न थावे ॥ १९ ॥
विन वृष्टी दुख जगमें मोटो,
दुष्काले होवे धर्म रो टोटो ।
अतिशय चौतिश में प्रभुकेरे,
सुभिक्षे शान्ती सुख मोटो ॥ २० ॥
अनरथसूचक रक्त री वृष्टि,
बहु उत्पात हुवा जिण देशे ।
चिन्तातुर दुखिया अतिभारी,
कहो हिवे शान्ती होवे कैसे ? ॥ २१ ॥
तिण काले श्री जिनजी पधारथा,
विघ्न तुरत तिण देशांरा टलिया ।
परतख (प्रत्यक्ष) गुण जिनजी रे जोगे,
जय जय बोले जन सहु मिलिया ॥ २२ ॥
खाश, स्वांस, ज्वर, कोढ़, भगन्दर,
विविध-व्याधि जिण देशे आई ।
प्रभु पग धरतां व्याधि न रेवे,
तत्क्षण शान्ती देशमें छाई ॥ २३ ॥

"समवायग चौतीस" में देखो,
यो वृतान्त तो पाठमें गायो ।
सौं-सौ कोसा उपद्रव टलनो,
केवल ज्ञानी आप बनायो ॥२४॥
टलियो उपद्रव दुर्गुण जाणो,
तो प्रभुजी रा जोग सूं दुर्गुण मानो ।
प्रभु जोगे दुर्गुण नहिं होवे,
तो मिटियो उपद्रव गुणमें वखानो ॥२५॥
आरत रुद्र जीवा रा टले अरु,
प्रभु ऊपर शुद्ध भाव ज आवे ।
परतख लाभ यो दुःख मिट्या सूं,
प्रभु अतिशय गणधर फरमावे ॥२६॥
"रायपसेणी" सूतर मे देखो,
चित्त "केशीमुनिजी" ने बोले ।
परदेशी ने धर्म सुणाया,
किण ने गुण होसी विवरो खोले ॥२७॥
दोपद चौपद जीवाने बहुगुण,
समण माहाण भिखारी रे जाणो ।

देश ने प्रभुजी बहु गुणं होसी,

तिण कारण प्रभु धर्म बखाणो ॥२८॥

जीव देश अरु समण भिखारी (रो),

राजा थी थांरो दुःख मिट जासी ।

आरत मिटसी गुणमें भाख्यो,

जाण्यो जीव घणा सुख पासी ॥२९॥

तिम रोग आरत मिटियो पिण गुण में,

भव जीवां ! शङ्का मत आणो ।

विन स्वारथ थी वैद्य मिटावे,

तो तिण ने गुण (पिण) निश्चय जाणो ॥३०॥

वैद्य स्वारथ बुद्धि आरम्भ ने,

गुण रो मुनिजन नांय बखाणे ।

पर-उपकारी दुःख मिटावे,

तिण में एकंत पाप न जाणे ॥३१॥

आरम्भ कर कोई (मुनि) वन्दन जावे,

अथवा स्वारथ बुद्धी आणे ।

आरम्भ स्वारथ गुणमें नांहीं,

वन्दन भाव तो गुण में जाणे ॥३२॥

शुद्ध भाव अरु विन आरम्भ थी,
मुनि वन्द्या अधिको फल पावे।
तिम कोई रोगी रो रोग मिटावे,
(तो) वैद्यादिक गुण रो फल पावे ॥३३॥

१४—अधिकार साधुकी लब्धिसे साधु की प्राणरक्षाका

लब्धिधारी रा 'खेलादिक' सूँ,
मोले रोग शरीर सूँ जावे।
साधु ने रोग सूँ मरता बचावे,
(तो) ज्या पुरुषाने भी पाप* बतावे।
अनुकम्पा सावज मन जाणो ॥१॥
पाप अठारह प्रभुजी भाख्या,

* ऐसा लिखा है —
लब्धिधारी रा खेलादिक सूँ,
साधु री रोग शरीर सूँ जाय ॥
जद कोई इण रोग सूँ साधु बचासी,
अनुकम्पा सावज रोग मेटाय।
आ अनुकम्पा सावज जाणो ॥
(अनु० ढा० १ गा० ३५)

अनुकम्पा पाप कठेहि न चाल्यो ।
घेटा धर्मने भ्रष्ट करण ने,
तो पिण धोचो कुगुरां घाल्यो ॥२॥
लब्धिधारी रो खेल रे फरसे,
साधु रा रोग मिट्यां कुण पापो ।
साधू बचिया रो पाप बतावो,
तो खाणा-पीणा में धर्म क्यों थापो ॥३॥
लब्धिधारी रा शरार रे फरसे,
रोग सूँ मरतो साधु बचियो ।
लब्धिधारी ने पाप बतावे,
कुगुरु खोटो पाखण्ड रचियो ॥४॥
गुरु रा चरण शिष्य नित फरसे,
आवश्यक अध्ययन तीजा देखो ।
देह फरसिया धर्म बतायो,
आनन्द चरण फरसियां रो लेखो ॥५॥
लब्धिधारी री काया फरसे,
धर्म तो प्रभुजी प्रगट बतायो ।
फरसणवालों ने धर्म हुवो तो,

लब्धिधारी ने पाप क्यों आयो ॥६॥

उत्तराध्ययन ग्यारवें माई,

रोगी ने शिक्षा अजोग बतायो ।

लब्धिधारी रा चरण फरस ने,

रोग मिट्या शिक्षा गुण पायो ॥७॥

रोग मिट्यां गुण चरणफरस गुण,

किणविध अवगुण कुगुरु बतावे ।

गुणमें अवगुण रो थाप करी ने,

मिथ्यातो पोल में ढोल बजावे ॥८॥

१५—अधिकार मार्ग भूले हुएका साधु किस कारण रास्ता नही बतावे

अटवी रे माहि गृहस्थी भूल्या,

साधु ने मारग पूछण लागे ।

किण कारण मुनि नाहि बतावे,

"अर्थ भाष्य" मे देखो सागे ।

अनुकम्पा सावज मत जाणो ॥१॥

मुनि र बताये मारग जाता,

चोर कदाचित् उणने लूटे।
सिंहादिक श्वापद दुःख देवे,
तिण उपसर्ग थी प्राण भी छूटे ॥२॥
वा, तिण रस्ते गृहस्थो जातां,
मृग आदिक जीवां ने मारे।
तिण कारण दयावन्त मुनीश्वर,
मार्ग बतावा रो परिचय टारे ॥३॥
इसड़ा सूत्र रा सरल अरथ ने,
अज्ञानी तो उलटा मोड़े।
अनुकम्पा कर मार्ग बतायां,
चार मास चारित्तर* तोड़े ॥ ४ ॥
"भाष्य चूरणि" अरु मूल में देखो,

---

*-जैसे कि वे कहते हैं—

गृहस्थ भूलो ऊजड़ वन में, अटवी ने वले ऊजड़ जावे।
अनुकम्पा आणी साधु मार्ग बतावे, तो चार महीनां रो
चारित्र जावे ॥
आ अनुकम्पा सावज जाणो।
(अनु० ढा० १ गा० २७)

अनुकम्पा रो नाम ही नाहीं ।
तो पिण अनुकम्पा रा द्वेषी रे,
झूठ बोलण री लाज न काही ॥ ५ ॥
हितकारा मुनि सर्व जीवा रा,
अनुकम्पा रो प्राछित नाहीं ।
समदृष्टि तो सूतर माने,
कुगुरु री बात देवे छिटकाही ॥६॥

* प्रथम ढाल सम्पूर्णम् *

दोहा

समकित रो लक्षण कह्यो, अनुकम्पा प्रभु आप।
पापबन्ध तिण थी कहे, खोटी थापे थाप ॥१॥
अनुकम्पा साधू करे, गृहस्थ करे मन लाय।
सुकृत लाभ सहु ने हुवे, तिणमें शंका नाय ॥२॥
अनुकम्पा अभयदानने, सर्व श्रेष्ठ कह्यो दान।
"सुगडायंग" में देख लो, तज दो खैंचातान ॥३॥
साधु वन्दे साधु ने, गृहस्थ वन्दे चितचाय।
उच्चगोत्र रो फल लहै, नीचो गोत्र खपाय ॥४॥
गाड़ी घोड़ा साज सूं, गेही वन्दन जाय।
साधू तिम जावे नहीं, पण्डित! समझो न्याय ॥५॥
अनुकम्पा वन्दन जिसी, दोनां ने सुखदाय।
कारण न्यारा जाणजो, साधु गृहस्थ रे मांय ॥६॥
सावज कारण सेव ने, गेही(गृहस्थ) वन्दन जाय।
साधू, वन्दन कारणे, कल्प बिगाड़े नाय ॥७॥
तिम अनुकम्पा कारणे, कल्प न तोड़े साधु।
जाणे अनुकम्पा भली, वन्दन सम निर्बाधु ॥८॥

अनुकम्पा कारण कोई (गृहस्थ)
सावज कर जो (कोई) काम।
(ते) कारण अनुकम्पा नहीं,
करुणा (अनुकम्पा) निरवद्य नाम ॥९॥

सावज कारण सेवतां, वन्दन सावज नाय।
अनुकम्पा तिमजानज्यो, निरमल ध्यान लगाय १०।

भाषा सुमती थी करे, वन्दन नो उपदेश।
तिम अनुकम्पा नो कर, मुनि र राग न द्वेष।११।

गेही पिण समझू हुवे, विवेक मनमें लाय।
वन्दन अनुकम्पा कर, वैसो ही फल पाय।१२।

कुगुरु कूड़ो खेंच सूं, अनुकम्पा उत्थाप।
वन्दन रा तो लोलुपी, जोर सूं माडे थाप।१३।

कारण कारज भेद ते, कुगुरु खोले नाय।
कारण ने आगे करि, करुणा दीवि उठाय।१४।

वन्दन कारण प्रगट मे, पहुविर आरंभ थाय।
कुगुरु देखे तोहि पिण, वन्दन वर्जे नाय।१५।

रस्ता री सेवा तणों, अतिशय लोभ थनाय।
गृहस्थी रासे साथ मे, भोजन खाना जाय।१६।

इणविध सेवा ना कही, सूतर में जिन राज।
प्राछित पिण भाष्यो प्रभु, संजम राखणकाज।१७।
खोटी सेवा थापने, लोपी जिनवर कार।
अनुकम्पा उत्थापने, डूबा काली धार।१८।
सावज कारण साधुने, वरज्या सूतर मांय।
[ते]कल्प बतायो साध रो, करुणासावज नाय।१९।
साधू कल्प रे नाम सूं भोलां ने भड़काय।
अनुकम्पा सावज कहे, खोटा चोजा लगाय।२०।
साधू ने वर्जी नहीं, अनुकम्पा जिनराज।
निज-निज कल्प संभालने, करने सारे काज।२१।
करुणा[अनुकम्पा]करणी साधने, भाखूं सूतरसाख।
भवजीवां! तुम सांम्हलो, वीर गया छे भाख।२२।

———

दूसरी-ढाल

—○○—

१—अधिकार जीवा रो दया खातर दयावान मुनि ने बांधने छोडने का।

(तर्ज—हीवे सामलज्यो नरनार)

डाभ मूं जादिक रे फासे,
गाय भैंसादि बच्या विमासे।
जो छोड रखे दुःख पासे
अटवी मे दोड़ी ने जासे ॥ १ ॥

रखे सिंहादिक थाने खावे,
म्हारी अनुकम्पा उठ जावे।
अनुकम्पा घणी घट माँहि,
तेथी मुनिवर छोड़े नाहीं ॥ २ ॥

छोड़या अनुकम्पा उठ जावे,
मुनिजीने प्रायछित आवे।

इम बांध्या सूँ तड़फे प्राणी,
रखे मर जावे इसड़ी जाणी ॥ ३ ॥

इण कारण बांधे नांई,
अनुकम्पा घणी घट मांई ।

मरता जाणे तो बांधे ने खोले,
दोष नाहीं अर्थ यूँ बोले ॥ ४ ॥

साधु जन रा पातरा मांहीं,
चिड़ियो उन्दिर पड़ियो आई ।

भेषधारी पिण काढ़णो केवे,
विन काढ़्या दया नहिं रेवे ॥ ५ ॥

(तो) अनुकम्पा थी छोड़्यां पापो,
एहवी खोटी करो किम थापो ।

अनुकम्पा निरवद्य जाणो,
तिणरा साधु रे नहिं पचखाणो ॥ ६ ॥

साधू पातरा सूं जीव काढ़े,
तामें धर्म कहे चोड़े-धाड़े ।

ग्रस्ती यदि जीव छुड़ावे,
पाप लागा रो हल्लो उड़ावे ॥ ७ ॥

ग्रस्ती रे मूंज रा पासा,

पशु नध्या पावे त्रासा।
जो उणने वो नाहिं खोले,
पाप लागे मूत्तर यों बोले ॥८॥
जो खोले तो पाप मू घचियो,
दूजो अनुकम्पा रो रसियो।
भेषधारी उलटी सिखावे,
बस्ती (रे) छोडथा पाप बतावे ॥९॥
तब उत्तम नर कोई प्राणी,
भेषधारथा ने बाल्यो वाणी।
थारे पातरिक र माहीं,
जीव तडफ रयो दुःख पाई ॥१०॥
तिणने जीवनो काढो के नाहीं
के मरवा देवो असजति ताहीं।
कहे जीवनो काढा में प्राणी,
नहिं काढया पाप लगो जाणी ॥११॥
साधु नहीं काढे तो पापी,
या तो ठीक तुमे पिण थापी।
(जो) जीव छोड्या में पाप न लागे,

दया धर्म रो काम है सागे ॥१२॥

तो श्रावती ने पाप म केवो,
छांड मिथ्यामत तुम देवो।

साधू उपधी सूँ जीव मर जावे,
तिणरो पाप साधू ने थावे ॥१३॥

गेही उपधी सू जीव मरजावे ।
तिण रो पाप गृहस्थ पिण पावे ।

साधु छोड़े तो साधु ने धर्मों,
गेही ने किम कहो पाप कर्मों ॥१४॥

उपकरण (पिण) दोनां रा सागे,
नहिं छोड़्या पिण पाप लागे।

साधु ने तो बतावे धर्म ,
ग्रस्ती ने कहे पापकर्म ॥१५॥

अनुकम्पा एक बतावे*

---

*—जैसा कि वे कहतु हैं—

जो अनुकम्पा साधु करे, तो नवा न बन्धे कर्म ।
तिण माहली श्रावक करे, तो तिणने पिण होसी धर्म ॥२॥
साधू श्रावक दोनो तणी, एक अनुकम्पा जाण ।
अमृत सहुने सारखो, तिणरी मं करो ताण ॥३॥
(अनु० ढाल २)

साधु श्रावक री एक सिखावे ।
अमृत री उपमा देवे,
दोनो सेव्यासम सुख केवे ।१६।
जो वात खरी छे थारी,
तो यहा भेद करो क्यों भारी ।
साधूने धर्म बतावो,
ग्रस्तोने क्यो पाप लगावो । १७ ।
निज घोली रो बन्धन कॉई,
मोह मिथ्या रो छाक र माही ।
ज्ञान केरो अंजन ऑजो,
अव मिथ्या बोलतां लाजो ॥ १८ ॥

२—अधिकार लाय बचानेका ।

(कहे) 'ग्रस्नी रे लागी लायो,
घर बार निसऱ्यो न जायो,
बलतॉ जीव 'बिलबिल' बोले,
(कोई) साधू जाय किवाड न खोले"॥१॥

उत्तर-(कोई) खोले तिण ने पाप बतावे,
(वलो) धर्म शरध्या मिथ्यात लगावे ।
नर वचिया पाप कहे मोटो,
जाँरों हिरदो हुवो घणों खोटो ॥ २ ॥
थीवरकल्पी मुनि पिण खोले,
ठाणायंग चोभंगी रे ओले ।
द्वार खोल बाहर निकलणो,
थीवरकल्पी रा कल्प रो निरणो ॥ ३ ॥
पर री........अनुकम्पा लावे,
द्वार खोल्या प्राछित नहीं आवे ।
अगनी संगट्ठाने मुनि टारे,
मनुजाँ ने तो साधु उबारे ॥ ४ ॥
पोते तो निकल झट जावे,
दूजाँ मरताँ री दया न लावे ।
उणने तो निरदयी जाणो,
ठाणाअंग रो है परमाणो ॥ ५ ॥
अनुकम्पा रो दण्ड न आवे,
ज्ञानीजन परमारथ पावे ।

अनुकम्पा रो दण्ड*बतावे,
अणहूँता ही अरथ लगावे ॥ ६ ॥
भोला ने बहु भरमाया,
कूडा-कूडा अरथ बताया ।
अनुकम्पा में पाप ने गायो,
हलाहल कलियुग चलि आयो ॥ ७ ॥

अधिकार अपराधीको निरपराधी कहनेका

कोई चोर अने परदारी,
हत्या कीनी मनुज री भारी ।
अपराधी राजा ठहरायो,
मारण योग्य जगत दरसायो ॥ १ ॥
वधवा योग्यते 'वध्या' कहावे,
"वज्झापाणा" पाठमें गावे ।
मुनि मध्यस्थ भावना भावे,

---

*जैसा कि वे कहते हैं।
अनुकम्पा किया दण्ड पावे परमारथ [illegible] पावे।
निशीथरो [illegible] उद्देशो जिन भाख्यो दशरो देख्लो ॥
अनु० ढा० २ गान)

समभाव पापी पर लावे ॥ २ ॥
वधवा योग्य मुनी नहीं केवे,
दुष्ट कर्म पे मन नहीं देवे।
अनवध्य अपराधी प्राणी,
ऐसी मुनी कहे नहिं वाणी ॥ ३ ॥
अपराधी होवे जो प्राणी,
निर अपराधी कहे किम जाणी।
दोषी ने निर्दोषीथापे,
राजनीति धर्म (ने) उत्थापे ॥ ४ ॥
दोषी ने निरदोषी बतावे,
दोष री अनुमोदना पावे।
तिण हेते मुनी मौन राखे,
'सुगडायँग' सूतर भाखे ॥ ५ ॥
मन्दमती तो ऊँधा बोले,
सूत्रपाठ हिये नहिं तोले।
(कहे)'मतमार कहें उणरो रागी,
तीजे करणे हिंसा लागी'' ॥ ६ ॥
इम ऊँधा अरथ लगावे,

जाने ज्ञानी न्याय बतावे ।
मतमार मुनि नित केवे
तेथी "माहण" पद प्रभु देवे ॥ ७ ॥
मतमार कह्याँ पाप नाहीं,
भव्य ! समझो हिरदा रे माँहीं ।
'मतमार' मे पाप जो केवे,
मिथ्यामत रो पद वो लेवे ॥ ८ ॥
साधु थी अनेरा जो प्राणी,
थापे हिंसक खेंचाताणी ।
वाने मत मारण नहि केणो,
ये कुगुरु तणो छे वेणों ॥ ९ ॥
जगजीव राखण रे काजे,
सत-शास्त्र कह्या जिनराजे ।
प्रश्नव्याकरण सूत्तर देखो,
सवरद्वारे, कह्यो जिन लेखो ॥१० ॥
चार भावना मुनि नित भावे,
ते थी संवर गुण बढ़ जावे ।
मैत्री प्रमोद करुणा जाणों,

मध्यास्था चौथी ..... वखाणो ॥ ११ ॥

मैत्रिभाव सभी पे लावे,
गुणिजन से हर्ष बढ़ावे ।
करुणा दुःखिया-जीवाँ री लावे,
यथा योग्य मिटावण चावे ॥ १२ ॥
खोटा-कर्म करे कोई जाणी,
चोरी जारी जा हत्या मन आणी ।
हिंसक क्रूर-कर्म रो कारी,
देवे दुःख जगत ने भारी ॥ १३ ॥
एवा दुष्ट देखे मुनि प्राणी,
मध्यस्थ भाव लावे गुणखाणी ।
मारण योग्य ऐसो नहि बोले,
"अवज्झा" "बचन" नहि खोले ॥ १४ ॥
वधवा योग्य कहें किम ज्ञानी,
समभाव है महा सुख दानी ।
आततायी (ने) अवज्मश्य किम केवे,
लोक विरुद्ध कार्य किम सेवे ॥ १५ ॥
या मध्यस्थ भावना जाणों,

इणरो सुगडाअग बखाणो।
दुष्ट जीवाँ रो यहाँ अधिकारो,
अध्ययन पाँचवें ज्ञानी विचारो ॥ १६ ॥
ऊँधा अरथ करी भ्रम पाडे,
नाखे मिथ्यामत री खाडे।
"कहें साधु थी अनेरा प्राणी,
जाने हिंसक लेवो जाणी" ॥ १७ ॥
(कहे तिणने) मतमार कहे उण री रागी,
तीजे करणे हिंसा लागी ॥
'मतमार' जीव नहि केणो,
ऐसा कुमति काढे वेणो ॥ १८ ॥
हिवे सूत्र प्रमाण पिछाणो,
सभी जीव दुष्ट मत जाणो।
क्षुद प्राणी रो चाल्यो लेखो,
"ठाणायग"सूतर मे देखो ॥ १९ ॥
क्षुद्रिक अधम कह्या प्राणी,
षट् भेद कह्या ज्यॉरा नाणो।
असन्नी तिर्यंच पचेन्द्री,

तेउ वाउ वलो विकलेन्द्रो ॥ २० ॥

दूसरी वाचना रे माँई,

सिंह वाघ वरग (ड़ा) दुःखदाई ।

दिवड़ा रीछ तिरक्ष लहिये,

षट् क्रूर प्राणी इम कहिये ॥ २१ ॥

सब जीवक्रूर मत जाणो

ठाणाअंग सूतर परमाणो ।

साधू थो अनेरा जो प्राणो,

तेने क्षुद्र कहे ते अनाणी ॥ २२ ॥

तिम दुष्ट सर्व मत जाणो,

कोई कुकर्मों ने पिछाणो ।

जिम उतराध्येन रे माँई,

भद्र प्राणी कह्या जिनराई ॥ २३ ॥

जम्बुक आदिक कुत्सित कहिये,

हिरणादिक भद्रक लहिये ।

निरअपराधी भद्रक भाखे,

सूत्र अरथ टोका री साखे ॥ २४ ॥

जो कहे साधू थी अन्य क्रूर प्राणी,

(तो,) भद्रिक अर्थ री होवे हाणो।
तिम हिंसक सर्व नहिं प्राणी,
अति-दुष्ट हिंसक लेवो जाणी ॥ २५ ॥
वध्याने वध्या न बतावे,
निरदोषी कह्या दोष आवे।
या मध्यस्थ भावना भाई,
दुरगुण री उपेक्षा बताई ॥ २६ ॥
करुणारी बात यहाँ नाई,
"सुगडाअँग" टीका रे माई।
इणरो ऊँधो अर्थ केई ताणे,
'मतमार' मे पाप बखाणे ॥ २७ ॥
नाम सुगडाअँग रो लेवै,
खोटी जुगत्याँ मन सूँ देवे।
तिण हेत कियो विस्तारो,
शुद्ध-श्रद्धा थी है निस्तारो ॥ २८ ॥

४-अधिकार जीवणा मरणा वांछणोका

जीवणो आपणो मनमें आनी,
भोजन-पान करे शुद्ध ज्ञानी।
उत्तराध्येन छवीस रे माँई,
छे कारण में वात या आई ॥ १ ॥
जो बिन अवसर अन्न त्यागे,
('तो) आतमहत्या मुनिने लागे।
जीवन हेते आहार रो करणो,
सूतर में कोनो यो निरणो ॥ २ ॥
अवसर जाण मरण रे काजे,
तजे आहार धर्म शुद्ध साजे।
यों जोवनो मरणो चावे,
पाप न लागे सूत्र बतावे ॥ ३ ॥
राजमतो रहनेमीने भाषे,
धिक्कार तू जीवन राखे।
मरणो तुझने श्रेयकारी,
धर्म लाभ हुवे तुझ भारी ॥ ४ ॥
अज्ञानी अनुकम्पा थी भागा,

ऊँधा अरथ करण यूँ लागा ।
"आपणो जीवणो* साधू वछे,
(तो) पाक-कर्म रो होवे सचे" ॥ ५ ॥
करुणा थी परजीव बचावे,
तिणने पाप सँताप लगावे।
इणमे साख सँथारा री देवे,
ऊँधा अरथ सूँ दुरगति लेवे ॥ ६ ॥
पूजा-श्लाघा सँथारा मे देखी,
जीवणो चावे कोई विशेखी ।
अतिचार सँथारा रो भाख्यो,
पिण नहि अनुकम्पा रो दाख्यो ॥ ७ ॥
महिमा पूजा नहि पावे,
तथा कष्ट शरीर मे आवे ।
तब मरण आशसा लावे,

जैसे कि वे कहते हैं ।
आपणां वछे तो ही पापो, परनो पुण घाले सताप्रो ।
मरणो जीवणो वछे आज्ञानी, समभाव राखेते सुज्ञानी ॥
(अ० ढाल २ गाथा ४१)

"संथारा" में दोष यों आवे ॥ ८ ॥
जीवन-मरण रो नाम तो लेवे,
आसंसा (पओग) अर्थ नहिं केवे ।
अनुकम्पा उठावा रा कामी,
झूठा अर्थ करे दुःखगामी ॥ ९ ॥

—अधिकार शीत, तापादि वंछवा

आसरी ।

वायु[१], वर्षा[२]; शीत[३] ने तापो[४],
राजविग्रह[५] रो नहिं सन्तापो ।
सुभिक्ष[६], उपद्रवनाशो[७],
सातो बोलाँरो यो समासो ॥ १ ॥
दुख सुखदायी ये जाणी,
हो-मतहो कहेणी नहीं वाणी ।
निज सुख-दुख सम मुनि जाणे,
तेथो एवो वचन मुख नाणे ॥ २ ॥
अज्ञानी तो उलटा बोले,

भोला ने नाखे झखझोले ।
उपद्रव मिटण कोई चावे,
तिण माँहीं ये पाप बतावे ॥ ३ ॥
"खवरदारे" जिनजी भाख्यो,
'खेमकर' मुनिगुण दाख्य ।
उपद्रव मेटे ते खेमकर,
ते जीवाँ रो जाणो हितकर ॥ ४ ॥
श्री वीर रा गुण इम भाखे,
आदर कुँवर गोशाला ने दाखे ।
त्रस-थावर (रे) खेम करता,
शान्ति करणशील भगवन्ता ॥ ५ ॥
पर-उपद्रव मेटण चावे,
तिणमें तो पाप न थावे ।
शीत तापादि उपद्रव कोई,
निज पे आयो मुनि लियो जोई ॥ ६ ॥
होवो-मतहोवो मुनि नहिं केवे,
आरत ध्यान जाण मौन रवे ।
आरत ध्यान रो तीजो भेदो,

रोग आयाँ करे कोई खेदो ॥ ७ ॥
रोग रो वियोग जो चावे,
आरत ध्यान प्रभूजी बतावे ।
और मुनियाँ रो रोग मिटावे,
ते तो आरत नाहिं कहावे ॥ ८ ॥
तिम पर-उपद्रव रो जाणो,
पाप केवे तो कुमति पिछाणो ।
ज्यों बन्दना मुनि नहिं चावे,
चावे तो दूषण पावे ॥ ९ ॥
यों आपणा आसरि जाणो,
'सुगडायंग' सूत्र पिछाणो ।
काई बन्दना मुनिने देवे,
दोष तिणमें सूत्र नहि केवे ॥ १० ॥
'खेम' निरउपद्रव तिम जाणो,
पर रो वंछ्या न दोष रो ठाणो ।
खेमंकर मुनी गुण कहिये,
ते वंछ्या दोष किम लहिये ॥ ११ ॥

६—अधिकार नौकाका पानी बतानेका

साधू बैठा नावामे आई,
नावडिये नाव चलाई ।
नाव फूटी माँय आवे पाणी,
उपरा उपरी जल सूँ भराणो ॥ १ ॥
आता पानी बतावा रो नेमा
तेथी मुनी बतावे केमो ।
अवसर डूबण केरो आवे,
जतनासे निकल मुनि जावे ॥ २
विधिसे उतरथा नहि घाट,
"आहारियरियेजा" पाठ ।
जतना सूँ निकलने जाणो,
डूबजाणे रो नाहि बखाणो ॥ ३ ॥
एवा सरल-अर्थने छोडी,
खोटी ढालाँ मूँडा सूँ जोडी ।
(कहे) "मनुज बचाया पापो,
तेथी (मुनि) जल न बतावे आपो ॥

जो जीव बचायामें धर्मो,

(तो) मनुज बचियाँ हुवे शुभ-कर्मो ।

जल बताई नाँय बचावे,

(तेथी मनुष्य) बचायाँ पाप बहु थावे ॥५॥

एवी खोटी करे कोई थापो,

जाँरे उदय हुवा महापापो ।

जो जलने (मुनि) नाहिं बतावे,

(तेथी)मनुज बचायाँ पापमें गावे ॥ ६ ॥

(उत्तर) मुनि निज नो तो जीवणो चावे,

आहार पाणी मुनी नित खावे ।

निजनी अनुकम्पा (तो) करनी,

याती तुम पिण मुख थी वरणी ॥ ७ ॥

तो निज अनुकम्पा लाई,

(कहो) क्यों पाणी बतावे नाहीं ?

(कहे) "अनुकम्पा तो निज नो करणी,

पाणी बतावा री (सूत्तरमें)नाहीं वरणी ॥८॥

कल्प पाणी बतावा री-नाहीं,

(पिण निज) अनुकम्पामें दोष न काई ।

तो इमहिज समझो र माई
पर री अनुकम्पा धर्म र माई ॥ ९ ॥
मनुजाने बचाया मे धर्मो,
थो ठाणायङ्ग रो मर्मो ।
निज (अनुकम्पा) काजे न पाणी बतावे,
(तिम) परकाजे पिण नाहि दिखावे ॥ १० ॥
पाणी बतावा रो कल्प नाही,
मनुजरक्षा धर्म र माही ।
जीव बचिया न व्रत मे भङ्गो
'तिण रो साखी आचारङ्गो' ॥ ११ ॥
"अनुकम्पा किणरी न करणी"*
ऐसी आचारंगे न वरणी ।
शंका होवे तो सूतर देखो,
नाव रो चलायो जठे लेखो ॥ १२ ॥
* द्वितीय ढाल सम्पूर्णम् *

*—जैसे कि वे कहते हैं —
आप डबे अनेरा प्राणो,
अनुकम्पा किणरी नहि आनी ।

॥ दोहा ॥

वांछे मरण जीवणो, धर्म तणे जे काज।
सतधारी ते शूरमा, (जां) सार्‍या आतमकाज ॥१॥
(पर) अनुकम्पा कीधा थकां, कटे कर्म नो वंश
"ठाणायँग' चौथे कह्यो मोह तणो नहिं अंश ॥२॥
पर-अनुकम्पा जो करे, मिटे राग अरु धेख।
भोग मिटे इन्द्रयां तणा, अन्तर-दृष्टि देख ॥ ३ ॥
जीव दया रे कारणे, मेघरथ खंडी काय।
शान्तिनाथ नो जीव ये, समवायँग रे मांय ॥ ४ ॥
सैंठा रया चल्या नहीं, कर्म किया चकचूर।
ममता छांड़ी देह नी, दयावन्त महा-शूर ॥ ५ ॥

तीसरी-ढाल

१ अधिकार मेघरथ राजाका परेवा पर दया करनेका ।

(तर्ज—विछिया नी)

इन्द्र करी परसंसिया,
मेघरथ मोटो महाराय— रे जीवा ।
दयावन्त दानेश्वरी,
शरणागत देवे सहाय—रे जीवा ॥ १ ॥

मोह अनुकम्पा न जाणिये,
नहि मोह तणो यह काम—रे जीवा ।
परकाश अन्धेरा ज्यूँ जुवा,
दोया रा न्यारा नाम—रे० मो० ॥ २ ॥

तिण काले एक देवता,
दयाभाव देखण रे काज—रे जीवा ।

रूप परेवो बाज नो,
तिण कीनो वैक्रिय साज—रे० मो० ॥ ३ ॥
पड़ियो राय री गोद में,
भय थी तड़फे तस काय—रे जीवां ।
शरणो दियो महारायजी,
भय मतपावो कहि वाय-रेजीवां, मो०॥४॥
बाज कहे भख माहरो,
मुझ भूखा नो यह शिकार—रे जीवां ।
और कछू लेसूँ नहीं,
मोने आपो म्हारो आहार-रे० मो० ॥ ५ ॥
यो शरणागत माहरे,
और मांग तू वस्तु रशाल—रे जीवां ।
जे मांगे ते आपसूँ,
हूँ जीवदया प्रतिपाल-रे जीवां, मो० ॥६॥
मांस आपो निज देह नो,
इणरे बराबर तोले—रे जीवां ।
हर्षित हो राय इम कहे,
यह तो भलो कह्यो थें बोल-रे जीवां,मो०॥७॥

तुरत तराजू माड ने,
राय खण्डन लागो काय—रे जीवा ।
हाहाकार हूओ घणो,
अन्तेवर अति विलखाय-रे जीवा,मो० ॥८॥
उत्तर दीधो राजवी,
नहि मोह तणो यह काम—रे जीवा ।
क्षत्री धर्म छै महारो,
धर्म राखे छे थारो स्वाम-रे जीवा,मो० ॥९॥
सब समझाया ज्ञान सू ,
विलखाया सामा जोय -रे जीवा ।
इसडो धर्मी जगतमे,
हुओ वली होसी कोय-रेजीवा मो०॥१०॥
निज नो मरणो वछियो,
ते तो जाणी धर्म रो काम—रे जीवा ।
प्राण कपोत रा राखिया,
ते शुद्ध धर्मरे नामरे जीवा मो० ॥११॥
तन खञ्यो मन खञ्यो नहीं,
अपूरण जाण्यो बोल र जीवा ।

वीर रसे महारायजी,
तन मेल दियो अनमोल-रेजीवां मो०॥१२॥
जयजयकार (तव) सुर करें,
धन ! धन ! तूँ महाराय--रे जीवां ।
इन्द्र किया गुण ताहरा,
मैं देख लिया यहां आय-रे जीवां,मो०॥१३॥
खम अपराध तूँ माहरो,
हुओ सुवरण (मैं) पारस संग-रे जीवां ।
गोत तीर्थंकर बांधियो,
राय दया तणे परसंग-रे जीवां,मो० ॥१४॥
इण अनुकम्पा में मोह कहे,
उणरे पूरो उदे मिथ्यात--रे जीवां ।
यह तो परतख मोह रो जीतणो,
ग्रन्थ मांहे देखो साक्षात-रे जीवां,मो०॥१५॥

२—अधिकार अरणकजी की

अनुकम्पा का

अरणक परीक्षा कारणे,

देव बोले इण पर वाय-रे जीवा।
अनुव्रत पाचो निर्मला,
दया-धर्म धारे चितचाय-रजीवा, मो० ॥१॥
व्रत तोड हिंसा करसी नहीं
अनुकम्पा न छोडसी आज-रेजीवा।
(जाव) धर्म न छोडसी ताहरो
तो हूँ करसूं मोटो अकाज-रेजीवा मो० ॥२॥
वचन सुणी डरियो नहीं
इम चिन्तवे चित्त मुझार—रजीवा।
धर्म रोध इणरे नहीं
तेथी पाप करण अंगार- र जीवा मो०॥३॥
सुमति तजी कुमती भजी
तेहथी धर्म छुडावण चाय—रजीवा।
मैं मर्म जाण्यो है एहनो
तेथी धर्म छोड्यो किम जाय रे जीवा मो०॥४॥
पाप है घातक ज[illegible]में
दु:ख देवे कर अकाज रे जीवा।
जगवच्छल जिन-धर्म है

सुखदाई सारे काज—रेजीवां मो०॥५॥
अड्डी-मीजा रम रह्यो
जारे धर्म तणो अनुराग—रे जीवां।
केम गहें कर कांकरो
रतन चिन्तामणि त्याग—रे जीवां, मो०॥६॥
दृढ़ रह्यो चलियो नहीं
देव कीनो उपसर्ग दूर—रे जीवां।
धन धन मुखसे बोलतो
दयाधर्मी तूँ महाशूर—रे जीवां मो०॥७॥
कुमती कदाग्रही इम कहे
जहाजमें मनुज अनेक—रे जीवां।
मोह करुणा न आणी केहनी*

---

*—जैसा कि वे कहते हैं—

तिण सागारी अणसण कियो, धर्म ध्यान रह्यो चित ध्याय रे।
सगला ने जाण्या डवता मोह, करुणा न आणी काय रे।
जीवा मोह अनुकम्पा न आणिये ॥ ४ ॥
लोक विलविल करता देखने, अरणकरो न विगड्यो नूर रे।
मोह करुणा न आणी केहनी, देव उपसर्ग कीधो दूर रे।
जीवा मोह अनुकम्पा न आणिये ॥ ८ ॥
(अनुकम्पा ढाल २)

मरतो नहि राख्यो एक—रे जीवा मो०॥८॥
एहवी अणहूँती बात उठायने
अनुकम्पामें थापे पाप—र जीवा ।
जारे मोह उदे अति आकरो
तेहथी खोटी कर छे थाप—र जीवा मो०॥९॥
झाझ राखण धर्म छोड्यो नही
तेहथी मोह करुणा री थाप—र जीवा ।
त्याने बुधवन्त कहे इण परे
इक हेतु रो देवो जाब—र जीवा मो॥१०॥
"रावण सीताने कहे
तू मुजने न करे स्वीकार—रे जीवा ।
तेथी मरसे नर अति सामटा
थार नहि दयासूँ प्यार—रे जीवा मो०॥११॥
दया धर्म मुझ मन वस्यो
हूँ तो सगला रो चाहूँ खेम—र जीवा ।
थारे हिरदे खोटी वासना
म्हारे हिरदे साचो नेम—रे जीवा मो०॥१२॥
शील न सीता खण्डियो

तेथी अनुकम्पासें पाप"—रे जीवां।
एवी मूढ़ करे कोई कल्पना ?
के ज्ञानी केरी या थाप ?—रे जीवां, मो० ॥१३॥
जब जाव न आवे एहनो
तब ज्ञानी कहे समझाय—रेजीवां।
शील सती खण्डे नहीं
तिणरे रक्षा घणी दिल माँय—रे० मो०॥१४॥
तिम धर्म न छोड़े शुभमति
अनुकम्पा घणी घट माँय—रे जीवां।
तिणने कहे कोई मूढ़मति
वो अनुकम्पा लायो नाँय—रे०मो० ॥१५॥
धर्म शील न छोड़े तेहने,
नामे करे एहवी थाप—रे जीवां।
अनुकम्पा नें पाप छे
तेथी मनुष्य बचाया नाय" रे० मो० ॥ १६ ॥
एवी मूढ़ करे परूपणा
ज्ञानी री यह नहिं वाय—रे जीवां।
धर्म शील सम जाणजो

जीव रक्षा धर्म र मॉय—र० मो० ॥१७॥
कोई देव कहे श्रावक भणी
तू दे जिन धर्मने छोड—रजीवा।
नहि तो साधवी गुरुणी ताहरी
जारो शीलने नाखसूँ तोड—र० मो०॥१८॥
धर्म न छोडे तेहथी
कोई मूर्ख उठावे भरम—रे जीवा।
शील बचायामे पाप है
तिणरे हेते न छोड्यो धर्म—रे० मो०॥१९॥
(वलि) देव कहे धर्म न छोडसी
झूठ चोरी रो करस्यूँ पाप—रे जीवा।
तब धर्म न छोडे तेहथी
कोई मूढ कर एहवी थाप—र० मो०॥२०॥
धर्म त्याग चोरी न छुडावना
चोरी झूठ छोडावा मे पाप—र जीवा।
या मूरख री परूपणा
इम ज्ञानी जाणेसाफ—रे ०मो० ॥२१॥
इम अठाराही पाप रो

न्याय शुद्ध हिरदेमें धार—रे जीवां ।
धर्म त्यागे न पाप छुड़ायवा
यो सूत्र तणो निरधार—रे० मो०॥२२॥
कहे "पाप छोड़ावणो धर्ममें
पिण धर्म तो छोड़े नाँय—रे जीवां ।
धर्म न छोड़े तेहथी,
पाप मेटण पाप न थाय"—रे० मो० ॥२३॥
(तो) जीवरक्षा रो द्वेष छोड़ने,
समभाव लावो मनमांय—रेजीवां ।
धर्म छोड़ अनुकम्पा ना करे,
अनुकम्पा सावज नांय—रेजीवां मो० ॥२४॥
धर्म छोड़ मनुष्य नहिं राखिया,
तेथी मनुष्य बचाया पाप—रेजीवां ।
या खोटी सरधा थाहरी,
इण न्याय थी जाणो साफ—रे० मो० ॥२५॥
नाम लेवे अरणक तणो,
अनुकम्पा उठावण काज—रेजीवां ।
ते मूढ़ अज्ञानी जीवड़ा,

छोडो धर्मने भेष री लाज—र० मो० ॥२६॥

३—अधिकार "माता बचानेसे चुलणी पियाके व्रतादिका भग नहीं हुआ

अरणक नी परे जाणज्यो,
चुलणीपिया नी वात—रेजीवा ।
पुत्र मार सूला कर छाटता,
अनुकम्पा राखी साक्षात—रेजीवा मो० ॥१॥
अपराधीने नहि मारणो,
कीधो पोसा माही नेम—रेजीवा ।
तेथी पुत्र रा मारणहार पे,
अनुकम्पा राखी धर प्रेम—रजीवा मो० ॥२॥
मूढमती उलटी कहे,
जारे दया नहि दिल माय—रेजीवा ।
करुणा न की अगजात नी,
एवी खोटी बोले वाय—रेजीवा मो० ॥३॥
जो देव इणी विध बोल तो,
थारा पुत्र बचायामे धर्म—रेजीवा ।

तू सरधे तो छोडूं जीवता,
नहिं तो घात करूं तज सर्म—रेजीवां, मो० ॥४॥
तदा श्रावक धर्म न श्रद्धतो,
देव करतो पुत्र री घात—रेजीवां।
तो करुणा न की अंगज तणी,
या साँची होती तुम बात—रेजीवां, मो० ॥५॥
पिण देव तो बोल्यो इण परे,
थारे जीव दया रो व्रत—रेजीवां।
ते तोड़ हिंसा करसी नहीं,
थारा पुत्र मारूं इन शर्त—रेजीवां, मो०॥६।
तेथी श्रावक व्रत तोड्या नहीं,
दया-धर्म हिरदा में ध्याय—रेजीवां।
तुम कहो करुणा आणी नहीं,
यो तो झूठो थारो न्याय—रेजीवां, मो० ॥७॥
देव कहे हिंसा करसी नहीं,
थारे देव गुरू सम माय—रेजीवां।
तिणने मार सुला कर छाँटसूं,
दया धर्म न मुझ सुहाय—रेजीवां, मो० ॥८॥

म सुण चुलणीपिया कोपियो,

थो तो पुरुष अनारज थाय—रेजीवा।

पकड , मारू एहने,

इम चिन्ती लारे धाय—रजीवा मो० ॥९॥

देव गयो आकाश मे,

इणर थॉभो आयो हाथ—रेजीवा।

कोलाहल कीधो घणो,

तब आई भद्रा मात—रेजीवा ,मो० ॥ १० ॥

वच्छ ! विरूप देख्यो तुमे,

नहि हुई पुत्रॉ रो घात—रेजीवॉ।

पुरुष मारण तुम ऊठिया,

व्रत-नेम भागा साक्षात—रजीवॉ, मो० ॥११॥

इहॉ झूठा गोला इम कहे,

जॉरे नहि अनुकम्पा सू प्रेम—रजीवॉ।

"अनुकम्पा करी जननी तणी,

ते सू भागा व्रत नेम"—रजीवा, मो० ॥१२॥

बेटा हो इण पर कहे,

मिथ्यात रो चढियो पूर—रजीवॉ।

ज्ञानी कहे हिवे साँभलो,

होकर सतवादी शूर—रेजीवाँ, मो० ॥१३॥

त्याग किया हिंसा तणा,

तेथी श्रावक रे व्रत होय—रे जीवां।

ते व्रत भागे हिंसा किया,

थो न्याय विचारी जोय—रेजीवां मो० ॥१४

अनुकम्पा हिंसा नहीं,

तेने त्याग्या व्रत नहिं थाय-रे जीवां।

जो, अनुकम्पा त्याग दे,

निरदयी कह्यो जिनराय—रे जीवां मो० ॥१५॥

अनुकम्पा थी व्रत नीपजे,

तेथी व्रत री किम हुवे घात—रेजीवां।

अमृत थी मरणो कहे,

या तो मूढ़मत्याँ री बात-रे जीवां, मो० ॥१६॥

मारे ते विष जाणज्यो,

अमृत थी रक्षा थाय-रे जीवां।

अनुकम्पा थी व्रत भागे नहीं,

हिंसा हुवा व्रत जाय-रे जीवां, मो० ॥१७

अनुकम्पा थी व्रत भागा कहे,
ते बूडा काली धार—रे जीवा ।
वली भोला ने भरमाय ने,
पकड दुनयो लार—रजीवा, मो०॥१८॥
"भगगवए भग्गनियम" रा,
वलि 'भग्ग पोषध" रो अर्थ—रजीवा ।
टीका मे कियो इण भाँत थी,
थे खेंच करो क्यों व्यर्थ—रे जीवा, मो० ॥१९॥
कोप करी ने दोडियो,
पुरुष मारण र परिणाम—रे जीवा ।
अनुव्रत भागो तेहथी,
करुणा न रही तिण ठाम—र जीवा, मो॥२०॥
अपराधी पिण नहि मारणो,
या पोषध रा मर्याद—र जीवा ।
भाव हुवा मारण तणा,
व्रत भागो तजो हठवाद—रे० मो० ॥२१॥
क्रोध करण रा त्याग था,
पुरुष पर आयो कोप—र जीवा ।

नियम उत्तर गुण भागियो,

जिन आणा दिवि लोप—रेजीवां, मो० ॥२२॥

न कल्पे पोषधे दोड़णो,

ते तो दोड्या पुरुष रे संग— रे जीवां ।

दोड्याँ अजतना हुई,

पोषध रो हुओ भंग—रे जीवां मो० ॥ २३ ॥

यो सत्य अर्थ सूतर नणो,

टीका थी लीजो जोय—रे जीवां ।

खोटा अर्थ कुगुराँ तणा,

मत मानजो स्याणा होय—रे० मो० ॥ २४ ॥

शूरादेव का दाखला

"अनुकम्पा आणी जननी तणी,

ते सूँ भागा व्रत ने नेम"—रे जीवां ।

एवी खोटी थाप कोई करे,

तेने उत्तर दीजे एम—रेजीवां, मो० ॥२५॥

शूरादेव श्रावक तणी,
चुलणीपिया सम वात—रेजीवा ।
देव कष्ट दियो पुत्रॉ तणो,
तिनमें विशेष छे इण भॉत—रे० मो० ॥२६॥
जो तूॅ दया-धर्म छोडे नहीं,
तो थारी देह रे माँय—रेजीवा ।
सोले रोग मैं घालसूॅ,
तूॅ मरने दुर्गत जाय—रेजीवा, मो०॥२७॥
इम सुण कोप थी दोडियो,
चुलणीपिया सम जाण—रेजीवा ।
व्रत-नियम भागा कह्या,
ते समझ ने तज दो ताण—रेजीवा, मो० ॥२८॥
पोषा सामायक मे तुमे,
ग्वी करो छो थाप—रेजीवा ।
देह रक्षा किया भागे नहीं*,
आगार कह्यो तुम साफ—रे० मो० ॥२९॥

* जैसा कि ने 'श्रावक धर्म विचार" में श्रावक की सामायिक व्रत की ढालमें कहते हैं —

तुम कथने शूरादेव रे,
देह रक्षा थी भागा न व्रत—रे जीवां।
जीवे अनुकम्पा किणरी करा,
तिण थी भागा हणरा व्रत—रे जीवां, मो० ॥३०॥
इण कथने थें जानलो,
चुलणीपिया नी (पिण) घात—रे जीवां।
जननी अनुकम्पा थकी,
नहिं हूई व्रत री घात—रे जीवां, मो० ॥३१॥

शरीर कपड़ादिक तेहना,
जतन करे सामायक मांयजी
लाय चोरादिक रा भय थकी,
एकांत स्थानक जयणा से जायजी ॥२४॥
आपरो तो आगार राखियो,
औरा रो नहीं छे आगार जी।
औरा ने त्याग्या सामाई मुझे,
त्याँ ने किणविध लेजावे वहार जी ॥
सिखाजा व्रत आराधिये ॥ २७ ॥
लाय चोरादिक रा भय थकी,
राख्या ते द्रव्य ले जायजी।

हिंसा करण ने दोडियो,
वली क्रोध आयो तिणवार—रे जीवा।
अजतना व्योपार थी,
व्रत नेम पोषध टूटी कार—रे० मो० ॥ ३२ ॥
व्रत भागे हिंसा थकी,
यो निश्चय लीजो जाण—रे जीवा।

पाखती कपडादिक हुवे घणा।
त्याँ ने तो वाहर न ले जावे तायजी ॥ २८ ॥
राख्या ते द्रव्य ले जावता,
समाई रो भंग न थायजी
त्यागा छे त्याँ ने ले जावता,
सामायी रो व्रत भाग जायजी ॥ २६ ॥

ग्यारहवें व्रत की ढाल में भी लिखा है —

पोषा ने सामायिक व्रत ना,
सरखा छे पच्चखाणजी।
सामायिक तो मुहूर्त एकनी,
पोपो दिवसरात रो जाणजी ॥ ७ ॥
पोषा ने सामायिक व्रत में,
याँ दोयाँ में सरखो छे आगारजी ॥ ८ ॥

अनुकम्पा थी रक्षा हुवे,
(तेथी)व्रत भागो कहे अणजाण—रे० मो० ॥३३॥

४—अधिकार 'नमीराज ऋषि ने अनुकम्पा नहीं की' ऐसा कहनेवालों के लिये उत्तर।

नमीराज ऋषि संयम लीनो,
प्रत्येकबोधी (मोटा) अणगार रे जीवां।
निज हित करणे उठिया,
पर री नहिं करे सार संभार—रे० मो० ॥ १ ॥
दीक्षा न देवे केहने,
न देवे श्रावक (ना) व्रत—रे जीवां।
उपदेश पिण देवे नहीं,
पूछ्याँ उत्तर देवे सत्य—रे जीवां, मो० ॥ २ ॥
(ते) अनुकम्पा करे आपनी,
पर री कल्पे तस नायँ—रे जीवां।
इन्द्र आयो तिण ने परखवा,
त्याँ माया विविध बनाय—रे जीवां, मो० ॥ ३ ॥

महल अन्तेवर ताहरा,
अगनि में जले परतख—रे जीवा।
तुम स्वामी क्यों एहना,
ज्ञानादिक नी परे (याने) रख—रे० मो० ॥ ४ ॥
तव, नमीऋषिजी इम कहे,
ज्ञानादिक गुण छे मूझ—रे जीवा।
एथी बीजी वस्तु नहि माहर,
निश्चयनयरी बताई सूझ-रेजीवा, मो० ॥५॥
मुझनो ते तो बले नहीं,
बले ते न म्हारो होय रे जीवा।
यह मिथिला बलता थकाँ,
ज्ञानादिक नाश न होय रे जीवा, मो० ॥६॥
केई अज्ञानी इम कहे,
अनुकम्पा री करवा बात-रे जीवा।
"नमीराज ऋषि आणी नहीं,
मोह अनुकम्पा री बात"—रजीवा, मो० ॥७॥
(उत्तर) अनुकम्पा रो प्रश्न छे नहीं,
नहि उत्तर में तेनी बात—रे जीवा।

थाँ झूठा गाल बजाविया,
थाँरे मोह उदय मिथ्यात—रे जीवां, मो० ॥८॥
(जो) अन्तेवर रक्षा ना करी,
तेहथी अनुकम्पा में पाप—रेजीवां
एवी करे कोई थापना,
तो उत्तर सुणजो साफ—रे जीवां, मो० ॥ ९ ॥
हिंसा, झूठ, चोरी तणा,
नमी (जी) न करावे त्याग—रे जीवां ।
वस्तर पिण राखे नहीं,
संग में न रहे महाभाग—रे जीवां, मो० ॥१०॥
निज हित में तत्पर रहे,
पर साधु रो न करे काज—रे जीवां
प्रत्येकबोधी मुनि तिके,
पर रो न बंछे साज—रे जीवां, मो० ॥११॥
या प्रत्येकबोधी रो नाम ले,
कोई मूर्ख करे एहवी थाप—रे जीवां ।
जो कार्य नमीऋषि ना करे,
तिण में मोहतणो छे पाप—रे जीवां, मो० ॥१२॥

इण लेखे (तो) दीक्षा देण मे,
वलि विविध करावण नेम – रे जीवा।
ते मोह पाप मे ठहरसी,
तेने ज्ञानी तो माने केम रेजीवा, मो० ॥१३॥
दीक्षा, त्याग, व्यावच तणा,
यॉ कार्य मे दोष न कोय रे जीवा।
तिम परजीव रक्षा मे जाणज्यो,
थीवरकल्पीकर सव कोय – र० मो० ॥१४॥
जिणकल्पी प्रत्येकबोधि नो,
जिण कामॉ रो कल्प न होय रे जीवा।
त्यॉरे देखा-देखी कोई ना कर,
निर्दयी समझो सोय रेजीवा, मो० ॥१५॥
ठाणायग मे भाषियो,
करुणा तणो अधिकार – रे जीवा।
(वली) छती शक्ति व्यावच ना कर,
यॉधे महा मोहणी रो भार – र० मो० ॥१६॥
थीवर कल्पी रा कल्प रो,
जिन गहवा भाख्यो मर्म रे जीवा।

(तेहीज) जिनकल्पी प्रत्येकबोधी ने,
प्रभु नाथ बतायो यां धर्म रेजीवां, मो० ॥१७॥
प्रत्येकबोधी नमी तणो,
झूठो उठायो नाम—रे जीवां।
अनुकम्पा उठायबा,
ए नहीं समदृष्टि रा काम—रे० मो० ॥१८॥

५—अधिकार नेमिनाथजी ने गज-सुकुमाल की अनुकम्पा नहीं की, ऐसा कहनेवालों को उत्तर

श्री नेमि जिनेश्वर जाणता,
मुनि गजसुकुमाल री घात—रे जीवां।
ए नो खेर खीरा माथे खमी,
मोक्ष जावसी इणहिज भाँत—रेजीवां, मो० ॥१॥
तेथी जिण दिन दीक्षा आदरी,
पड़िमा वहण चित चाय - रे जीवां।
आज्ञा मॉगी जिणराज री,
श्रीमुख दीवी फुरमाय रेजीवां,मो० ॥२॥

शमसाणे काउसग्ग कियो,
सोमल आयो तिहाँ चाल रे जीवा
माथे पाल बाँधी माटी तणी,
माँहि घाल्या खीरा लाल रे जीवा, मो० ॥३॥
कष्ट सह्यो वेदना खमी,
मुनि मोक्ष गया तिणवार रे जीवा।
केई मदमती तो इम कहे,
"नेम करुणा न करी लिगार*—रे० मो० ॥४॥
पहले अनुकम्पा आणी नहीं,
और साधु न मेल्या साथ रे जीवा।

---

* जैसा कि वे कहते हैं —
कष्ट सह्यो वेदना अति घणी,
नेमी करुणा न आणी लिगार रे ॥ १८ ॥
श्री नेमि जिनेश्वर जाणता
होसी गजसुकुमाल री घात रे।
पहिले अणुकंपा आणी नहीं
औरे साधू न मेल्या साथ रे ॥ १६ ॥
(अनुकम्पा ढाल—३)

तेथी अनुकम्पा में पाप है,

इम बोले झूठ मिथ्यात - रे जीवां, मो० ॥५॥

(उत्तर) चर्म शरीरी जीव नो,

आयु टूटे नहीं लिगार - रे जीवां।

जिम बाँध्यो तिम भोगवे,

निरूपकर्मी तणो निरधार—रे० मो० ॥६॥

आगम बलिया केवली,

कल्पातीत त्रिकाल ना जाण - रे जीवां।

निश्चय जाणे तिम करे,

जारो नाम लेई करे ताण—रे० मो० ॥७॥

गजसुकुमाल री ना करी,

अनुकंपा श्री जिन नेम—रे जीवां।

ए वचन अनुकम्पा-द्वेष रा,

ज्ञानी तो समझे एम—-रे० मो० ॥८॥

सूत्र व्यवहारी मुनि तणो,

सूतर में चाल्यो धर्म - रेजीवां।

तिणने सुतर व्योहारी ना करे,

जारे माठा बन्धे कर्म—रेजीवां, मो० ॥९॥

ठाणायग ठाणे तीसरे,
चौथे उद्देशे अधिकार-रे जीवा।
तपसी, रोगी, नवदीक्ष नी,
कोई न करे सार-सभार—रजीवा, मो०॥१०॥
ते वैरी अनुकम्पा तणा,
जिन श्रीमुख भाख्या आप—रेजीवा।
तेथी तीनों री करणी चाकरीं,
नहि करियाँ थी लागे पाप—रे० मो० ॥११॥
गजसुकुमाल रो नाम ले,
अनुकम्पा में थापे पाप—र जीवा।
ते घातक मुनि ना जाणज्यो,
ज्या दीना सूत्र उथाप—रे जीवा।
मोह अनुकम्पा न जाणिये ॥१२॥

६—अधिकार वीरभगवानके उपसर्ग दूरकरनेमें पाप कहते हैं, उसका उत्तर।

श्री वीर जिनेन्द्र चौबीसमाँ,
कल्पातीत मोटा अणगार—रे जीवां।
ज्याँने देव, मनुज, तिर्यंचना,
उपसर्ग उपज्या अपार—रे जीवां ॥१॥
(कहे) "संगमदेव भगवान ने,
दुःख दीधा अनेक प्रकार—रे जीवां।
म्लेच्छ लोकाँ श्री वीर रे,
श्वानादिक दीना लार—रेजीवां,मो० ॥२॥
दुःख देताँ देखी वीर ने,
अलगा नहिं कीया आय—रे जीवां।
समदृष्टि देव हूँता घणा,
पिण किणही न कीधो साय—रे० मो० ॥३॥

अनुकम्पा आण बीच मे पड्या,
यो तो जिन भाख्यो नहि धर्म-र जीवा।
ते थी उपसर्ग मेटणो पाप मे,"
मदमती पाडे इम भर्म-रजीवा, मो० ॥४॥
हिवे उत्तर एनो साँभलो,
देव मेट्या छे उपसर्ग आय—रे जीवा।
अनुकम्पा रा द्वेष थी,
मदमती ने दिया छिपाय—र जीवा, मो० ॥५॥
जिण दिन दीक्षा आदरी,
कायोत्सर्ग रह्या वन माँय—र जीवा।
पशुपाल बैल र कारणे,
वीर ने मारण हाथ उठाय—र० मो० ॥६॥
तब इन्द्र आय ने रोकियो,
भक्तिवन्त तो भक्ति चाय—रे जीवा।
(वली) सिद्धारथ देव श्रीवीर रा,
बहु उपसर्ग दीना मिटाय—र०, मो० ॥७॥
कानाँ थी खीला काढिया,
भक्तिवन्त वैद्य हुलसाय—र जीवा।

ते महाफल पायो धर्म नी,
   मरणान्तिक कष्ट मिटाय---रे० मो० ॥८॥
इम वहु उपसर्ग मेटिया,
   कल्पसूत्र कथा रे माँय---रे जीवां ।
तो पिण अनुकम्पा द्वेषी इम कहे,
   कोई उपसर्ग टाल्यो नाँय—रे० मो० ॥९॥
(कहे) "कथा री वात मानाँ नहीं,"
तो संगम (देव) री मानो केम—रे जीवां ।
या कथा पिण "कल्पसूत्र" नी,
   तुम साख देवो छो केम*---रे० मो० ॥१०॥
श्री वीर ना उपसर्ग मेटिया,
   ठाम-ठाम कथा रे माँय·—रे जीवां ।
तुमे कहो किणही न मेटिया,*

---

* जैसा कि वे कहते हैंः—
संगम देवता भगवान ने
   दुःख दीधा अनेक प्रकार रे ।
अनार्य लोकां श्रीवीररे
   श्वानादिक दीधा लाररे
      (अनु० ढाल—३ गा० २१)

झूठा बोलना सात्नो नार—र० मो० ॥११॥
जव ज्वाय न आवे एह्नो,
आडा-अवला गाल बजाय—रे जीवा।
म्लेच्छ शस्त्र खुला थका,
डूँगर थी टोल गुडाय—रे जीवा, मो० ॥१२॥
पार्श्व प्रभु दीक्षा ग्रही,
काउसग्ग किधो वन मांय—रे जीवा।
जव कमठे मेह बरसावियो,
उपसर्ग दीनो आय—रे जीवाँ, मो० ॥१३॥
तव धरणेन्द्र पद्मावती,

भनर्दा गोकों श्रा वार र।
श्रानादिक दाधा लार रे॥
(अनु० ढा० ३ गा० २१)

• जैसा कि वे कहते हैं —
दुःख देता देखो भगवान ने
अग्गा न काधा आय रे।
समदृष्टि देव हूँता घणा
पिण किणहीं न क्रोधी सगाय रे॥
(अनु० ढा० ३ गा० २३)

उपसर्ग दीनों मिटाय--रे जीवाँ।
तुम पिण मानो* या वारता,
हिवे बोलीने बदलो काँय--रे० मो० ॥१४॥
वलि कथा रे नामे तुमे,
ढालाँ जोड़ी विविध प्रकार—रे जीवां।
नवकार मन्त्र प्रभाव * थी,
उपसर्ग मेटण अधिकार---रे० मो० ॥१५॥

---

* जैसा कि वे कहते हैं--

पार्श्वनाथजी घर छोड़ काउस्सग कीधो
जब कमठ उपसर्ग कर वरसायो पाणी।
जब पद्मावती हेठे सिंहासन कीधो
धरणेन्द्र छत्र कियो सिर आणो ॥ ओ० मु० ॥
(गाथा २७)

* जैसे कि आराधना की दसवी ढाल में वे कहते है—

पन्नग पुष्प नी माल थई
नवकार प्रभावे कीरति लई।
सुख श्रीमति उभय भवे सारं
इम जाण जपो श्री नवकारं ॥ ७ ॥
अग्नि ठंडो किधी देवाँ

श्रीमती अमर कुमर वली,
भील सेठ आदिक नी रात— रेजीवा ।
देव साय करी (तुमे) मानी खरी,
चित पडिया ये सक्षात्—रेजीवा मो० ॥16॥
यह था सम दृष्टि देवता,
जिन धर्म दिपावणहार—र जीवा ।
नवकार महिमा कारणे,
सकट मेट कियो उपकार— रे० मा० ॥17॥

कियो कनक सिंहासन तन्खेवा ।
ऊपर अमर कुमर प्रति वैसार,
इम जाण जपो श्री नवकार ॥ 8 ॥
वछडा चरावतो जिहवार,
नदी पूर आया गुण्यो नवकार ।
यह ततखीण सरिता दोय डार
इम जाण जपो श्री नवकार ॥9॥
सेठ समुद्र में डूबतो,
नवकार गुण्यो मन चित्त शान्तो ।
सुर जहाज उठाय मेली पार,
इम जाण जपो श्री नवकार ॥10॥

तुम कहता सम-दृष्टि देवना,

पोच में नहिं पड़िया आय रे जीवां।

था बात थारी झूठी हुई,

पोच पड्या मान्या (थाँ) जोड़ माँय ॥१८॥

जहाज बचाई देवता,

थो तो धर्म तणो उपकार—रे जीवां।

जो खोटा जाणे समदृष्टि,

देवना किम करता सार—रे० मो० ॥१९॥

थें अनुकम्पा रा द्वेप थो (कह्यो)

धर्म होतो न करता ढोल—रे जीवां।

* उपसर्ग तुरत मिटावता,

समदृष्टि देवाँ रो शील—रे० मो० ॥२०॥

(तो) नवकारक प्रभाव थी देवना,

---

* जैसे कि वे कहते हैं:—

धर्म हुँतो आग्रो न काड़ता,

वली वीर ने दुखिया जाण—रे जीवाँ।

परोषह देवण आग्रा तेहने,

देव अलगा करता ताण—रे जीवाँ, मो० ॥ २५ ॥

(अनुकम्पा ढाल ३)

उपसर्ग मेल्या साक्षात—रे जीवा।
तुम करने पिग हुवो धर्म थो,
मान लेवो छोड मिथ्यात—रे० मो० ॥२१॥
"तो सब उपसर्ग वीरना,
देव केम न मेल्या आय"—रे जीवा।
एवी शका कोई कर,
जॉर सुरन्तुर हिरदे नाय—रे० मो० ॥२२॥
निरवेवादी अवधिधरा,
मिटता देख्या निज ज्ञान—रे जीवा।
(ते) विघन मेल्या देवॉ हर्ष सॅू,
धर्म सेवा रो दे शुभ ध्यान—र० मो० ॥२३॥
जो होनहार टले नही,
ते देव न सके टार—रे जीवा।
त्यॉरो नाम लेई कहे मूढमती,
(उपसर्ग) मेल्यॉ पाप अपार—रे०मो० ॥२४॥
सो कोसॉ उपसर्ग ना होवे,
जिन महिमा सूतर माय—रे जीवा॥
होनहार गोशाले वीर पे,

तेजू-लेस्या दीनी नाख—रे० मो० ॥२५॥

उपसर्ग मिटे प्रभु तेज थी,

यह तो प्रत्यक्ष आछो काम—रे जीवां।

भावी (होनहार) टले नहीं जो कदा,

(इणरो) मन्द आणे मुख नाम—रे० मो० ॥२६॥

(तिम) वीर उपसर्ग देवाँ मेटिया,

परतख धर्म रो काम—रे जीवां।

जो होनहार मिटे नहीं,

ज्ञानी नहिं लेवे तिण रो नाम—रे० ॥

मोह अनुकम्पा न जाणिये ॥२७॥

७—अधिकार द्वीप-समुद्रों की हिंसा देवता क्यों नहीं मेटे?-इसका उत्तर।

कोई मन्दमती इण पर कहे,

अनुकम्पा उठावण काज—रे जीवां।

इन्द्र मेटी न हिंसा समुद्र (द्वीप) री,

अचिन वस्तु री देई साज—रे० मो० ॥१॥

ज्याँने द्वेष घणो करुणा तणो,
उदय आयो मिथ्यात रो पाप—रे जीवा।
तेथी अनुकंपा मे पाप छे,
एवी (कोई) मद करे छे थाप—रे० मो० ॥२॥
त्याँने ज्ञानी कहे समझायवा,
इन्द्र जे-जे न करे काम—रे जीवा।
तिण मे पाप कहो तो विचार लो,
केइ काम रा लेऊँ नाम —रे० मो० ॥३॥
श्रीकृष्ण नरेश्वर महामती,
जाँण पडहो दीनो फिराय—रे जीवा।
जो दीक्षा लेवो श्री नेम पे,
मे पिछला री करूँ सहाय—रे० मो० ॥४॥
सहस्र-पुरुष संयम लियो,
यो परतख महा-उपकार—रजीवा।
पिण इन्द्र पडहो फेर्‌यो नहीं,
तिणरो बुधवन्त करो विचार—रे० मो०॥५॥
जो इन्द्र काम कियो नहीं,
तिणसूँ कृष्णने कहे (कोई) पाप—रजीवा।

ते जिन धर्म रा अजाण छे,

खोटा हेतु री करे थाप—रे० मो० ॥६॥

सेणिक पड़हो फेराविथो,

साधु ने देवो स्थान—रे जीवां।

वलि जीवहिंसा करो मतो,

सप्तम अङ्ग में धरो ध्यान—रे० मो० ॥७॥

यो काम इन्द्र कीधो नहीं,

सेणिक कीधो धर ध्यान—रे जीवां।

ते तो साँचो समदृष्टि हुँतो,

तुम धारो हिरदे ज्ञान—रे० मो० ॥८॥

श्रेणिक इम न विचारियो,

यो इन्द्र कह्यो नहीं काम—रेजीवां।

मुझ ने धर्म होसीके नहीं,

एवो शंका न आणो तास—रे० मो० ॥९॥

तो पिण (कुमति) इन्द्र रो नाम ले,

अनुकम्पा में नाखे भर्म—रेजीवां।

पिण इन्द्र ज्ञान में देखे इम करे,

अनुकम्पा तो आछो धर्म—रे० मो० ॥१०॥

सावद्य ने निरवद्य वली,
अनुकपा रा भेद दोय—रे जीवा।
इन्द्र कया नहिं तुम भणो,
थे भाखो करो निर्गुण होय—रे० मो०॥११॥
तव तो झटके बोल दे,
म्हारे इन्द्र सूं काई काम—रे जीवा।
म्हे सूत्र से करॉ परूपणा,
म्हारा गुरॉ रो राखॉ नाम—रे० मो० ॥१२॥
तो समझो रे समझो जरा,
अनुकम्पा न सावद्य होय—रेजीवा।
सूत्र में न भाख्यो केवली,
वलि इन्द्र कह्यो नहिं तोय—रे० मो० ॥१३॥
अणहुँती वात उठायने,
मत करो अनुकम्पा री घात—रेजीवा।
इन्द्र रो नाम लेई-लेई,
मत कर्म बॉधो साक्षात—रे० मो० ॥१४॥

८—अधिकार कोणिक-चेडाका संग्राम मिटाने में पाप कहते हैं, इसका उत्तर।

केइक कुमती इम कहे,
संग्राम छुड़ाया पाप—रेजीवां।
पहली पिण नहि वर्जणा,
युद्ध होता जाणी साफ—रे० मो० ॥१॥
*चेड़ो कोणिक री साख दे,
भोलाँ ने सिखावे वाद—रेजीवां।
"वीर अनुकम्पा आणी नहीं,
(पोते) न गया न मेल्या साध—रे० मो० ॥२॥

---

* जैसा कि वे कहते हैं:

चेड़ा ने कोणिक नी वारता,
निरयावलिका भगवती साख रे।
मानव मुआ दोय संग्राम में,
एक क्रोड़ ने अस्सी लाख—रेजीवाँ ॥ ३६ ॥
भगवंत अनुकम्पा आणी नहो,
पोते न गया न मेल्या साधरे।
याँने पहिला पिण वर्ज्या नहो,

याने पेहला पिण बर्ज्या नहीं,

जाणता था सग्राम में घात—रजीवा।

युद्ध मिटाया पाप छै,

तेथी कही न मेटण बात"—रे० मो० ॥३॥

(उत्तर) भोला भरमावण तणो,

यो ता परतख मॉड्यो फन्द—रजीवा।

ज्ञानी पूछै तेहने,

तब मुखडो हो जाय बन्द—र० मो० ॥४॥

जा युद्ध मेटण वीर ना गया,

ते तो जीवाँ री जाणो विराध—रेजीवा ॥ ४० ॥

एमा अनुकम्पा जाणता,

तो बीर विचाले जायरे।

सगलाँ ने साता उपजावता

यह तो थोडे मे देता मिटाय—रेजीवाँ ॥ ४१ ॥

कोणक भक्त भगवान रो

चेडो बारह व्रत धार रे

इन्द्र भीड आयो ते समकिता

ते किण विध लोपता कार—रेजीवाँ ॥ ४२ ॥

(अनुकम्पा ढाल—७)

तेथी रण मेटण में पाप—रेजीवां
तो हिंसा मेटण वीर ना गया,
तेथी हिंसा मेटण में पाप ?—रे० मो०॥५॥
तब तो बोले उतावला,
हिंसा मेट्याँ तो होवे धर्म—रेजीवां।
(तो) वीर मेटण किम ना गया,
महा हिंसा रा घोर कर्म—रे० मो० ॥६॥
चवदे पूर्व चार ज्ञान ना,
गोतमादिक लब्धी धार—रे जीवां।
याँने हिंसा मेटण मेल्या नहीं,
कोई कारण कहो निरधार—रे० मो० ॥७॥
कोणिक भक्तो वीर नो,
चेड़ो बारा-व्रत नो धार—रेजीवां।
(याँने) उपदेश देना वीर जाय ने,
दोनों हिंसा देता टार—रे० मो० ॥८॥
तब तो बोले पाथरा,
"होणहार न मेटी जाय—रेजीवां।
(केवल) ज्ञान में देख्या थी ना गया,

बलि साधु न मेल्या साथ"—रे० मो० ॥९॥
तो इमहिज समजो भाव थी,
सग्राम मेटण मे धर्म र जोय ।
न्याय रीत समझाविया,
शान्ति हुए न धन्धे कर्म—रे० मो० ॥१०॥
सब जीव खेमकर वीरजी,
"सुगडायँग" माँय देख --रे जीवा ।
भय मेटे सब जीव रा,
अभयकर चिन्द विशेस—रे० मो० ॥११॥
भगवन्त विचर देश मे,
सो-सो कोसाँ रे माँय—रे जीवा ।
मनुष्याँ र उपद्रव ना रहे,
पिण होणी तो मिटे नाँय र० मो० ॥१२
तिन चेडा-कोणिम सग्राम मे,
न्याय मिटाया मोटो-धर्म रे जीवा ।
मिटतो न देख्यो ज्ञान में,
प्रभु ना गया समझो मर्म—रे० मो० ॥१३॥
अनुकम्पा उठायवा,

जिम 'जीरण' भाई भावना,
वीर रो नहिं मिलियो जोग—रे जीवां।
तिरियो निर्मल भाव थी,
व्यवहारे रयो वियोग—रे० मो० ॥८॥
तिम मरता पुरुष देखने,
करुणा उपजो मन माँय—रे जीवां।
स्वरूप जाण संसार नो,
समुद्रपाल नी धूजो काय—रे० मो० ॥९॥
चोर अपराधो राय नो,
ते राख्यो कहो किम जाय—रे जीवां।
व्यवहार नहीं यह जगत नो,
राखण री शक्ति नाय—रे० मो० ॥१०॥
तेहथी छोड़ाई ना सक्या,
पिण छोड्यो संसार—रे जीवां।
भावाँ करुणा आदरी,
तेथी पाया भव नो पार—रे ०मो० ॥११॥
समुद्रपाल नो नाम ले,
करुणा उठावण काज—रे जीवां।

ते वैरी अनुकम्पा तणा

झूठ बोलण रा नहिं लाज—र० मो० ॥१२॥

भवजीव हिरदा मे धारजो,

निश्चय करुणा रा भाव—रे जीवा।

शक्ति सारू सफलो करे,

जब मिले व्यवहार रो दाव—र० मो० ॥१३॥

साधु श्रावक दोनों तणा,

करुणा रा भाव सुहाय—र० जीवा।

परवरती जुई-जुई,

तुमे जुवो सूत्र रो न्याय—र० मो० ॥१४॥

जिनकल्पी थीवर कल्पीनो,

प्रवृति एक न होय—रे जीवा।

एक करया प्राछित हुवे,

दूजे नहि करवा थी जाय—र० मो० ॥१५॥

तिम श्रावक साधू तणी,

भिन्न भिन्न छे मर्याद—र जीवा।

गेही (गृहस्थ) न करे पापी हुवे,

ते ही करवो न कल्पे साध—र० मो० ॥१६॥

भूखा राखे भोजन ना दिये,

श्रावक होवे दया हीण—रे जीवां।

साधु आहार न देवे गृहस्थ ने,

ते तो कल्प राखण परवीण—रे० मो०॥१७॥

"साधु-श्रावक दोनों तणी,

अनुकम्पा प्रकृति एक"—रे जीवां।

एवो (केई) करे प्ररूपणा,

उत्तर पूछ्याँ पलटता देख—रे० मो०॥१८॥

साधु उपधि में उलझिया,

उंदरादिक जीव जाण— रे जीवां।

(साधु) अनुकम्पा आणी ने छोड़ दे,

नहिं छोड्या थी होवे हाण—रे०मो०॥१९॥

गेही (गृहस्थ) रे रस्सीमें उलझिया

गायादिक प्राणी जाण—रे जीवां।

गेही दयासे छोड़ दे,

नहिं छोड्यां थी होवे हाण—रे० मो०॥२०॥

धर्म बतावे साधने,

गेहीने बतावे पाप—रे जीवां।

फर्क पड्यो किण कारणे
खोटी श्रद्धा दीखे साफ—रे० मो० ॥२१॥
"साधु श्रावक री एक रीत छे"
मू ढा थी बोलो एम—रे जीवा।
दोनो सरीखा काममे
तुमे फर्क बतावो केम—रे० मो० ॥२२॥
जीव मर साधु योग थी,
गृहस्थ बताया धर्म—रे जीवा।
गेही गेही ने जीव बताय दे
तिणमें तो बतावो अधर्म—रे० मो० ॥२३॥
जीव बच्या दोनो जगा
दोनों रा टलिया पाप—रे जीवा।
इन दोनो सरिखा काममें
उलट पलट करे खोटी थाप—रे० मो०॥२४॥
धर्म बतावे एकमे
दूजामें केवे पाप—रे जीवा।
यो कुटिल-पन्थ कुगुरा तणो
खोटी श्रद्धा दीखे साफ—रे० मो० ॥२५॥

कुगुरु कपट ओलखायवा
जोड़ करी शुद्ध न्याय—रे जीवां ।
ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दशी
उगणीशे छियासी मांय—रे० मो० ॥२८॥

॥ तीसरी ढाल समाप्तम् ॥

दोहा

दुखिया देखी तावड़े, जो कोई मेले छाय ।
पाप बतावे तेहने, मन्दमती री वाय ॥१॥
हणे हणावे भल जाणवे, तीनों करना पाप ।
तिम रक्षा मांहीं कहे, (या) खोटी श्रद्धा साफ ॥२॥
कर्म उदे थी जीवड़ा, तीव्र वेदना पाय ।
आरत-रुद्र ध्यान थी, माठां कर्म बंधाय ॥३॥

कर्म बन्ध टालन तणो, ज्ञानी कर उपाय ।
उपदेशो अरु साज थी देवे कष्ट छुटाय ॥४॥
साधु कल्प थी साधजी, गृहस्थ कल्प थी गृस्थ ।
तीव्र आरत मिटाय ने, सन्तोषी करे स्वस्थ ॥५॥
दु ख मेटण मे मन्दमति, पापबन्ध बतलाय ।
असजती री नाम ले, खोटा चोज लगाय ॥६॥
मारणवालो असजती, असजती मारथा जाय।
एक देवे महावेदना, एक (महा) दुखे घबराय ॥७॥
आरत रुद्र ध्यान थी, दोनों बांधे पाप । –
पाप टलावे वेदना, ते ज्ञानी मन साफ ॥८॥
(कहे) "हिसक पाप छुडाय दा, मरे ते भुगतो कर्म ।
दुख मेटे कोई तेहनो, म्हे नहिं माना धर्म"॥०॥
या श्रद्धा कुगुरु तणी, मिथ्या जाणो साफ ।
मन युक्ती माने नहीं, उदय मोहरो पाप ॥१०॥
जीव बचावा ऊपरे, खोटा देवे न्याय । ।।
(ते)युक्ति थी खण्डन किया,मिथ्या-तम मिट जाय

चौथी ढाल ।

(कहे) "नाड़ो भरियो हो डेंडक माछला,
तिण पर भैंस्यो आयो चलाय हो भविकजन ॥
तिणने हंकाल्या दुःख थी मरे,
नहीं हंकाल्या मरे तसकाय हो भविकजन ॥
करो परिक्षा सत धर्म री ॥१॥

"धर्मी छोड़ावे केहने
कर्म करो दुख पाय हो भविकजन ।
लाय लागी संसारमें,
बीचे पड़िया पाप बंधाय हो" भ० करो० ॥२॥

(उत्तर) इम भोलांने भरमायवा,
खोटा लगाया न्याय हो भ० ।
ज्ञानी कहे हिवे सांभलो,
इण भरमने देवां मिटाय हो भ० करो ॥३॥

भैंस्याने जातां देखने
दयावन्त दया लाय हो भ० ।

॥ मछली मेढ़कवाली तलैया में जातो भैंस ॥

ढाल चौथी गाथा, ४, ५, ६ का भाव चित्र।

भे स्याने जातां देखने, दयावन्त दयालाय हो ॥ भ० ॥
छाछ पाय सतोषियो तिरखा द्विवी मिटाय हो ॥ भ० ॥ ४ ॥
हिंसा न लागी भेस्या भणी, जीवाँरी टल गई घात हो ॥ भ० ॥
दया शान्ति दोयाँ तणी, धमे तणो था यात हो ॥ भ० ॥ ५ ॥
जो पाप बतावो थें एहम, तोपोठोंथारो पक्षपात हो ॥ भ० ॥
(तलाई) नाडा भे सा रो नामले करणारी करस्या घात हो ॥भ०॥६॥

छाछ पाय सन्तोषियो,

तिरखा दिवी मिटाय हो भ० करो० ॥४॥

हिंसा न लागी भेस्या तणी,

जीवा री टलगई घात हो भ० ।

दया शान्ति दोयाँ तणी ,

धर्म तणी या वात हो भ० करा० ॥५॥

जो पाप वतावो थे एह मे,

तो खोटो थारो पक्षपात हो भ० ।

(नलाई) नाडा भे सॉ रो नाम ले,

थे करुणा री कर रया घात हो भ०करो०॥६॥

(कहे) "साधु छाछ पावे नहीं,

तिण थी वतावाँ पाप हो भ० ।

जो इनमे साधु धर्म मानना,

तो झटपट करता आप हो भ० करा० ' ॥७॥

(उत्तर) साधु गेही रा कल्परो,

ज्यॉ र घट मे घार अन्धार हो भ० ।

तेथी साधु रो नाम ले (गृहस्थ री),

दया छुडावे धिकार हो भ० करो०॥८॥

जिन कल्पी आदरता त्यागियो,
थीवरकल्पी ने देणो आहार हो भ० ।
ते परिचय टालण कारणे,
यो कल्पतणो व्यवहार हो भ० करो० ॥९॥
थीवरकल्पी दीक्षा समय,
गृहस्थ ने देणो आहार हो भ० ।
त्याग्यो परिचय टालवा,
यो मुनि रो आचार हो भ० करो० ॥१०॥
तेथी साधु न दे गेही ने,
ते कल्प रो मोटो काम हो भ० ।
गेही देवे पाप छुड़ायवा,
ते कल्पे सुध परिणाम हो भ० करो० ॥११॥
इम सुकिया-ध्यान रो नाम ले,
लटाँ, इल्याँ रो न्याय हो भ० ।
काचा-पाणी ने कन्द रो,
तीम ऊकरड़ी मुख लाय हो भ० करो०॥१२॥
"इल्या लटां सुल्याधानपे
एक बकरी खावण जाय हो ॥भ०॥

॥ च ॥

॥ सुले धान पर जाती बकरी ॥

ढाल चौथी गाथा १३, १४ का भाव चित्र।

"इत्या रह्याँ सुक्याधानपे एक बकरी खावणजायहो ॥ म ॥
दयावंत भुगडा मचायने, लीया क्षोनोंने बचायहो ॥ म० ॥ १३ ॥
हिंसा टली इत्याँ तणी, बकरी रो मिट्यो संताप हो ॥ म० ॥
थाँरी श्रद्धारी धारो, धरम हुयोके पाप हो ॥ म० ॥ १४ ॥

दयावते भ गदा गवायने
लीरा दोनोने वचाय हो ॥भ० करो० ॥१३॥
हिंसा टली इल्यानणी
वकरी रो मिट्यो सताप हो ॥भ०॥ करो०॥
थाँरी श्रद्धा थी कहो
धरम हुवोके पाप हो ॥भ० करो० १४॥
स्याडामें पाणी थोडको
जीव घणा तिणमाय हो ॥भ०करो०॥
मरिया देडक माछला
पाणी विरग आईगार हो ॥भ०करो०॥१५॥
कन्गायते धोवन धानका
गायने दीदोपाय हो ॥भ०॥
पाप टलया दोनातणी
इनमें धरम हुवोके नाय ॥भ० करो० ॥१६॥
चूहा ने विल्ली तणा,
मारी मारग चित्राम हो भ० ।
दया कारण कुगुरु किया,
खोटा जारा परिणाम हो भ० क० ॥१७॥

"चूहा मारण बिल्ली चली

दयावन्त दया लाय हो ॥भ०॥

रक्षाकरी चूवातणी

पयमिनकीने दीनोपाय हो ॥भ०॥१८॥

प्राण वच्या चूवातणा

मिन्नी रो मिटायो पाप हो ॥भ०॥

थारी श्रद्धासे कहो

धरम हुवोके पाप हो ॥भ०॥१९॥

(उत्तर) ज्ञानी पुरुष हुआ घणा,

सूत्र रच्या तंतसार हो भ० ।

जीव रक्षा रे कारणे,

देखो "संवरद्वार" हो भ० करो०॥२०॥

जिण न्याय हेतु दृष्टान्त थी,

कोमल हूवे चित्त हो भ० ।

दया अनुकम्पा ऊपजे,

॥ ड ॥

॥ जल जतु रक्षा ॥

ढाल चौथी गाथा १५, १६ का भाव चित्र।
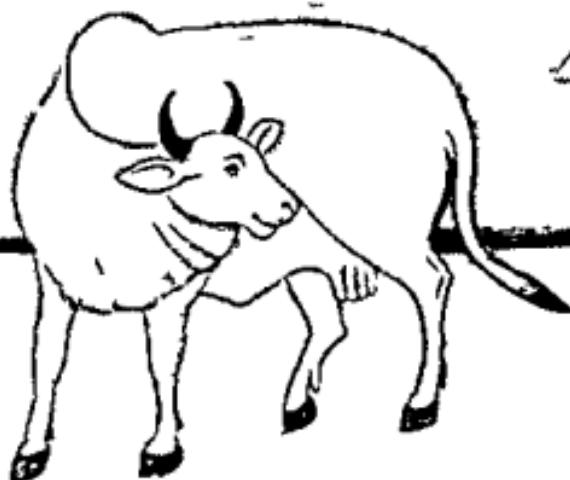
खाडा में पाणी थोडको, जीव घणा तिण माय हो ॥ भ० ॥
भरिया डेंडक माछला पाणी पिवणआईगाय हो ॥ भ० ॥ १५ ॥
करुणावन्ते धोवन धानको, गायने दी दो पाय हो ॥ भ० ॥
पाप टाल्या दोनाँ तणी इनमे धरम हुवो के नाय हो ॥ भ० ॥ १६ ॥

॥ क ॥

॥ चूहो की रक्षा ॥

ढाल चौथी गाथा १८, १९ का भाव चित्र।

"चूहा मारण मिन्नी चली दयावत दयाल्याय हो ॥ म० ॥
रक्षा करी चूहा तणी पगमिनकी ने दोनों पाप हो ॥ म० ॥ १८ ॥
प्राण बच्या चूहा तणा मिन्नी रो मिटायो पाप हो ॥ म० ॥
पोता थदासे कहो धरम हुयो के पाप हो ॥ म० ॥ १९ ॥

ते सत शास्त्र *री रीत हो ॥ भ० करो ॥२१॥
जिण न्याय हेतु दृष्टान्त थी,
दया भाव उठ जाय हो भ० ।
ते कुहेतू जाणजो,
(यो) साचो समझो न्याय हो भ० क० ॥२२॥
अल्प पाप वहु पाप रा,
ज्ञानी बताया काम हो भ० ।
बुधवन्त समझे ज्ञान सू,
ओलखे सुध परिणाम हो भ० करो० ॥२३॥
जे कारज करता थका,
भारी टलजावे पाप हो भ० ।
आपनो परनो बेहु नो,
करमा ने नाखे काप हो भ० करो० ॥२४॥
ज्ञान दर्शन होवे निर्मला,
पाप टालण परिणाम हो भ० ।

---

* जं सुच्चा पडिवज्जंति, तवं खन्तिमहिंसयं ॥
(उ० अ० ३)

अर्थात्-जिसके श्रवण से तप, क्षमा और अहिंसा, इन गुणों की प्राप्ति हो वह सच्चा शास्त्र है ।

(यां) तीनां ने साधु मिल्या,
प्रतिबोध्या हो कर्म बन्ध न होय ॥शु०॥३॥
याँ तीनो ने (मुनि) समझाविया,
तीना रा हो टाल्या महा-पाप।
चोर चोरी छोड्या थका,
धन रह्या हो टल्यो धनि सन्ताप॥शु०॥४॥
हिंसक हिंसा छोड़ दी,
जीव बचिया हो धर्म प्रेमानुराग।
पर-नारी त्यागी तिण पुरुष री,
पड़ी कूवे हो जारणी उणरे राग॥शु०॥५॥
धन, जीव रया नारी मुई,
जां रे काजे हो नहीं दां * उपदेश।

* जैसा कि वे कहते हैं:—

चोर तीनो ही समज्यां थकां,
धन रह्यो हो धनी रा कुशल क्षेम।
हिंसक तीनो हो प्रतिबोधिया,
जीव बचिया हो किया मारण रा नेम॥
भव्य-जीवा तुमे जिन-धर्म ओलखो॥७॥
शील आदरियो तेहन,

चोर हिंसक लम्पट तणा
पाप छोडावा हो मारी श्रद्धा री रेश"॥शु०॥६॥
इसडा कुहेतु केलवे,
जीवरक्षा मे हो बतावे पाप ।
उत्तर इणरो साभलो,
तेथी मिटे हो मिथ्या सन्ताप ॥शु०॥७॥
चोर अदत्त ले पारकों,
ते धन ने हो दुःख-सुख नवीं कोय ।
धन रा धणी ने दुःख ऊपजे,
इष्ट वियोगे हो आरत बहु होय ॥शु०॥८॥
तेथी अदत्त-पाप प्रभु भाखियो,
धनहर ने हो मुनि दे उपदेश ।

स्त्री हो पडी कूवा माँही जाय ।
यारो पाप–धर्म नहिं साधुने,
रह्या मूगा हो तीनों अव्रत मांय ॥भ०॥८॥
धन रो धनी राजी हुवो धन रह्यो,
जीव वचिया ते पिण हर्षित थाय ।
साधु तरण तारण नहीं तेहना,
नारीने हो पिण नहीं डुबोई आय ॥भ०॥६॥
(अनुकम्पा ढाल—५)

पर-धन परना (बाह्य) प्राण छे,
ते हरता हो दुःख पावे विशेष ॥ शु०॥९॥
चोर ने मुनि प्रतिबोध दे,
तिण नर ना हो मोठा टालन पाप ।
धन धणो ने आरत तणों,
पाप दुःख नो हो मेटण सन्ताप ॥शु०॥१०॥
इम पाप छुड़ावे बेहू ना,
बेहू नरना हो वलि टलिया दुःख ।
कर्मबन्ध टल्या मोटका,
दोनाँ रे हो हवो शान्ति नो सुख॥शु०॥११॥
केई साहूकार रा पूत रो,
देवे हेतू हो दया काढ़न काज
"एक ऋण लेवे कोई पारको,
ऋण मेटे हो दूजो धरि लाज ॥शु०॥१२॥
ऋण लेता ने वरज दे,
ऋण-मेटण हो नहिं रोके बाप ।
तिम हिंसक बकरा नित हणे,
करज करता हो बाँधे बहु पाप॥शु०॥१३॥

॥ ॐ ॥

चित्र देखने के लिये है पढ़ने के लिये नहीं।

॥ चोर को चोरी छुडाने से लाभ ॥

ढाल पाचवीं गाथा १०, ११ का भाव चित्र।

"चोर ने मुनि प्रतिबोधदे तिण नरना हो माठा टाल्न पाप ॥
धनधणीने आरत तणो, पापदु खनो हो मेटण संताप ॥शु०॥१०॥
इम पाप छुडावे बेहुना, बेहु नरनाहो वलि टलिया दु ख ॥
कर्म बन्ध टल्या मोटका, दोनाँ रे हो हुवो शान्तिनो सुख ॥शु०॥११॥

बकरा र कर्ज चुके घणो,

ऋण मेटक हो पुत्तर सम जाण।

साधु पिता मम तेह ने,

किम वरजे हो कहो चतुर सुजान॥शु०॥१४॥

हिंसक ने वरजे सही,

करम ऋण रो हो क्यों बांधे तू भार।"

इम भोला ने भरमायवा,

रच दीनी हो कूडी-कूड़ो*ढार॥शु०॥१५॥

कहे ज्ञानी तुमे कुहेतु थी,

मिथ्यापख नी हो कीनी या थाप।

बकरो दुःख थी तड़फडे,

दुःख पावे हो तेने अति सन्ताप॥शु०॥१६॥

शान्ति भाव उणरे नहीं,

तीव्र आरत हो ध्यावे रुद्र ध्यान।

---

* जैसा कि वे कहते हैं —

जे बकरा रो जीवणु,

वाछे नहीं निगार।

तिण ऊपर दृष्टान्त ते,

तेथी हल्का करम भारी हुवे,
मन्द-रस ना हो तीव्र-रस पहिचान॥शु०॥१७॥
अल्पस्थिति महास्थिति करे,
पाप भोगतां हो बांधे माठा कर्म ।
एवी करकश-वेदनी वेदता,
अरड़ावे हो ज्ञानी जाणे मर्म ॥शु०॥१८॥

सांभलजो सुखकार ॥ ६ ॥
साहुकार रे दोय सुत
एक कपूत अवधार ।
ऋण करड़ी जागा तणुं,
माथे करे अपार ॥ ७ ॥
दूजो सुत जग दीपतो,
यश संसार मझार ।
करड़ी जागाँ रो करज,
उतारे तिण वार ॥ ८ ॥
कहो केहने वरजे पिता
दोय पुत्र में देख ।
जे कर्ज करे तसु,
के ऋण-मेटत पेख ॥ ९ ॥

॥ ढाल ३२ मीं ॥
समता रस विरला ए देशी)

एवा कर्मवन्त ना काम मे,
कर्म-ऋूटण हो लेवे मिथ्या नाम।
न्याय अन्याय तोले नही,
परतख दीसे हो माठा परिणाम ॥१९॥
मो यकरा कमाई हणता थका,
मुनिवरजी हो तिहां दे उपदेश।

पन साथ सुत अधिक करता।
गार गार पिना वरजतोरे, समकू नर विरला ॥
करडा नार्गां रा माथे काय काने,
प्रत्यक्ष दुख पामीजे रे॥ मम० ॥ १ ॥
अधिक माथा रो यर्ज उताय,
जनक नाम नहिं धारे रे॥
पिता ममान माधु पिछाणो,
यकरों रजपूत वे सूत माणो रे॥ सम० ॥ २ ॥
धम्म रूप ऋण माथे वुण धरतो,
आगला धम्म वुण अपहरतो रे॥ मम० ॥
धम्म ऋण रजपूत माथे धरे छे,
यकरा मजिन-धम्म भोगवे छे रे॥ ३ ॥
माधु रजपूत ने यचे सुहाय,
धम्म यरज धरे धाय र॥ मम० ॥

ते घात टालण बकरा तणी,

कसाई रा हो मेटण पाप कलेश ॥२०॥

करकश वेदना ऊपज्यां,

बकरा ध्यावे हो महा आरत ध्यान।

वलि रुद्र-ध्यान पिण ऊपजे,

"ठाणाअँग" (में) हो जोवो धरध्यान॥२१॥

पूर्व कर्म दोनों भोगवे,

नवा बांधे हो दोनों वैराणुबन्ध ।

मुनि उपकारी बेहूना,

उपदेशे हो टाले बेहूना द्वन्द्व ॥२२॥

(कहे) "हिंसक पाप छुड़ायवा,

में तो देवाँ हो धर्म रो उपदेश ।

कर्म्म बंध्या घणा गोता खासी,

पर-भव मे दुख पासी रे ॥ ४ ॥

सरवर पणे तिण ने समझायो,

तिणरो तिरणो वंछ्यो मुनिरायो रे ॥ सम० ॥

बकरा जीवण नही दे उपदेश,

रूड़ो ओलख बुद्धिवन्त रेस रे॥ ५ ॥

(भिक्षुजश रसायण)

मुनी का कसाई को उपदेश देने से लाभ।

चित्र देखने के लिए है वंदने के लिए नहीं।

ढाल पाचवी गाथा २०, २१ का भाव चित्र।

सो बकरा कसाई हनता थका,
मुनिवरजी हो तिहाँ दे उपदेश॥

ते घात टालण बकरा तणी,
कसाईरा हो मेटण पाप क्लेश॥ २०॥

करकश वेदना ऊपज्याँ,
बकरा ध्यावे हो महा आरत ध्यान॥

वलि रुद्र ध्यान पिण ऊपजे,
"ठाणा अंग" (में) हो जोवो धर ध्यान॥२१॥

बकरे
कसाई
मुनि

बकरा, धन एक सारखा,
तिणरे कारण हो नहि दा उपदेश" ॥२३॥
(उत्तर) एवी करे केई थापणा,
विकल हुआ हो अनुकम्पा रे द्वेष।
पाणानुकम्पा प्रभु कही,
नहीं पैसा नी हो(अनुकम्पा)जरा समझो रस॥२४॥
(धन धणी) धनिक री अनुकम्पा होवे,
प्राणधणी हो बकरा री पिछाण।
पैसा ने दुख सुख नहीं,
किम होवे हो दया चतुर सुजाण ॥२५॥
आरत-रूद्र बकरा तणो,
मुनि मेटण हो देवे उपदेश।
पैसा रे ध्यान लेश्या नहीं,
सुख-दुख रो हो नहि तिणरे क्लेश ॥२६॥
प्राणी अनुकम्पा मुनि कर,
जड धन मे हो नहि करुणा रो लेश।
जो जीव जड एकसा गिणे,
निर्दयता हो जारा घट मे विशेष ॥शु०॥२७॥

हिंसक पाप सेंटण कह्यो;
बकरा रो हो मेट्यां कह्यो दोष ।
चूक पड़ी इण में किसी,
थारो दीखे हो बकरा पर रोष ॥शु०॥२८॥
इम पाप छुटा बेहू तणा,
बेहू जीव ना हो वलि टलिया दुःख ।
कर्मबन्धन टल्या मोटका,
दोनाँ रे, हो हुवो शान्ति नो सुख ॥२९॥
कदा खोटी परख खांचो कहो,
"मरता (जीव) काजे हो नहिं द्यां उपदेश
तिणरे निज्जरा होतो बन्द हुवे,
म्हारी सरधारी हो या ऊंडी रेस" ॥३०॥
(उत्तर) इण लेखे तो हिंसक भणी,
उपदेश देणो हो थांरे पाप रे मांय ।
हिंसा छोड़्यां बकरो बचे,
तदा निज्जरा हो होती रुक जाय ॥३१॥
इम अटके श्रद्धा थाहरी,
खोटो मांडो हो तुमे माया जाल ।

इण मिथ्या-पख ने छोड दो ,
मत्-श्रद्धा रो हो मन आणो ख्याल ॥३२॥
निज्जरा भर्म मिटायवा,
एक हेतू हो सुनो चतुर सुजाण ।
मास-खमण रे पारणे,
गोचरी आया हो मुनिजो गुणखाण ॥३३॥
कोई मूरख मन मे चिन्तवे,
आहार वेराया हो निज्जरा वन्द होय ।
नहि वेरायां निज्जरा घणी,
तप ववसी हो मुनिने गुण जोय ॥शु०॥३४॥
जिण सुपात्रदान न ओलख्यो,
ते मूढ-मति हो एवो कर विचार ।
मुनि जाचे छे आहार ने,
देवगवाला ने हो हुवे लाभ अपार॥शु०॥३५॥
कदा आहार मुनि ने मिले नहीं,
समभावे हो निज्जरा बहु होय ।
त्याने पिण आहार आपता,
दाता रे हो धर्म रो फल जोय ॥शु०॥३६॥

मुनि दान मांगे दाता दिये,
दोनां रे हो धर्म रो फल होय।
अन्तरा नहिं निज्जरा तणी,
थोई न्याय हो वकरा रो जोय ॥शु०॥३७॥
वकरो चावे निज प्राण ने,
मरण-भय थी हो छोड़ावे (मुझ) कोय।
जो छोड़ावे अभयदानी कह्यो,
दाता रे हो फल मोटको होय ॥शु०॥३८॥
(जिम) भयभ्रान्त हुवो राय संजती,
ते जांचे हो मुनि थी कर जोड़।
अभयदान दो मुझ भणी,
मृगमारण हो अपराध थी छोड़ ॥शु०॥३९॥
तव ध्यान खोल मुनिराय जी,
अभय (दान) दीनोहो भय मेटण जोय।
तिम मरता (जीव) भय पामता,
ते निर्भय हो अभयदान थी होय॥शु०॥४०॥
तिण अभयदान ने पाप में,
जे थापे हो ते मूढ़ गिवांर।

॥ संयती राजा और मुनी ॥

चित्र देखने के लिए है वंदने के लिए नहीं ।

ढाल पांचवों गाथा ३६, ४० का भाव चित्र ।

(जिम) भय भ्रान्त हुवो राय संजती,
तेजाँचे हो मुनि थी कर जोड़

अभय दान दो मुझभणी
मृगमारण हो अपराध थी छोड़ ॥शु०॥३६॥

तव ध्यान खोल मुनिरायजी,
अभय (दान) दीनो हो भय मेटण जोय ॥

तिम मरता (जीव) भय पामता,
ते निर्भय हो अभयदान थी होय ॥शु०॥४०॥

गद्दभालिमुनि
संयतिराजा
घोडा
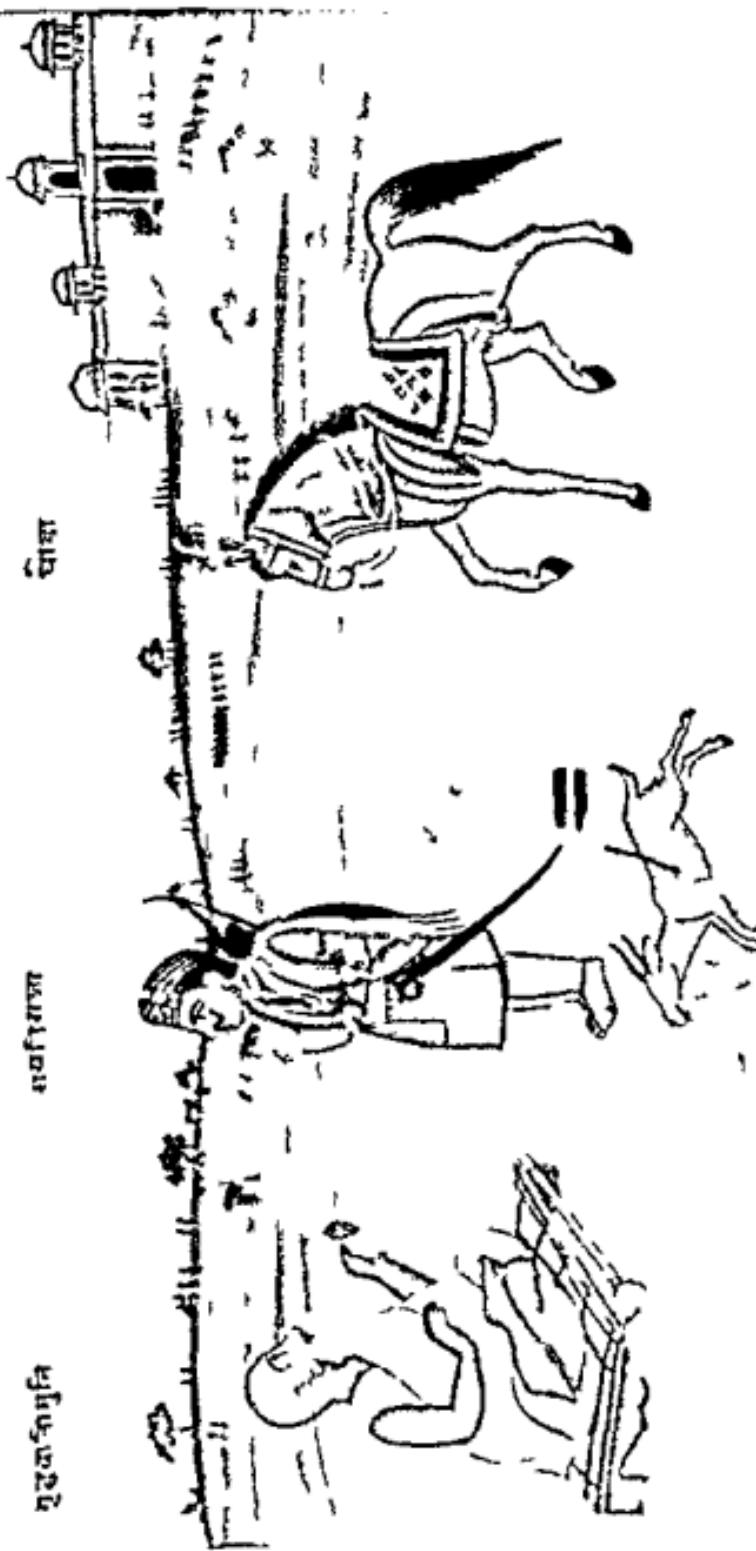
भय मेट्या अभयदान छे,
समदृष्टि हो लेवे हिरदामें धार ॥शु०॥४१॥
(पिण) समभाव वकरो र नहीं,
तिणर निज्जराहो कहो किणविर होय ।
आर्त्त-रुद्र परिणाम थी,
माठा पाप रो हो बन्ध कर रयो मोय॥४२॥
तेथी तिणने बचाया गुण होवे,
निज्जरा री हो अन्तराय न कोय ।
भय मिटियो, गुण नीपज्यो,
मेटणहारो हो अभयदाणी होय ॥४३॥
वलि सयन्हेतु एक साभलो,
तिन वाण्या री हो चाली सूतरमे यात ।
एक लाभ लेई घर आवियो,
बीजो लायो हो धनमूलज साथ॥शु०॥४४॥
तीजे मूल गमावियो,
ई दृष्टान्ते हो जाणो दया री काम ।
एक जीव बचावा उपदेशे,
लाभ पहलो हो होवे शुध परिणाम ॥४५॥

मौन रहे बोले नहो,
मूल-पूंजो रो हो ते राखणहार ।
मार कहे तोजो पापियो,
मूल पूंजो रो हो ते तो खोवणहार ।शु०॥४६॥
केई कुतरकी इम कहे;
जीव बचिया हो वधे पाप री वेल ।
खोटा न्याय बहुविधि कथे,
तुमे सुणजो हो खोटी सरधारो खेल॥४७॥
(कहे) 'परस्त्री-पापी एक पुरुष ना,
उपदेशे हो मुनि मेट्या पाप ।
पर-नारी जाई कूवे पड़ी,
तिणरो मुनिने हो नहिं पाप-सन्ताप ॥४८॥
बकरा बच्या नारी मुई,
में तो समझां हो दोनों एक समान ।
बकरा बच्या दया नहो,
नारो मुआ हो नहिं हिंसा स्थान॥शु०॥४९॥
बकरा बच्या धर्म सरधसी,
तिणरी सरधामें हो नारी मुआ रो पाप ।'

एवा कुहेतू केलवी,
भोला आगे हो करे मत री थाप ॥शु०॥५०॥
(उत्तर) हिवे ज्ञानी कहे भवि सांभलो,
बचियो-मरिया री हो सरखो नहीं बात।
बकरा री रक्षा कारणे,
उपदेशे हो मुनिजी साक्षात ॥शुद्ध०॥५१॥
नारी मारण (मुनि) कामी नहीं,
मारण में हो नहीं पर-उपकार।
आत्मघात करे (कोई) पापिणी,
महा मोहवश हो मरे ते नार ॥शु०॥५२॥
त्याग हेते स्त्री मरे नहीं,
मोह कारण हो वा मरे मत-हीण।
तिणरी पिण घात छुडायवा,
उपदेशे हो मुनि धर्म प्रवीण ॥शुद्ध॥५३॥
सुण उपदेश (कदा) बच गई,
तेथी टलिया हो महा-मोहनीकर्म
आत्महत्या टल गई,
गुण निपज्यो हो यो धर्म रो मर्म॥शु०॥५४॥

बकरो नारी बचिया थका,

गुण निपजे हो टले पाप विकार।

स्वघाते गुण नहिं नीपजे,

सुधमत थी हो करो जरा विचार ॥५५॥

मरणो बचावणो एक है,

एनो जाणो हो विकलां रा वेण।

जारे भान नहीं धर्म-पाप रो,

जारा फूटा हो हिया रा नेण ॥शुद्ध०॥५६॥

मुनि उपकारी बेहूना,

बेहू जण ना हो मेट्या माठा कर्म।

जो श्रद्धा पामे ते बेहू,

तो पामे हो संवरनो-धर्म ॥शुद्ध०॥५७॥

आरत-रुद्र टले बेहुना,

श्रद्धा योगे हो धर्म-ध्यानो होय।

इम तिरण-तारण मुनि बेहुना,

उपकारी हो मुनि बेहूना जोय ॥शु०॥५८॥

कदि कर्म-उदय बेहू जणा,

संवर श्रद्धा हो पामें नहिं दोय।

चित्र देखने के लिये है वन्दना के लिये नहीं।

॥ व्यभिचारनो स्त्रीको उपदेश ॥

ढाल पाचवीं गाथा ५४ का भाव चित्र।

"सुण उपदेश कदा चल गई तेथीटलीयाहो महामोहनी कर्म ॥
आतम-हत्या टल गई, गुण निपज्योहो यो धम रो मर्म ॥ ५४ ॥

तो भारी पाप वेहू ना टले,
आरत पिण हो हलको बहु होय ॥७०॥
(कदा) उपदेश वेहू मानें नहीं,
(तो पिण) साधु र हो उपदेश रो धर्म।
(कदा) एक माने एक मानें नहीं,
जो माने हो तिणरा टलिया कर्म॥शु०॥८०॥
किणरी शक्ति नहीं समझण तणो,
तिणरो पिण हो मुनि वछ्यो हित।
तेथी वच्छल छह-काया तणा,
परतख प्रोक्षे हो हितकारी चित॥शु०॥८१॥
"सरदह तलाव" फोडन तणा,
त्याग कराया हो मुनि मेट्या कर्म।
सरदह तलाव जीवा तणो,
दुख टलियो हो जिन भाख्यो धर्म ॥८२॥
नीम्ब आम्रादिक वृक्ष ना,
कराया हो मुनि काटण नेम।
ते हितकारी वेहू तणा,
तरुवरने हो मुनि कीनों खेम ॥शु०॥८३॥

उपकार समझ शक्ती नहीं,

विकलेन्द्री हो जीवां री जाण।

मुनि जाणे तस वेदना,

उपदेशे हो हितकारी वखाण ॥शुद्ध०॥६४॥

दव देई गांव जलावता,

उपदेशे हो कराया नेम।

ते दाहक ग्राम येहू तणो,

पाप टाली हो उपजावो क्षेम ॥शुद्ध०॥६५॥

इम मांसादि खावा तणा,

सुस करावे हो मेटण तस पाप।

वलि मांसे मरता जीव रा,

हितकारी हो मुनि मेटे सन्ताप ।।शुद्ध॥६६॥

सूत्र भगोती शतक सातमें,

इम भाख्यो हो श्री दीनदयाल।

निर्दोषण मुनि भोगवे,

छकाया नो हो वांछक करुणाल ॥शु०॥६७॥

जाँ जोवां रा शरीर रो आहार ले,

त्यां जीवा ना मुनि वंछक होय।

(तिम) हिंसा छूट्या बच्या जीवड़ा,
उपकारी हो मुनि रक्षक जोय ॥शुद्ध०॥६८॥
जीव मारण में हिंसा कही,
नहीं मारे हो दया रा परिणाम ।
मरता जीव बचाविया
मनसा वाचा हो दया रो काम ॥शुद्ध०॥६९॥
* केइक इणमें इम कहे,
"जीवाँ काजे हो नहिं द्याँ उपदेश ।
एक हिंसक समझायने,
नहिं मेटाँ हो घणा जीवा रा क्लेश" ॥७०॥

---

* जैसा कि वे कहते हैं —
केइक अज्ञानी इमि कहे,
छ काया काजे हो देवा धर्म उपदेश ।
एकण जीव ने समझाविया,
मिट जावे हो घणा जीवा रा क्लेश ॥
भव्य जावा तुमे जिन धर्म ओलखो ॥१६॥
छ काय घरे शान्ति हुवे,
एहवो भाखे हो अन्य-तीर्थी धर्म ।
त्या भेद न पायो जिन धर्म रो,
ते तो भूल्या हो उदय आया अशुभ कर्म ॥१७॥
(अनुकम्पा ढाल –५)

सब जीवाँ रे शान्ति होवे,
  इसवो भाखे हो दयाधर्मी धर्म।
कुगुरु तेने पापी कहे,
  (वलि) बतावे हो मिथ्यात रो भर्म ॥७१॥
हिवे सद्गुरु कहे तुम साँभलो,
  सूतर [illegible] रे लेवो जोय।
छः काया रे शान्ति कारणे,
  उपदेशे हो दयाधर्म ते होय ॥शुद्ध०॥७२॥
सुगडाँग श्रुतस्कन्ध दूसरे,
  अध्ययन छठे हो भाख्यो पाठ रे माय।
त्रस थावर (जीव) खेमकर वीरजो,
  धर्म भाखे हो मत हणो तस वाय ॥७३॥
त्रस थावर (रे) शान्ति कारणे,
  करुणा कही हो दशमा-अंग रे माँय।
ये सहु (सूत्र) पाठ उथापने,
  मिथ्यामति हो बोले झूठा वाय ॥शु०॥७४॥
"शान्ति न होवे * छः काय रे"

---

* जैसा कि वे कहते है:—

आगे अरिहन्त अनन्ता हुवा,

एवा अनघड हो घडडावे टोल ।
मिथ्या उदय जे जोवरे,
तेना मुख थी हो एवा निकले बोल ॥७५॥
व्यवहार शान्ति परजीव ने,
निश्चे थी हो निज री ते होय ।
व्यवहार शान्ति उथापता,
निश्चे पिण हो खोय बेठा सोय ॥शु०॥७६॥
आगे जिन अनन्ता हुवा,
छः काया रा हो शान्ति करतार ।
दु:ख मेटण उपदेश थी,
जगवच्छल हो जग ना सुखकार ॥शु०॥७७॥
जगनाथ, जगबन्धू कह्या,
नन्दी सूत्रे हो गाथा प्रथम मॉय ।
सब जीव राखण उपदेश थी,
सुख थापे हो बन्धू पद पाय ॥शुद्ध०॥७८॥

कहता २ हो नहीं आवे त्यारो पार ।
ते आप तरया और तारिया,
छ काया रे हो शान्ति न हुई लिगार ॥२१॥
(अनुकम्पा ढाल— ५)

शान्तिनाथ प्रभु मोलखो,
शान्तिकरता हो सब लोक रे मॉय।
उत्तराध्येन में देखलो,
गणधरजी हो गुण जारा गाय ॥शु०॥७९॥
कही-कही ने कितना कहूँ,
छः काया रे हो शान्तिकरता रा नाम।
जो शान्ति न होती छः काय रे,
शान्तिकरता हो किम होता श्याम॥८०॥
मिथ्या हेतू खण्डवा,
बलि भाखूँ हो सूत्र री साख।
सत्य-स्वरूप ने ओलखो,
भव्य छोड़ो हो मिथ्या रो पाख ॥शु०॥८१॥
चउनाणी श्रुत केवली,
जगतारक हो केसी गुरुराय।
सितंबका रा वाग में,
धर्मदेशना हो दीनी सुखदाय ॥शु०॥८२॥
चित श्रावक सुण हर्षियो,
करे वीनती हो सुनिजे गुरुराय।

परदेशी अति पापियो,
पाप करने हो अति हर्षित थाय ॥शु०॥८३॥
अधर्मी यो राजवी,
अधर्म नी हो करे निशदिन थाप ।
रुधिर नीर एक समगिणे,
गाढा-गाढा हो स्वामी कर रयो पाप ॥८४॥
यो तो नर पशु पखो ने,
(भिक्षु आदि की) वृत्ति आदी हो छेदो हर्षाय।
विनय भाव तिणमे नहीं,
तेथी गुरुजन (मात पिता आदि)
हो आदर नहि पाय ॥ शुद्ध० ॥८५॥
देश दु खो इण राय थी,
करडा लेवे हो हासिल दु ख दाय ।
तेने धर्म सुनाविया,
बहु गुणकर हो होसी मुनिराय ॥शु०॥८६॥
गुण होसी परदेशी राय ने,
पशु-पखी हो नर ने गुण थाय ।
श्रमण महाण भीखारी ने,

बहु गुणतर हो होसी सुखदाय ॥शु०॥८७॥
देश रे बहु गुण उपजसी,
होजासी हो करड़ा हाँसिल दूर ।
राय १, जीव २, भिक्षु ३, देश ४ रे,
गुण हेते हो धर्म भाखो सनूर ॥शु०॥८८॥
जीव मारण परिणाम थी,
राजा रे हो माठा लागे पाप ।
(ते) उपदेश थी टल जावसी,
गुण पासो हो परदेशी आप ॥शु०॥८९॥
राय उपद्रव ना कोप थी,
मनुष्यादिक ने उपजे घणा क्लेश ।
तेथी पापकर्म संचो करे,
राजा ऊपर हो घणे उपजे द्वेष ॥९०॥
याँ रो पाप क्लेश मिट जावसी,
राजा ऊपर हो मिट जासी द्वेष ।
(तेथी) जीवाँ ने बहुगुण होवसी,
मुनिसरजी हो थारे उपदेश ॥शु०॥ ९१॥
नृप वृत्तिछेद करड़ी करे,

राजा परदेशी, चित्तप्रधान और केशी श्रमण।

चित्र देखने के लिए है वंदने के लिए नहीं।

ढाल पाचवी गाथा ८६, ६० का भाव चित्र।

"तं जइणं देवाणुप्पिया पदेसिस्सरणो धम्ममाइक्खेज्जा बहु-गुणत्तरं खलु होज्जा पदेसिस्सरणो तेसिणं बहूणय दुपय चउप्पय मिग पसु पक्खि सरीसिवाणं।"

"जीव मारण परिणामथी,
राजारे हो माठा लागे पाप॥

(ते) उपदेशथी टल जावसी,
गुणपासी हो परदेशी आप॥शु०॥८६॥

राय उपद्रव ना कोप थी,
मनुष्यादिक ने उपजे घणा क्लेश॥

तेथी पाप कर्म सचोकरे,
राजा ऊपरहो घणो उपजे द्वेष॥ शु० ॥६०॥

तेथीं बांधे हो मेला पाप कर्म ।
वृत्ति-छेद राय छोडसी,
उपदेशो हो स्वामी निर्मलधर्म ॥शु०।१२॥
वृत्ति-तूटा दुखिया थका,
श्रमणादि हो करे हाय विलाप ।
निशदिन कोपे राय पे,
खोटी लेश्या हो खोटा बाँधे पाप ॥१३॥
ते सगला ही शान्ती पावसी,
मिट जासी हो खोटा परिणाम ।
तेथी महागुण श्रमण-महाण र,
भीखारी र हो होसी गुण रो धाम ॥१४॥
देश दुःखी राजा कियो,
करडा-हॉसिल ही बांधे करडा पाप ।
ते छोड देशी उपदेश थी,
तेथी टलसी हो तेना पाप सन्ताप ॥शु०॥१५॥
देशवासी राजा थकी,
नित्य पावे हो गाढा सन्ताप ।
राजा पर कोपे घणा,

तेथी बन्धे हो घणा गाढ़ा पाप ॥शु॥९६॥

देश कलह मिट जावसी,

टलजासी हो मेला पाप विचार।

देश ने बहुगण निपजसी,

तुमे करो हो स्वामी धर्म्म उच्चार ॥९७॥

चित विनती करी शुध-भाव थी,

शुध श्रद्धा री हो तुमे करो पिछाण।

(यो) व्रतधारी-श्रावक मोटको,

समकित धर हो गुण रत्नाँ री खाण ॥९८॥

जो जीव, भिखारी, देश री,

करुणा में हो नहिं श्रद्धतो धर्म।

(तो) अधर्म अर्ज तिण किम करी,

जिन बचनां रो हो ते तो जाणतो मर्म ॥९९॥

जीव बचावण कारणे,

उपदेशे हो चित श्रद्धतो पाप!

चौनाणी गुरु आगले,

विनती करता हो इणविध ते साफ ॥१००॥

स्वामी ! हिंसा छोड़ावो रायरी,

केशी श्रमण, चित्त प्रधान, परदेशी राजा तथा श्रमण माहण।

चित्र देखने के लिए है वंदने के लिए नहीं।

ढाल पांचवीं गाथा ६२, ६३, ६४ का भाव चित्र।

"तं जइणं देवाणुप्पिया! पदेसिस्सरणो धम्ममाइक्खेज्जा वहुगुणत्तरं फलं होज्जा तेसिणं वहूण' समण माहण भिक्खुयाण'।"

"नृपवृत्ति छेद करड़ी करे,
तेथी वाँधे हो मेला पाप कर्म॥
वृत्ति छेद राय छोड़सी,
उपदेशो हो स्वामी निर्मल धर्म॥शु०॥६२॥
वृत्ति टूटा दुखिया थका,
श्रमणादि हो करे हाय विलाप।
निशिदिन कोपे रायपे,
खोटी लेश्या हो खोटा वाँधे पाप॥शु०॥६३॥
तेसगला ही शान्ती पावसी,
मिटजासी हो खोटा परिणाम॥
तेथी महागुण श्रमण माहणरे,
भोखारी रो हो होसी गुणरो धाम॥शु०॥६४॥

केशी श्रमण
चित्त श्रावक
प्रदेशी राजा
श्रमण – ब्राह्मण

केशी श्रमण, चित्त प्रधान, परदेशी राजा तथा देश।

चित्र देखने के लिए है वंदने के लिए नहीं।

ढाल पांचवी गाथा ६५, ६६, ६७ का भाव चित्र।

"तं जइणं देवाणुप्पिया ! पदेसिस्स वहुगुणत्तरं होत्था सयस्स वियणं जणवयस्स।"

"देशदुखी राजा कियो,
करड़ा हांसिल हो वाँधे करड़ा पाप॥
ते छोड़ देशी उपदेशथी,
तेथी टलसी हो तेना पाप-संताप॥शु०॥६५॥

"देशवासी राजा थकी,
नित्य पावे हो गाढ़ा संताप॥
राजा पर कोपे घणा,
तेथी वंधे हो घणागाढ़ा पाप॥शु०॥६६॥

"देशकलह मिट जावसी,
टल जासी हो मेला पाप विचार॥
देशने वहु गुण निपजसी,
तुमे करो हो स्वामी धर्म उच्चार॥शु०॥६७॥
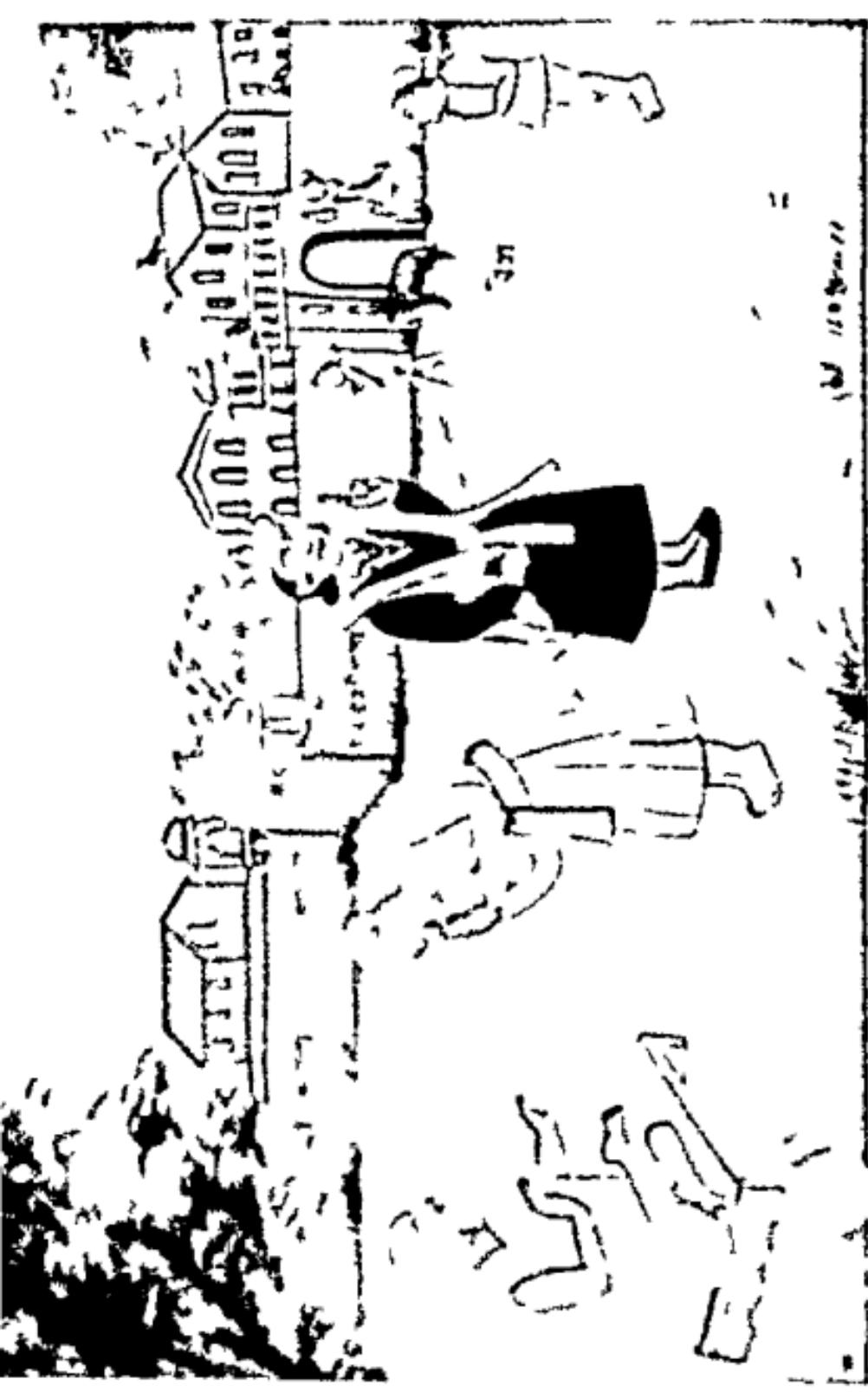
परदेशी हो होसी गुण रो धार।
जीव बचे मरता थकाँ,
त्याँ जीवा रे हो गुण नाहीं लिगार ॥१०१॥
तिम श्रमण, भिखारी देश रे,
गुण श्रद्धया हो स्वामी लागे मिथ्यात।
केवल राय ने तारणो,
या श्रद्धा हो स्वामी परम विख्यात ॥१०२॥
पिण चित इम नहिं भाषियो,
ते तो श्रद्धतो हो जीव बचियामें धर्म।
तेथी विनती करी गुरुराय ने,
(मरता) जीवाँरे हो कह्यो गुण रो मर्म॥१०३॥
जीव बचावे ते पाप में,
या श्रद्धा हो श्रावक री नाय।
जीव बचे त्याने गुण होवे,
या श्रद्धा हो चित री सुखदाय॥गु०॥१०४॥
जीव बचावणो धर्म में,
दुखिया रो हो ते तो जाणतो मर्म।
सगलाँ रे गुण र कारणे,

कीधी विनती हो उपदेशी धर्म ॥१०५॥

जो कसर होती इण कथन में,

केसी सामी हो केना तिणवार ।

जीव, भिखारी, देश रे,

गुण श्रद्धां हो में तो नाहीं लिगार ॥१०६॥

सगलां रे गुण रे कारणे,

विनती कीधी हो समकित गुण जाय ।

थारे श्रद्धा में दूषण ऊपनो,

आलोवो हो जिनधर्म रे न्याय ॥१०७।

पिण चित श्रावक जिम श्रद्धता,

तिम श्रद्धता हो श्री केशी स्वाम ।

दोनां री श्रद्धा एक थी,

तेथी नहिं लीनो हो निषेध रो नाम ॥१०८॥

मुनि, जीव, भिखारी, देश रे,

गुण हेते हो उपदेशो धर्म ।

या श्रद्धा चित शुध जाणता,

विनती कीधो हो जैनधर्म रे मर्म ॥१०९॥

केशी श्रमण गुरुराज री,

चितजो री हो श्रद्धा थो एक।
(तेथी) विनतो मानी भाव थो,
चार बाता रो हो बताग्यो लेख ॥शु०॥११०॥
छोडो रे छोडो मिथ्यात ने,
जीवरक्षा रो हो तुमे श्रद्धो धर्म।
त्यागो कथन कुगुरु तणो,
खोटो घाल्यो हो अनुकम्पा मे भर्म ॥१११॥
कोई पतिव्रता सती तणो,
एक पापी हो खण्डे शील विशेप।
देहत्याग माड्यो सती,
तोहा मुनिजन हो दीनो उपदेश ॥११२॥
प्रबोध पापी पामियो,
सती नार ना हो रह्या शील ने प्राण।
मुनि उपकारी बेहुना,
तुमे समझो हो समझो नि सुजाण ॥११३॥
एक मोनव्रती मुनिराज री,
कोई पापी हो करतो थो घात।
(तिणने) उपदेश देई समझावियो,

रक्षा कीधी हो मुनि नी विख्यात ॥११४॥
जो बकरा बच्या पाप गूढ़सी,
तिणरे लेखे हो मुनि बचिया रो पाप।
जो मुनि बच्या करुणा कहो,
तो बकरो बचिया हो दया-धर्म है साफ॥११७॥
खोटा कुहेतु खण्डणो,
ढाल जोड़ी हो राजलदेसर मांय।
सांचे मन शुद्ध श्रद्धता,
श्रद्धा नो हो निरमल गुण पाय ॥११८॥

इति पञ्चम-ढाल सम्पूर्णम्

दोहा

साधु जीव मारे नहीं, पर ने न कहे मार ।
भलो न जाणे मारिया, त्रिकरण शुद्ध विचार ॥१॥
हणे, हणावे, भल गणे, परजीवा रा प्राण ।
तीन करण हिंसा कही, श्री जिन वचन प्रमाण ॥२॥
बोले, बोलावे, भल कहे, सावद्य कूडा वेण ।
तीनो करणे झूठ हे, खोलो अन्तर नेण ॥३॥
जिम सत बोले साधुजी, पर ने कहे तू बोल ।
भल जाणे सत बोलिया, तीनों करण अमोल ॥४॥
तिम साधु बचावे जीव ने, पर ने कहे बचाय ।
बचिया अनुमोदन करे, त्रिकरण शुद्ध कहाय ॥५॥
(कहे) 'सावज-सत्य न बोलणो, तिम न बचाणो जीव
अनुकम्पा सावज हुवे,'' या कुगुरा री नीव ॥६॥
(उत्तर) सावद्य निरवद्य सूत्रमे, सत्य रा भाख्या भेद
पिण अनुकम्पा रा नहीं, तज दो खोटो खेद ॥७॥
जिण बोले परजीव ने, दुख उपजे सुख नाय ।
ते सत ने सावज कयो, सुगडायग रे माय ॥८॥
पर पीडाकारी नहीं, हितकारी सुखदाय ।

ते सम निश्चय जाणज्यो. जिन शासन रे मांय॥९॥

अनुकम्पा पर-जीव नी. प्राण बचावण काज ।

दुःख तिण थी उपजे नहीं. निश्चय मिटवे पाप ॥१०॥

भय मेट्यो परजीव नो. दान अभय प्रभु गाय ।

तिण में पाप बतावियो, जैनी नाम धराय ॥११॥

अभयदान नहिं ओलख्यो. दीनो दया उठाय

भोला ने भरमावया, कुछ ॰ ॰ ज लगाय ॥१२॥

(कहे) "जीवबचावे मुनि नहीं, पर ने न कहे बचाव

भलो न जाणे बचावियां" इम खोटा खेले दाव ॥१३॥

—※—

ढाल-छठी

(तर्ज—चतुर नर छोड़ो कुगुरु नो संग)

इण साधा रा भेख मे जो,
बोले एहवी वाय
"छकाय रक्षा ना कराजो
जीव बचावा नाय ॥
चतुर नर समझो ज्ञान विचार।॥१॥
एहवी कर परूपणा जो,
पिण बोले बन्ध न होय ।
बदल जाय पूछ्या थका जो,
ते भोला ने खबर न कोय ॥चतुर०॥ २॥
थारे पाणी रे पातर जो,
माखी पड़िया आय ।
दु ख पावे अति तडफडे जो,
जूदा होवे जीव काय ॥चतुर०॥३॥
साधु देखे तिण अवसरे जो,

कहो काढ़े के नांय ?
तव तो कहे "झट काढ़णाजी,
नहिं काढ्यां अनरथ थाय ॥चतुर०॥ ॥४॥
(कदा) मूर्छाणी होवे माखियांजी,
जतना से मूर्छा जाय।
(तो) कपड़ादिक में वांधने जी,
मूर्छा देवां मिटाय" ॥चतुर०॥५॥
प्राणी नांय वचावणाजी,
थें कहता एहवो वाय।
परतख माखा वचावियाजी,
थारी वोली में वन्धन काय ? ॥चतुर०॥ ६॥
कहे "जीव वचायां पाप छे जी,
किंचित नाहीं धर्म"।
तो सौ माखा वचाविया,
थारो शृद्धा रो निकल्यो भर्म ॥चतुर०॥७॥
(इम चिड़िया) सुषादिक थारे पातरेजी,
पड़िया ने काढ़ो वार।
मुख सों कहो न वचावणाजी,
यो कूड़ो थारो व्यवहार ॥चतुर०॥८॥

पृष्ट १७६ क

वीर गोसालो बचावियो जी,
तिण मे बतावो पाप ।
पोते उदिर आदि बचायलो जो
थारो खोटा श्रद्धा साफ ॥चतुर०॥९॥

(जो) पाप कहो भगवान ने जी,
(तो) पोते का छोडो रीति ?
उन्दिर माखा बचाविया (जो)
थारी कूण माने परतीत ॥चतुर०॥१०॥
गोसालाने बचायवा मे,
पाप कहो साक्षात ।
(सो) माखा मरता देखने जो,
क्यों काढो निज हाथ ॥चतुर०॥११॥
इम कह्या जाव न ऊपजे जो,
जब खोटी काढे वाय ।
(कहे) "उपधि हम साधु तणी जो,
जामे जीव कोई मर जाय ॥चतुर०॥१२॥
तो हिंसा लागे साध ने जी,
(ते) टालण बचावा जीव ।
दूजा नाय बचावणा जी,
या मारी श्रद्धा री नीव"॥चतुर०॥१३॥
(उत्तर) (थारी) नेसराय री भूमि मे जी,
(थारा) पाटा रे निकट मे आय ।

(तपसी) श्रावक काउसग्ग कियो जी,
पड़ियो मरगी झोलो खाय ॥चतुर०॥१४॥
(थारा) पाटा रे ऊपर ढह पड्यो जी,
गल भागे जीव जाय।

बीओ नहिं तिहां मानवीजी,
थें बेठो करो के नांय ? ॥चतुर० ॥१५॥
तब तो कहे "म्हें साध छां जी,
(श्रावक) बेठो करां केम।
म्हारे काम के ई गेही से जी"
बोले पाधरा एम ॥चतुर० ॥ १६ ॥
(थारा) पाटा पर श्रावक मरे जी,
तिण ने बचावो नांय।
ऊंदरा-चिड़िया बंचायलोजी,
पड़े जो पातर मांय ॥चतुर० ॥ १७॥
उंदरा चिड़िया बंचायलेजी,
श्रावक उठावे नांय।
देखो (पूरो) अन्धेरो एहने जी,
ए पड़िया भरम रे मांय ॥ चतुर० ॥१८॥

उन्दर चिड़िया बचावना जी,
शके नाही लिगार ।
श्रावक ने वेठो क्रिया मे,
पाप री करे पुकार ॥ चतुर० ॥ १९ ॥
इतरी समज पडे नही,
त्यामे समकित पावे केम
अक्रिया मोह मिथ्यात मे जी,
बोले मतवाला जेम ॥ चतुर० ॥२०॥
(कहे) "साधा ने उन्दर काढणों जी,
पातरादिक थी थार ।
पाटा पर श्रावक मरे जी,
(तो) वेठो न करा लिगार" ॥चतुर०॥२१॥
(उत्तर) श्रावक वेठो ना करोजी,
उँदर काढो जाय।
आ खोटी श्रद्धा तारी जी,
मिले न थारो न्याय ॥ चतुर० ॥२२॥
(या) परतख बात मिले नहीं जी,
तावडा छाहडी जेम ।

न्यायमार्ग ज्यां ओलख्यो जी,
ते विकलां री माने केम ॥चतुर०॥२३॥
(कहे) "पेट दुखे सो श्रावकां जी,
जुदा होवे जीव काय।
(थें) हाथ फेरो पेट ऊपरे जी,
सो श्रावक बच जाय ॥चतुर० ॥२४॥
(जो) जीव बचाया में धर्म छे तो,
साधु ने फेरणो हात।
(जो) हाथ साधु फेरे नहीं,
तो मिथ्या थांरी बात" ॥चतुर०॥२५॥
(उत्तर) साधु कहे हिवे सांभलो जी,
इण कुयुक्ति रो न्याय।
(जो) हाथ फेरया निज जीव बचे,
(तो) निज रो फेर बच जाय ॥चतुर०॥२६॥
हाथ फेरन रो साधु ने जी,
श्रावक केसी केम।
हठवादी समझे नहीं जी,
श्रावक जाणे (धर्म रो) नेम ॥चतुर०॥२७॥

(कहे) "लब्धि आमोसही साधुरजी,
फरस्या दुःख मिट जाय" ।
(उत्तर) तो (वह) चरण मुनि रा फरससी जी,
ततक्षण चोखो थाय ॥ चतुर० ॥ २८ ॥
चरण साधु रा फरसणा जी,
श्रावक रो आचार ।
हाथ फेरण रो कहे नहीं जी,
थे झूठ करो उच्चार ॥ चतुर० ॥ २९ ॥
लब्धि मुनीरी देह मे जी,
जो फरसे मुनि काय ।
(तो) रोग मिटे साता होवे जी,
मुनि ने दोष न थाय ॥ चतुर० ॥ ३० ॥
(जो) चरण फरस दुखडो मिटेजो,
या जिन आज्ञा रे माय ।
तिहाँ हाथ फेरण कारण नहीं जी,
थारा मन ने लो समझाय ॥
(थे झूठी उठाई वाय) ॥ चतुर० ॥ ३१ ॥
कुयुक्तया बहु केलवो जी,

भोलां दो भरमाय।
ज्ञानी न्याय बताय दे जब,
भरम तुरत मिट जाय ॥ चतुर० ॥ ३२ ॥
(कहे) "उंदिर नांय छोड़ावणो जी,
मिन्ना मारण धाय"
एवो कर-कर थापना जी,
भोलो दिया फंसाय ॥ चतुर० ॥ ३३ ॥
(उत्तर) आवश्यक-सूत्र देखलो जी
ध्यान आगारां रे मांय।
उन्दरादिक ने मारवा जी,
बिल्ली झपटो आय ॥ चतुर० ॥ ३४ ॥
आगे सरक बचावतां जी,
काउसग भागे नाय।
(बलि) टीका ने निर्युक्ति में जी,
परगट दियो बताय ॥ चतुर० ॥ ३५ ॥
हजारां वर्षां तणी जी,
निर्युक्ति निरधार।
चवदा सौ वर्षां तणी जी,

(यो) टीका मे विस्तार ॥ चतुर० ॥ ३६ ॥
आचारजआगे हुआ जी,
ज्ञान गुणा रा धार।
उदरादिक बचायवा मे,
पाप न कह्यो लिगार ॥ चतुर० ॥ ३७ ॥
पाट सताविस तुमे कहो जी,
प्रभु आज्ञा रा धार।
तेनी कथी निर्युक्ति मे जो,
यो भाख्यो निरधार ॥ चतुर० ॥ ३८ ॥
ध्यान मे जीव बचावतॉ जी,
काउसग भग न होय।
आवश्यक निर्युक्ति तणो जी,
निरणो लेओ जोय ॥ चतुर० ॥ ३९ ॥
अठारे से सवत पूरवे जी,
जीव बचावन मॉय।
कोई आचारज नही कह्यो जी,
पाप करम बन्धाय ॥ चतुर० ॥ ४० ॥
अपुठो इम भाषियो मिनो,

करे चुवा री घात ।
ध्यान खोल बचावताँ जी,
दोष नहीं तिलमात ॥ चतुर० ॥ ४१ ॥
(कहे) "मूसादिक ने बचायलो जी,
मिनकी ने छुछुकाय ।
श्रावक मरे मुख आगले जी,
तिणने बचावो के नाय" ॥ तुर० ॥४२॥
(उत्तर) मरतो जाण बचाविया जी,
दोष मुनि ने न कोय ।
निशिथ अर्थ में देखलो जी,
भरम हिया रो खोय ॥ चतुर० ॥ ४३ ॥
श्रावक बचाय धर्म छे जी,
साधु भी लेवे बचाय ।
अवसर ठाम-कुठाम नो जी
कल्प रो ध्यान लगाय ॥ चतुर० ॥४४॥
धर्म देशना (देना) धर्म में जी,
पिण देवे कल्पते ठाम ।
(तिम) जीव बचावणों धर्म में पिण,

कर कल्प थी काम ॥ चतुर० ॥४५॥
चिड़ियो मुओ थारा स्थान में जी,
थार अटक्यो सज्झाय रो काम।
परठो के परठो नहीं जी,
तब उत्तर देवे ताम ॥ चतुर० ॥ ४६ ॥
"चिड़ियाँ ने तो परठदाँ जी,
जाणी धर्म रो साथ।"
(तो) कुत्तो मरयो थारा थान में जी,
तेने परठो के नाय ? ॥ चतुर० ॥ ४७ ॥
"साधु बाजाँ म्हे जैन रा जी,
कुत्ता घीसाँ केम ?"
(तो) कुत्ता ने चिड़िया तणो थारे,
रयो न सरखो नेम ॥ चतुर० ॥४८॥
(तिम) जीव बचावा में जाणज्यो जी,
ज्ञान से न्याय विचार।
अवसर अण अवसर तणो जी,
साधु तणो आचार ॥ चतुर० ॥ ५० ॥
(कहे) "गाड़ा हेठे मर जावसी जी,

तुमे साधू लेवो उठाय।
श्रावक मरतो जाण ने जी,
तिण ने उठावो के नाय" ॥ चतुर ॥ ५० ॥
(उत्तर) म्हे तो जीव बचायवा में,
धर्म रो श्रद्धाँ काम।
श्रावक ने लड़का तणो जी,
म्हारे न भेद रो ठाम ॥ चतुर० ॥ ५१ ॥
(कहे) "लट, गजायां, कातरा जी,
ढांढा थी चींथी जाय।
त्याँ ने बचावा तणो मुनि,
क्यों नहिं करे उपाय ॥ चतुर० ॥ ५२ ॥
जो लड़काने बचावसी जी,
मो लटादि लेसी बचाय
(जो) लट गजाई रक्षा न करे जी,
तो लड़को बचावे कायँ" ॥ चतुर० ॥५३॥
(उत्तर) दोनों बचाया धर्म छे जी,
थें झूठा रच्या तोफान।
मिथ्या पंथ चलायवा जी,

भूल गया थे भान ॥ चतुर० ॥ ५४ ॥
(यदि) लड़का, लट, गजाय, नो जी,
सरखो नहीं है न्याय ।
लड़को सन्नी पचेन्द्री तै,
लट सम कहो किम थाय ॥ चतुर० ॥ ५५ ॥
शक्य होवे तो बचायले जी,
कीड़ा मकोड़ा रा प्राण ।
अशक्य बचाई ना सके,
जारी मूर्ख कर कोई ताण ॥चतुर० ॥५६ ॥
द्रव्य-क्षेत्र ना अवसर जो,
उपदेश दे मुनिराय ।
बिन अवसर तो ना दिये जी,
(तिथी) उपदेश अधर्म म नाय ॥चतुर० ॥५७॥
(तिम) अवसर होवे साध रो जी,
जीवां ने लेवे बचाय ।
बिन अवसर रक्षा न हुवे तो,
रक्षामें पाप न थाय ॥ चतुर० ॥ ५८ ॥
उपदेश १, रक्षा२, धर्म म जी,

दोयां में शुध परिणाम।
पिण अवसर होवे जद सदे जी,
श्रद्धे आछो काम ॥ चतुर० ॥ ५९ ॥
उपदेश वतावे धर्म सें जी,
जीव बचायां पाप।
[या] खोटी श्रद्धा तेहनी जी,
ज्ञानी जाणे साफ ॥ चतुर० ॥ ६० ॥
लड़का लट सरिखा कहे जी,
(ते) मूरख, मूढ़ गवाँर।
जैनी नाम धरायने जी,
भ्रष्ट किया नरनार ॥ चतुर० ॥ ६१ ॥
कीड़ा, मकोड़ा, मनुज नी जी,
सरखी बतावे बात।
[ते) भेष लई भारी हुआ जी,
धर्म री कर रया घात ॥ चतुर० ॥ ६२ ॥
चउनाणी शुध संयमी जी,
वीर जगत गुरु राय।
गोसालाने बचावियो जी,

अनुकम्पा दिल लाय ॥ चतुर० ॥ ६३ ॥
(जो) जीव बचावणो पाप मे जी
गोसालो बचायो केम।
उत्तर न आयो एहनो जी,
तब झूठ बोल्या तज नेम ॥ चतुर० ॥ ६४ ॥
(कहे) "गोसाला ने बचावियो जो,
चूक गया महावीर।
पाप लागो श्री वीर ने,
म्हारी श्रद्धा बडी गभीर" ॥ चातुर० ॥६५॥
(वलि कहे) "साधा ने लब्धि न फोडणी जी,
सूत्र भगोती र माय।
लब्धी फोड बचावियो जी,
तेथी पाप कर्म बन्धाय" ॥ चातुर० ॥ ६६ ॥
(उत्तर) उपदेशे जाव बचावले जा,
लब्धि फोडे नाय।
ते पिण पाप एकत मे,
थारी श्रद्धा र माय ॥ चातुर० ॥ ६७ ॥
(तेथी) झूठा चोज लगाविया जी,

लब्धि केरे नाम।
अनुकम्पा उठायवा जी,
यो मिथ्या-मत रो काम ॥ चातुर० ॥ ६८ ॥
[इम] समुचाय लब्धि रा नाम ले जी,
भोलाँ ने दे भरमाय।
पिण सांची कोई मत जाणज्यो जी,
भेद सुणो चित लाय ॥ चातुर० ॥ ६९ ॥
शीतल लेश्या लब्धि नो जी,
दोष न सूत्र मांय।
सुखदाई दुख ना होवे जी,
(एथो) जोव-हिंसा नहिं थाय ॥चातुर०॥७०
अंग उपाङ्ग ग्रन्थ में इण,
लब्धि रो दोष न कोय।
तो पिण पाप बताइयो जी,
यो कपट कुगुरु रो जोय ॥ चातुर० ॥ ७१ ॥
दोष होवे जे लब्धि थी ते,
प्रकट बताया नाम।
इणरो नाम न चालियो थें,

तजो कपट रो काम ॥ चातुर० ॥ ७२ ॥
[कहे] "उष्ण ने शीतल एक छेजी,
तेजू लब्धि रा भेद"
मद छकिया इम ऊचरे जी,
[ते] सुणतॉं उपजे खेद ॥ चातुर० ॥ ७३ ॥
(उत्तर) शीतल थी शान्ति होवे जी,
जीव न विणसे कोय।
उष्ण थी जीव मरे घणा जी,
एक किसो विध होय ॥ चातुर० ॥ ७४ ॥
(कहे) "अग्नि पाणी भेला होवे जी,
जीव घणा मर जाय।
[तिम] तेजू शीतल लब्धि मिल्यॉं जी,
घात जीवॉं री थाय" ॥चातुर०॥ ७५ ॥
[उत्तर] तेजू लेश्या पुद्गल भणी जी।
अचित कह्या जिनराय।
सूत्र भगोती में देखलो थे,
खोटा लगावो न्याय ॥चतुर०॥७६॥
हिंसादी कुकर्म थी जी,

खोटी-लेश्या थाय।

जीव रक्षा रा भावमें जी,

भली लेश्या सुखदाय ॥चतुर०॥७७॥

मीठो-लेश्यामें ना कह्यो जी,

जीव रक्षा रो काम।

उतराध्येन चोंतिस में जी,

लक्षण द्वार रे ठाम ॥चातुर०॥७८॥

सदा शुद्ध-लेश्या वीर में जी,

पाप कहो किम होय।

आचारंगे देखलो जी,

प्रभु पाप न कीनो कोय ॥चातुर ०॥७९॥

[कहे] "राग हुंतो तब वीर में जी,

लियो गोसाल बचाय।

'छद्मस्थपणे चूकिया' म्हें,

पाप केवां इण न्याय" ॥चातुर०॥८०॥

[उत्तर] छद्मस्थ राग रो नाम लेने,

पड़िया पाप रे कूप

अरिहन्त आसातना करी जी,

हुवा मिथ्यात रा भूप ॥ चतुर० ॥ ८१ ॥
पंचम-गुणठाणा घणी जी,
(वलि) सराग संजमी जोय।
संयम पाले राग से जी,
जामे दोष न कोय ॥ चतुर० ॥ ८२ ॥
संजम-राग न दोष में जी।
असंजम-राग में दोष।
धरमाचारज (रा) राग में जी,
मुनि होवे निरदोष ॥ चतुर० ॥ ८३ ॥
धर्म राग रत्ता कया जी,
श्रावक रा गुण माँय।
धर्म-राग करता थका जी,
शुक्ल-लेश्या पिण पाय ॥ चतुर० ॥ ८४ ॥
दया एक रस भाव से जी,
लियो गोसालो बचाय।
ते राग प्रशस्त प्रभु तणो जी,
धर्म लेश्या रे माँय ॥ चतुर० ॥ ८५ ॥

गोसालाने बचावियो जी,
पाप जाणता स्याम।
तो सर्व साधां ने वर्जता जी,
इसड़ो न करजो काम ॥ चतुर० ॥ ८६ ॥
केवल ज्ञान में प्रभु कयो जी,
अनुकम्पा रो धर्म।
गोसालाने बचावियो प्रभु,
प्रकट कर्यो यो मर्म ॥ चतुर० ॥ ८७ ॥
दोष न लेश प्रभु कयोजी,
गोसाल बचाया माँय।
वीतराग गोपे नहीं जी,
प्रकट देवे फुरमाय ॥ चतुर० ॥ ८८ ॥
गोतमने प्रभुजी कयोजी,
आनन्द लेवो खमाय।
प्राछित ले निर्मल हुवो ज्यूं,
दोष थाँरो मिट जाय ॥ चतुर० ॥ ८९ ॥
गोतम दोष मिटायवा जी,
प्रकट कह्यो प्रभु आप।

निज नो केम छिपावना जो,
(तुम) तज दो खोटी थाप ॥ चतुर० ॥९०॥
यो प्रकट न्याय न ओलखे जी,
जार मॉय मूल मिथ्यात ।
अरिहंत वचन उथाप दे ते,
निन्हव कह्या जगनाथ ॥ चतुर० ॥ ९१ ॥
(कहे) "गोसाला ने बचावियो तो,
वधियो घणो मिथ्यात ।
(तेथी) पाप लागो श्री वीर ने जी,"
एवी मन मे राखे वात ॥ चतुर० ॥ ९२ ॥
(उत्तर) गोसाला ने बचावियो जो,
हुवो समकित धार ।
श्रीमुख निरणो जिन कियो जी,
जासी मोक्ष मझार ॥ चतुर० ॥ ९३ ॥
साधू गोशाला तणा जी,
वीर र शरणे आय ।
तिरिया घणा ससार थी जी,
भाख्यो सूतर माय ॥ चतुर० ॥ ९४ ॥

श्रावक शरणे आवियो जी,
गोसाला ने छोड़ ।
साधु-श्रावक श्री वीर रा न,
सक्यो गोसालो मोड़ ॥ चतुर० ॥ ९५ ॥

मिथ्याती मिथ्यात में जी,
हुआ गोशाला रा शीष ।
मिथ्यात वधियो किण तरेजी,
खोटी थांरी रीश ॥ चतुर० ॥ ९६ ॥

श्रावक गोसाला तणा जी,
त्रस री नहि करे घात ।
कन्द मूल पिण ना भखे जी
या सूत्र-भगोती में बात ॥ चतुर० ॥ ९७ ॥

तप तो सराहो तेहनो तुम,
खोटी करवा थाप ।
अनुकम्पा रा द्वेष थी (तुमे) बोलो,
जीव बचावा में पाप ॥ चतुर० ॥ ९८ ॥

बलि कपट करो कुगुरु कहे,
"दो साधु बचाया नांय ।"

खोटा न्याय लगावता जी,
  कथा फूठा लग जाय ॥ चतुर० ॥ ९९ ॥
(उत्तर) आयुष आयो तेहना जी,
  देख्यो श्री जिनराज ।
निश्चय टाल्यो न टल्यो (जी),
  ज्या सारया आतम काज ॥ चतुर० ॥१००॥
(कहे) "गौतमादिक गणधर हुताजी,
  छद्मस्थ लब्धि ना धार ।
क्यायें फरो न बचारिया जी,
  शीतल लेश्या निकार" ॥ चतुर० ॥ १०१ ॥
(उत्तर) जिन नहि जिन समा कह्या जी,
  गौतमादि गुणधार ।
जाणे आयु सर्व नो जी,
  पलि ठिनगार निरधार ॥ चतुर० ॥ १०२ ॥
धर्मघोष मुनि जाणियो जी,
  धम रूचा निरतन्न ।
सर्वार्थ सिद्ध में देखिया च,
  पुरुषार था मरन्न ॥ चतुर० ॥ १०३ ॥

आयुष मुनि रो जाणता जो
गोतमादि गुण धार ।
विहार मुन्याँ ने करावता जी,
(थारेपिण) जामें दोष न एक लिगार ॥१०४॥
(मुनि) निश्चे देख्यो ज्ञान में जी,
ते किम टारयो जाय ।
ते जाणी ज्ञानी-मुनी जी,
न सक्या त्यां ने बचाय ॥ चतुर० ॥१०५॥
सो कोसां वेर न ऊपजे जी,
अरिहंत अतिशय विशेष ।
समवसरण में ऊपनो ते,
होणहार री रेष ॥ चतुर० ॥ १०६ ॥
निश्चय होणा रा नाम से जी,
गोशाल बचाया में पाप ,
उलटा न्याय लगायने जी,
थें कर रया खोटी थाप ॥ चतुर० ॥ १०७ ॥
सत हेतु सुण समझसी जी,
जामें शुद्ध विवेक ।

पक्षपात तज पामसी जो,
निरमल समकित एक ॥ चतुर० ॥ १०८ ॥
मिथ्या-खण्डण ने करी जो,
जोड़ जुगत धर न्याय ।
शुद्ध भावे श्रद्धया थका जो,
आनन्द मंगल थाय ॥ चतुर० ॥ १०९ ॥
सवत उगणोसे तणे जो,
छीयाँसी रे साल ।
आषाढ शुक्ला पचमी जो,
वरते मगल माल ॥ चतुर० ॥ ११० ।

छठी ढाल सम्पूणम

दोहा

सबल निबल ने मारता, देख्या दीन दयाल ।
हितकर धर्म परूपियो, जीव दया प्रतिपाल ॥१॥
निरबल जीव बचायवा, सबलां ने समझाय ।
त्यामें पाप बताबियो, केइक कुमति चलाय ॥२॥
मांसादिक छुड़ाय दे, अचित वस्तु रे साय ।
एकान्त पाप तिणमें कहे, केइ कुबुद्धि उठाय ॥३॥
कहें मिश्र श्रद्धाँ नहीं, श्रद्ध्यां हो मिथ्यात ।
धर्म पाप एकान्त है, यो खोटो पखपात ॥४॥
अल्प-पाप बहु-निर्जरा, सूत्र भगोती देख ।
मूलपाठ प्रभु भाखियो, (तेथी)कूड़ोथारोलेख॥५॥
द्वेष अनुकम्पा-दान रो, ज्याँरे है घट माँय ।
तिणने सत-पथ लायवा, ज्ञानी इम समझाय ॥६॥
ऋतु चौमासो आवियो, वर्षा वर्षे जोर ।
लट गजाई डेंडका, उपन्या लाख किरोर ॥७॥

एक वेश्या एक साधुरा, भक्त नो मन हुलसाय।
तिण वेलामें नीसरया, बेठा गाडी माय ॥८॥
साधुभक्त तो साधुरा, दर्शन केरे काम।
वेश्या अभिलाषी तिको, जावे वेश्या धाम ॥९॥
गाडी चलता चग दिया, जीव अनन्ता जाय।
इतनामें बिजली पडी, दोइ मुवा ते माय ॥१०॥
धर्मी पापी कोण छे, इण दोणा र माय।
हिंसा धाने मारसी, देवो अर्थ बताय ॥११॥
तब तो ते चट ऊचरे, मारा दर्शन काम।
आता रस्तामें मुआ, तिणरा शुभ परिणाम ॥१२॥
धर्म लाभ तिणने हुवो, हिंसा तणो तो पाप।
गाडी आरंभ थी हुवो, यू बोले ते साफ ॥१३॥
वेश्या अर्थ नीकल्यो, तिण मे धर्म न कोय।
एकान्त-पापरो काम ए, यो साँचो लो जोय ॥१४॥
वेश्या अर्थी जाणज्यो, एकान्त-पाप र माय।
दर्श(न)अर्थिगाडी चढ्यो, धर्म पापबेहु थाय॥१५॥
मन्दमति यो बोलिया तब ज्ञानी कहे एम।
मिश्रतुमे नाहमानता,(किंते)वाली बदलोकेम ॥१६॥
तब पाछा ते यूं कहे, दर्शन धर्म रा काम।
गाडी चढनो पाप मे, इम जूदा बेहु ठाम ॥१७॥

तो इमही तुम जाणलो, अनुकम्पा(धर्म)रो काम ।
आरंभ समझो पाप में, इम जूदा वेहू ठाम ॥१८॥
अणसरते आरंभ हुवे, दर्शन केरे काम ।
बिन आरंभ दर्शन करे, तो चढ़ता परिणाम ॥१९॥
अणसरते आरंभ हुवे, अनुकम्पा रे काम ।
विन अरंभ करुणा करे, तो चढ़ता परिणाम ॥२०॥
अनुकम्पा उठाय ने, दर्शन थापे धर्म ।
जो या श्रद्धा धारसो, जाड़ा बंधसी कर्म ॥२१॥
कोदा कराया भल जाणिया, दर्शन शुध परिणाम ।
कोदा कराया भल जाणिया, करुणा आछो काम ॥२२॥
यो तो न्याय न जाणियो, पड्या टेक अनजाण ।
करण जोग बिगाड़िया, मिथ्यामति अयाण ॥२३॥
कूड़ा हेतु लगावने, मिथ्यामत थापन्त ।
ते खंडन करूं जुगतसे, सुणज्यो धरम निखंत ॥२४॥
सात दृष्टान्त तेने दिया, मिथ्या थापण पन्थ ।
म्लेच्छ वचनमुख आणिया, नाम धरायो संत ॥२५॥
लज्जा उपजे म्लेच्छ ने, एवा खोटा न्याय ।
ते तो कथता ना डरया, जैनी नाम धराय ॥२६॥
ज्यांरी बुद्धि निरमला, ते सुण दे धिक्कार ।
मूरख सुण मोहित हुआ, डूबा कालो धार ॥२७॥
हिवे खण्डन सातो तणा, कहूँ बहुले विस्तार ।
भविघण भावधरो सुणो, ज्ञान-दृष्टि दिलधार ॥२८॥

ढाल-सातवीं

(तर्ज -राग सुणो म्हारी वीनता)

कन्दमूल भखे एक मानवी,

भूख दुरसहो हो मह्यो नहि जाय।

समझ तेने छोडाविया,

अचित वस्तु थी हो दोधी भूख मिटाय॥

भवियण जिनधर्म ओलखो ॥ १ ॥

कन्दमूल (और) भूखा पुरुष री,

करणा मे हो बनावे पाप।

या श्रद्धा मन्दा तणी,

खोटो दीसे हो ज्ञानी ने माफ ॥ भ० ॥२॥

इम एकान्त पाप परूपना,

नहि शङ्के हो कुगुरु काला नाग।

इण श्रद्धा री मठन पूछिया,

चर्चा मे हो जावे दूरा भाग ॥ भ० ॥३॥

भोलाजन भेला करी,
खोटा हेतू हो थोथा गाल वजाय।
घर में घुस घुरकाय ने,
इण विध थो हो रया पन्थ चलाय ॥भ०॥४॥
सुणो दृष्टान्त हिवे तेहना,
किणविध बोले हो ते आल-पंपाल।
बुद्धवन्त बुद्ध थी परख ले,
निरबुद्धी हो फंसे माया जाल ॥ भ० ॥५॥
(कहे) "सो मनुष्य ने मरता राखिया,
मूला गाजर हो जमीकन्द खवाय।
(बले) मरता राखिया सो मानवी,
काचो पाणी हो त्यांने अणगलपाय" ॥भ०॥६।
इम भोलां (ने) भरमायवा,
गाजर मूलां रो हो मुख आणे नाम।
वली होको, मांस, मुरदा तणो,
नाम लेवे हो भ्रम घालण काम ॥भ०॥७॥
फासु-अन्न थी मरतां राखिया,
तिण रो तो हो छिपावे नाम.।

जाणे खोटी-श्रद्धा चोडे पडे,
जद बिगडे हो ऊ धा-पन्थ रो काम॥भ०॥८॥
कोई जीव मारे पचेन्दरी,
मूख दुखडो हो मिटावण काम।
(तिणने) समझाय अचित अन्न से,
पाप मिटायो हो कोइ शुद्ध परिणाम॥भ०॥९॥
जीव बचायो पचेन्दरी,
तिण रो टलियो हो दु'ख आरत पाप।
मारणवाला ने टल्यो,
हिंसाकारी हो मोटो कर्म सताप॥भ०॥१०॥
इम मारता ने मारणहार रे,
शान्ति करता हो सायक बुद्धिमान।
एकान्त पाप तिण मे कहे,
ते तो भूल्या हो जिन धर्म रो भान॥भ०॥११॥
जीव बचे आरभ मिटे,
तिण मे पिण हो बनावे पाप।
ते जीव बचे आरभ हुवे,
(एवा) प्रश्न पूछे हो खोटी नीयत साफ॥१२॥

जो पूनम-चन्द्र माने नहीं,
आठम चन्द्र री हो पूछे ते बात।
चतुर चेतावे तेहने,
पूछण जोगो हो तूं रह्यो किण भांत॥१३॥
जो वर्णमाला माने नहीं,
शुद्धा-शुद्ध तो हो पूछे शास्त्र उचार।
ते मूरख छे संसार में,
मिथ्या-भाषी हो तिणरे नाहीं विचार॥१४॥
इण दृष्टान्ते जाणज्यो,
कूतरकी हो मिथ्यावादी अतोल।
जीव बचिया पुन्न (धर्म) माने नहीं,
आरँभ ना हो मुख आणे बोल॥१५॥
जीव बचे आरम्भ मिटे,
पुन्य-धरम हो तिण में श्रद्धे नाय
आरम्भ थी जीव ऊगरे,
एवा प्रश्न ते हो पूछे किण न्याय॥१६॥
अग्नि, पाणी, होका नो बली,
त्रस-मांस ना हो मन्द दृष्टान्त गाय।

॥ बकरी और भूखे की रक्षा ॥

ढाल सातवीं गाथा, ६, १० का भाव चित्र।

"कोई जीव मारै पंचेन्द्री, भूख दुखड़ा हो मिटावण काज
(तिणनें) समझाय अजित अन्न रो, पाप मिटायो हो कोई शुद्ध परिणाम ॥६॥
जीव बचाया पंचेन्द्री, तिणरा टलिया हो दुःख भारी पाप ॥
मारणवालाने टल्या हि सापारा रो मोटो धर्म सताप ॥ १ ॥

मुरदा खवाया* रो नाम ले,
नहिं लाजे हो जैनी नाम धराय ॥१७॥
पेट दुख थो होको पीजना
अचित ओपरे हो दीनो हाको छोडाय ॥
आरंभ टल्यो छहुकायनो
इणकाममें हो हुवा धर्मके नाय ॥१८॥
"दारू पीता देखने
छुडायो हो काई दूर पिलाय ।
थारी श्रद्धासे कहो
इणमे तुम हो धर्मश्रद्धोके नाय ॥१९॥
"एक मुदा रा मास खवायने
भूखारी हो मेटतो थो भूख ।
दयाजत दया दिल आणीने
रोटो देई हो मेट दियो दूख ॥२०॥

---

* जैसा कि वे कहते हैं —

पेट दुखे तड़फड़े नर,
जीव खाण रो कर ह्रदय विचार ।
शान्ति पयराइ सो जणा,
मरता गल्या हो त्या न हाको पाप ॥
भविष्य जिन धर्म भोलखा ॥३१

अभक्ष छुडायो भक्ष थी
नर्क निमित्त हो टलाया कर्म।
थांरी श्रद्धा थी कहो
इण काममें हो हुवोके नहि धर्म ॥२१॥
(वलि) नर मार मनुष्य वचाविया,
मंमाई नो हो एम हेतु लगाय।
एवा कूदृष्टान्त मेलवे
ते सुणने हो ज्ञानी लज्जा पाय ॥२२॥

सौ जणा दुर्भिक्षकाल मे,
अन्न विना हो मरे उजाड़ मांय।
कोइक मारे त्रस-काय ने,
सौ जणां ने हो मरता राख्या जिमाय ॥भवि०॥८॥
किणहिक काले अन्न विना,
सौ जणां रा हो जुदा होवे जीव काय।
सहजे कलेवर मुवो पडियो,
कुशले राख्या हो त्यां ने तेह खुवाय॥ भवि० ॥९॥
वले मरता देखी सौ रोगला,
मंमाई विना हो ते साजा न थाय।
कोई मंमाई करे एक मनुष्य री,
सौ जणां रे हो शान्ति किधि वचाय॥ भवि० ॥ १०॥
(अनुकम्पा ढाल ७,)

॥ हुक्का छुड़ाना ॥

ढाल सातवीं गाथा १८ का भाव चित्र।

"पेट दुःख मां होको पावता, भजिन औषधे हो माना माफो छोड़ाय।
आरंभ टल्यो छह कायनो, इण कामनें हो हुवो धर्मनेंनाय ॥ १८ ॥

॥ शराब छुड़ाना ॥

ढाल सातवीं गाथा १६ का भावचित्र ।

"दारू पीता देखने, छडायो हो कोइ दूध पिलाय ॥
थारी श्रद्धा से कहो, इणमे तुम हो धर्मश्रद्धावेनाय ॥ १६ ॥

कोई ज्ञानी पूछे तेहने
एक रोगी होरयो अति दुखपाय।
तिण आयो वैद्य चलायने
ममाई याइयारीतियारे चितमे चाय ॥२३॥
दयावते सेज उपाय थी
रोगी ना हो दीना रोग मिटाय ॥
ममाई थी मरतो नर बच्यो
पाप धर्म रो हो देवो भेद बताय ॥२४॥
(कोई) भद्रिक अनुकम्पा करे,
अल्पार भी हो हलूकर्मी जोय।
महारम्भी महा परिग्रही,
तिणरे घट मे हो करुणा किम होय ॥२५॥
मोटी हिंसा त्रस काय नी,
थावर नी हो छोटी सूत्र मे जोय।
आवश्यक, उपासक दशा,
भगोती मे हो प्रभु भाखी सोय ॥ २६॥
मोटी हिंसा झूठ चोरी री,
श्रावक रे हो व्रत री मर्याद।

(तेथी) अल्पारम्भी श्रावक कह्या,
आंख खोली हो देखो संवाद ॥२७॥भवि०॥

दया भाव दिल आणने,
सो मनखां रा हो बचावसी प्राण ।
ते अल्पारम्भी जाणज्यो,
अनुकम्पा रो हो यो मर्म पिछाण ॥२८॥

अल्पारंभी नर हुवे,
त्रसजीव ने हो ते मारे केम ।
अनुकम्पा उठावण कारणे,
थां तजियो हो बोलण रो नेम ॥२९॥

एकेन्द्री पंचेन्द्री सारीखा,
एवा बोले हो कुगुरु कूड़ा बोल ।
पाणी, मांस सरीखो कहे,
चर्चा कीधा हो खुल जावे पोल ॥३०॥

पाणी अचित पीवो तुम्हें,
मांस सचित हो खावो के नाँय ।
तब कहे "म्हें खावां नहीं,
माँस आहारे हो महा कर्म बँधाय ॥३१॥

॥ ख ॥

॥ अचित औपधि से रोगी को वचाना ॥

ढाल सातवी गाथा २३, २४ का भाव चित्र ।

कोई ज्ञानी पूछे तेहने एक रोगी हो रयो अति दुख पाय
तिया आयो वैद्य चलायने मंमाइ पाडणरो तिणरे चितमें चाय ॥ २३ ॥
दयावंते सेज उपाय था रोगीना हो दीना रोग मिटाय
मंमाइ थी मरतोनरवच्यो पाप धर्मरो हो देवो भेद वताय ॥ २४ ॥

मास आहार नरक (रो) हेतु है,
ठाणाअग हो उवाई र मॉय।
म्हें साधू बाजा जैन रा,
मास खादे हो साधुता उठ जाय'' ।।३२।।

मास पाणी एक सरीखा,
मूं डा थी हो तुम्हे कहता एम।
(पोते) काम पड्यो जद बदलिया,
परतीतो हो थारो आवे केम ।।भवि०।।३३।।

पाणी, मास अचित वेहू,
पाणी पीवो हो मास खावो नाय।
तो सरखा किंवे ना रह्या,
किम भोलाँ ने हो नाख्या भर्म रे माय ।।३४।।

पाणी पोवे सजम पले,
मास खादे हो साधू नरक मे जाय।
(तेथी) सातो दृष्टान्त सरिखा नहीं,
योग्य-अयोग्य हो त्या मे अन्तर थाय ।।३५।।

जो सम परणामी साधु रे,
पाणी मास में हो बहुलो अन्तर होय।

तो गृहस्थ रे सरिखा किम हुवे,
पक्ष छोड़ी हो ज्ञान-नयने जोय ॥३६॥

जो मांस पाणी सरिखा कहो,
(तो) बेहु खाधा हो होसी मुनि रे धर्म ॥
(थारे) बेहू अचित एक सारखा,
थारे लेखे हो नहीं राखणो भर्म ॥३७॥

जो साधु रे सरिखा कहे नहीं,
(तो) कोन माने हो तव वचन प्रतीत ।
आप थापी आप उथाप दी,
थारी श्रद्धा हो परतख विपरीत ॥३८॥

जो साधु रे बेहू सरिखा कहे,
तो लोकां में हो धुर-धुर वहु थाय ।
तव मांस-पाणी जुदा कहे,
झूठा बोला री हो कुण पक्ष बँधाय ॥भ०॥३९॥

मांस-पाणी सरीखा कहे,
साधाँ रे हो केता लाजे मूढ़ ।
एहवो उलटो-पंथ तो जालियो,
त्यारे केड़े हो बूड़े कर-कर रूढ़ ॥४०॥

मास न खावे साधुजी,
   फासुक पिण हो जाणे नरक रो स्थान।
अन्न, मास सरीसो नही,
   साधु श्रावक हो कर अन्न जल पान ॥४१॥
जो श्रावक मास खावे नहीं,
   दूजा ने हो खवावे केम।
अनुकम्पा उठायवा,
   अणहू तो हो यो घाल्यो येम ॥४२॥
अचित तो येहू सारखा,
   मास खाया हो होवे सजम री घात।
पाणी पीधा सजम पले,
   (तो) उथप गई हो मातो हेतु री यात ॥४३॥
ए खोटा दृष्टान्त कुगुरु तणा,
   ते दीधा तो मेटण दया धर्म।
ते समदृष्टि श्रद्धे नहीं,
   घोडे जाणे हो खोटी श्रद्धा रा मर्म ॥४ ॥
जीवा री रक्षा जो करे,
   मिट जावे हा तेना राग ने द्वेष।

श्री मुख प्रभु इम भाखियो,
शंका होवे तो हो दशमों अंग देख ॥४५॥

रत्न अमोलक देख ने,
मूरख नर हो जाणे तस कांच।
जवरी मिल्या तेने पारखू,
अमोलक हो तब जाण्यो साँच ॥४६॥

धर्म है जीव बचाविया,
या श्रद्धा हो शुध रतन अमोल।
कुगुरु काँच सरखी कहे,
न्याय न सूजे हो मिथ्या उदय अतोल ॥४७॥

सत बोल ने जीव बचाय ले,
चोरी तज ने हो पर-जीव बचाय।
वलि करे सुकारज एहवो,
जीव बचावे हो व्यभिचार छुड़ाय ॥४८॥

धन तज राखे पर-प्राण ने,
(इम) क्रोधादिक हो अठारा ही त्याग।
छोड़े छोड़ावे भल जाण ने,
परजीवाँ ने हो मरता राखे सुभाग ॥४९॥

भूख मरतो हणे पचेन्द्री,
करुणा कर हो तेने दे समझाय।
फासुक सूँ खडो देय ने,
जीव-रक्षा हो इणविध पिण थाय ॥५०॥
मारण मारण उपदेश थी,
बचाया हो पर-जीवा रा प्राण।
या सत्य-वचन आराधना,
जीवरक्षा हो हुई परधान ॥मति०॥५१॥
चोर लूटे धन पारको,
धन धणी हो मरणे-मारण धाय।
समझाय चोरी छोड़ाय दी,
दोना री हो रक्षा हुई इण न्याय ॥५२॥
शील खण्डे एक लम्पटी,
शीलवती हो खण्डन लागी काय।
लम्पट ने समझावियो,
प्राण बचिया हो सती रा धर्म र साथ ॥५३॥
धन अर्थ हणे एक सेठ ने,
धन धणी हो दीनो परिग्रहो त्याग।

प्राण बच्या परिग्रह छुट्यो,
रक्षा हुई हो सतमारग लाग ॥भवि०॥५४॥
क्रोधवसे हणे जीव ने,
क्रोध छोड़ायो हो जीवरक्षा रे काम।
इम मान, मायादो पाप ने,
छोड़ाया हो जीवरक्षा रे काम ॥भ०॥५५॥
यां सगला में जीवरक्षा हुई,
स्व-परना हो वली छूटा पाप।
इण भांती जीव बचाविया,
मोह अनुकम्पा हो कहै अज्ञानी साफ॥५६॥
विन हिंसा जीव बचाविया,
तिण में श्रद्धो हो तुम पाप–एकान्त।
(तो) सत्यादिक थी छोड़ाविया,
सगले ठामे हो थांरे पाप रो पन्थ ॥५७॥
हिंसा तजी, झूठ छोड़ने,
चोरी तज ने हो परजीव बचाय।
मरता राख्या मैथुन तजी,
ते अनुकम्पा हो थारे पाप रे माय ॥५८॥

झूठ चोरी व्यभिचार* रो,
नाम लेकर हो तुमे घालो भर्म ।
झूठा हेतु लगाय ने,
छोड दीनी हो तुमे लाज रु शर्म ॥५९॥
जीवदया द्वेषी कहे,
मरता राखे हो मैथुन सेवाय ।
तिणरो उत्तर होवे साभलो,
मिट जावे हो थारी बकवाय ॥भ०॥६०॥
एक विधवा थारा पन्थ री,
निज पूजजी रा हो दर्शन री चाय ।
चोरा पूज्य रह्या परगाम मे,
खरची बिन हो दर्शन नहि पाय ॥६१॥
व्यभिचार थी पैसो जोडने,
दर्शन काजे हो आई पूज्यजी रे पास ।
भावना भाई (माल) बेराविया,

---

* जैसा कि व कहते हैं —
जीव मारे झूठ बोलने, चोरी करनेका परजीव बचाय ।
घणे करे अकारज कहयो, मरता राखे हो मैथुन सेवाय ॥२१॥
(अनुकम्पा ढाल—७)

कारज निपज्यो हो व्यभिचार थी खास ॥६२॥

(बीजो) विधवा गरीब उद्यमवन्ती,

घट्टी पीसे हो पैसा जोड़न काज ।

दर्शन कर (आहार) वेरावियो,

कारज निपज्यो हो घट्टी रे साज ॥६३॥

पहेली कुकर्म कीधो आकरो,

दूजी रे हो आरम्भ आश्रव माय ।

दर्शन कीधा वेहू जणी,

दान दीधो हो थाने अति हर्षाय ॥६४॥

यामें उत्तम अधम कोण है,

अथवा सरीखी हो थारी श्रद्धा रे मांय ।

न्याय विचारी ने कहो,

विवेके हो हिरदा रे मांय ॥भवि०॥ ६५ ॥

(कहे) "पेली नारी महा-पापिणी,

दान दर्शन हो तिणारा लेखामें नाय ।

पन्थ लजायो हम तणे,

कुकर्मी हो धक्का जगत में खाय ॥ ६६ ॥

दूजी विवेकी गुण भरी,

दर्शन दान रा हे तिणरे धर्म रो धाम ।
धढी आरम्भ आश्रव सही,
तिण विना हे तिणरा किम चले काम" ६७
(उत्तर) तो समझो इण दृष्टान्त थी,
मैथुन सेवे हे जीव रक्षा र काज ।
ते परथम नारी सारखी,
नहि विवेक हो नही तिण र लाज ॥ ६८ ॥
केई जीव बचावे गुण भरी,
घटी आदिक हे मेनन र साथ ।
अनुकम्पा तस निरमलो,
आरम्भ तो हो अणमरते कराय ॥ ३९ ॥
व्यभिचार घटी सरीखो नहीं,
इम समझी हे सब कर्म कुकर्म ।
समझे विवेकी विवेक मे,
अणसमझु रे हो उपजे अति भर्म ॥ ७० ॥
शील खण्ड दर्शण कवी कुण कर,
तो जीव बचावे हे कुण मैथुन सेव ।
कुहेतु कुगुरु रा काढ्या,

उपनय जोड्यो हो मेटण कुटेव ॥ ७१ ॥

जीवरक्षा जिन धर्म है,
सूत्तर में हो श्री जिनजी रा वयन ।
तिण में पाप बतावियो,
शुद्ध-बुद्ध नाहीं हो फूटा अन्तर-नयन ॥७२॥

कोई क्रूर कसाई समझाय ने,
मरता राख्या हो दीन-जीव अनेक ।
तिण में पाप बतावता,
त्याँरा विगड्या हो श्रद्धा ने विवेक ॥७३॥

पहेला ने उपदेश दे,
पाप छोड़ाया हो धर्म रो फल जोय ।
तो पाप मिटया मरता जीव रा,
धर्म तेहमें हो कहो किम नहीं होय ॥७४॥

कहे "पाप छोड़ाया धर्म है,
मरता जीवाँ राहो आरत(रुद्र)मेटण पाप ।"
खिण थापे खिण में फिरे,
खोटी श्रद्धा हो या दीखे साफ ॥ ७५ ॥

देवलध्वज तेहनी परे,

फिर जावे हो न रहे एक ठाम।
दया-धर्म उत्थाप ने,
झगडो झाल्यो हो नहि चर्चा रो काम ॥७६॥
*सिंह कसाई रो नाम ले,
राख्या मारया रो हो झूठ रचे परपच।
बिन मारया जीव बचाविया,
पाप श्रद्धे हो मूढ कर-कर खच ॥ ७७ ॥
जीव बचाया रा द्वेष थी,
दया उठे हो एसी बोले वाय।
हणता जीव ने रोकता,
तिणमाए हो मन्द पाप बनाय ॥ ७८ ॥
पहला व्यवहार में,
अमाघाओ हा दया रो नाम।
वीर प्रभू उपदेशियो,

* जैसा कि वे कहते हैं - -
कोइ नाहर कसाइ ने मारने,
मरता राख्या हो घणा जीव अनेक।
जो गिने दोया ने मारता,
त्यारी बिगड़ी हो श्रद्धा सात विवेक ॥ २७ ॥
(अनुकम्पा ढाल-७

श्रेणिक राजादि हो सुणियो सुखधाम॥७९॥

दया-भाव दिल उपज्यो,

'अमाघाए' हो घोषणा दी सुनाय।

जीव कोई हणो मती,

सप्तम अंगे हो मूलपाठ रे माँय ॥८०॥

सप्तम दशम अंग रो,

एक सारीखो हो पाठ सूतर माँय।

जे कारज वीर बखाणियो,

श्रेणिक नृप हो दियो सबने सुनाय ॥८१॥

(निज) श्रद्धा उठती जाण ने,

सूतर रा हो दीना पाठ उठाय।

(कहें) "पाप हुवो श्रेणिक भणो,"

एवी बोले हो अणहूंतो वाय ॥ ८२ ॥

श्रेणिक समदृष्टी हूंतो,

हिंसा रोकी हो सूतर रे माँय।

माहणो माहणो प्रभु कहे,

मत मारो हो श्रेणिक दियो सुणाय ॥ ८३ ॥

हिंसा छुड़ाई रायजी,

मन्दमति हो सुण ने दुःख पाय ।
जीव दया रा द्वेषिया,
ऊंधी मति थी हो दुरगत मे जाय ॥ ८४ ॥
मतिमारो*आज्ञा राय (श्रेणिक) री,
या भाखी हो सूतर मे वात ।
पाप कहे श्रेणिक भणी,
ते तो बोले हो चोड़े झूठ मिथ्यात ॥ ८५ ॥
"अमारी" धर्म जिन भाषियो,
नृप पाल्यो हो पलायो जग (देश) माय।
तेमा पाप कहे ते पापिया,
भोला ने हो नाख्या फन्द रे माय ॥ ८६ ॥
(कहे) वीरजी नाय सिखावियो,
पडहो फेरजे हो थारा राज रे माय ।

---

* जसा कि ये कहते हैं ——
श्रेणिकराय पडहो फिरावियो,
यह तो जाणो हो मोटा राजा रा गीत ।
भगवन्त न सराहयो तेहने,
तो किमि आवे हो तिण री प्रतीत ॥ ३७ ॥
(अनुकम्पा ढाल

तो श्रेणिक सीख्यो किण कने,"
(इम) भ्रम घाले हो कुगुरु मन माय ॥ ८७ ॥
(कहे) "आज्ञा न दीनी वीरजी,
उदघोषणा हो करो राज रे मांय ।
तो धर्म सेणिक रे किम हुवे,
पाप शूद्धां हो तुम्हें तो मन रे मांय ॥ ८८ ॥
मोटा-मोटा हूंता राजवी,
समदृष्टि हो जिन-धर्म रा जाण ।
त्यां हिंसा छोड़ावण कारणे,
नहिं घोषणा हो कीधी सूत्र प्रमाण' ॥८९॥
(उत्तर) एवि तर्क करे केई मन्दमती,
नहिं सूझे हो फूटा अन्तर-नयन ।
जीव बचावण द्वेष थी,
अणहूंता हो मुख काढ़े वयन ॥ ९० ॥
न्याय सुणो हिवे भाव सूं,
श्रेणिक री हो सूतर में वात ।
निज नोकर बुलाय ने,
आज्ञा दीनी हो इणविध साक्षात् ॥ ९१ ॥
स्थान-धणी ने चेताय दो,
जागा दीजो हो वीर-प्रभु जब आय ।

थो हुक्म राजा श्रेणिक तणो,
आज्ञाकारी हो सुणायो जाय ॥९२॥
श्रेणिक ने प्रभु ना कह्यो,
घोषण करजे हो म्हारा स्थान रे काज।
तो पाप हुवो तुम कथन थी,
सेजा रो हो वीर ने दीनो साज ॥९३॥
वलि मोटा होता राजवी,
स्थान घोषणा (री) हो नहीं चाली घात।
तो श्रेणिक घोषणा किम करी,
न्याय तोलो हो हिरदे साक्षात ॥९४॥
श्रीकृष्ण करी उद्घोषणा,
दीक्षा लेनो हो श्री नेम रे पास।
साय करू पिछला तगी,
ज्ञात मे हो यो पाठ है खास ॥९५॥
आज्ञा न दीवी श्री नेमजी,
उद्घोषणा हो करो नगरी मझार।
(तो) थारे लेखे पाप हुवो घणो,
दीक्षा दलाली (मे)हो नहीं धर्म लिगार ॥९६॥
अन्य नृप री चाली नहीं,

उद्घोषणा हो दीक्षा रे सहाय।
इण कारण श्रीकृष्ण ने,
पाप कहणो हो थारी श्रद्धा रे माँय ॥९७॥
कोणिक भगतो वीर रो,
नित्यप्रते हो कुशल-बात मंगाय।
प्रेम धरी सुणे भाव सुं,
इण काजे हो देवे नर ने साय ॥९८॥
वीरजी नाय सिखावियो,
मुझ वारता हो नित लीजे मंगाय।
(तो) प्रभु नाम गोत्र सुणवा तणो,
पाप लागो हो थारी श्रद्धा रे माँय ॥९९॥
तब तो कुगुरु इण पर कहे,
"स्थान घोषणा हो करी श्रेणिक राय।
दीक्षा घोषणा थी कृष्णजी,
प्रभु वारता हो कोणिकजी मंगाय ॥१००॥
श्रेणिक अरु श्रीकृष्णजी,
धर्मदलाली हो कीधी शुध-भाव।
कोणिक भक्ती रस पियो,]
धर्म भाव रो हो चित में अतिचाव ॥१०१॥

श्रेणिक ने प्रभु नहिं कह्यो,
  घोषण कीजे हो म्हारे स्थान रे काम।
आव-जाव कार्य करण रो,
  गृहस्थी ने हो केणो वर्ज्यो श्याम ॥१०२॥
समदृष्टि निर्मल भाव थी,
  स्थान दलाली हो कीधी श्रेणिक राय।
तिणरे विवेक अति निरमलो,
  कारण काज हो समझे मन माँय ॥१०३॥
उद्घोषण आज्ञा मे नहीं,
  दीक्षा-दलाली हो निर्मल परिणाम।
धर्म-दलाली नीपजी,
  समदृष्टी हो करे एहवा काम ॥१०४॥
नाम गोत्र सुणे साधु रो,
  अति फल कह्यो हो सूतर रे मॉय।
कोणिक सुणतो (प्रभु) वारता,
  भक्ती रो हो फल मोटो पाय ॥१०५॥
वारजो नाय सिखावियो
  मुझ वार्ता हो नित लीजे मगाय।
क्ली न जणाई आमना,

ते तो समझो हो निजबुद्धि लगाय ॥१०६॥
बीजा राजा री चालो नहीं,
उद्घोषण हो स्थान दीक्षा रे काज ।
पिण निषेध दीसे नहीं,
सीधी होवे हो जाणे जिन राज ॥१०७॥
(आजपिण) पत्र भेजण साधु कहै नहीं,
श्रावक भेजे हो वन्दणा विविध प्रकार ।
वन्दना रो तिण ने लाभ छे,
पत्र प्रेषण हो आरम्भ निरधार ॥१०८॥
पत्र प्रेषण साधु न सीखवे,
श्रावक भेजे हो निज ज्ञान विचार ।
वन्दन-भाव तो निर्मला,
साधु रो हो नहीं कहण आचार" ॥१०९॥
इम सुधा ते बोलिया,
तब ज्ञानी हो तेने कहे समझाय ।
इणहिज विध तुम श्रद्ध लो,
उद्घोषण हो मति मारथा रोन्याय ॥११०॥
घोषणाकर प्रभु ना कहे,
पूछ्या थी हो कदा न देवे ज्वाब ।

स्थान' 'दीक्षा' 'अमरी' तणो,
सरखो घोषणा हो तुम्हें समझो मितार ॥१११॥
'स्थान' 'दीक्षा' 'अमरी' तणा,
कारज चोखा हो प्रभु दीना बताय ।
समदृष्टि कीना भाव सूँ,
धर्म दलाली हो धर्म नो फल पाय ॥११२॥
'अमाघाओ' नाम दया तणो,
वीरो भाख्यो हो प्रथम सवरद्वार ।
ते घोषणा श्रेणिक करी,
मतिमारो हो घोषणा रो सार ॥११३॥
पर ने कह्यो स्थान देवजो,
दीक्षा लेवा हो पर ने कह्यो ताम ।
मतिमारो तिम पर ने कह्यो,
एक सरिखा हो तीनों ये काम ॥११४॥
दो मे धर्म कैवो तुम्हें,
तीजा मे हो बतावो पाप ।
खोटी श्रद्धा छे तुम तणी,
मिथ्यावादी हो तुमे दीसो छो साफ॥११५॥
(कहे) "मतिमार थी नरक रुकी नहीं",

(तो) स्थान दलाली थी रुको नहिं केम ।
(यदि कहो) आगे एना फल पामसी,
मतिमार रा हो तुम्हे जाणो एम ॥११६॥
जो नरक जावा रा नाम थी,
मतिमार में हो वताओ पाप ।
तो श्रेणिक भक्ती बहु करी,
थारे लेखे हो ते सगली कलाप ॥११७॥
जो भक्ति आदि किया थकी,
तीर्थंकर हो होसी श्रेणिकराय ।
(तो) मतमार दलाली धर्म री,
पद तीर्थंकर हो अभयदान रे साय ॥११८॥
मतिमार घोषणा राय री,
थें बतावो हो मोटा राजा री रीत * ।
शास्त्र विरुद्ध तुम या कथी,
कुण माने हो थांरी परतीत ॥११९॥

---

* जैसा कि वे कहते हैं:—

श्रेणिकराय पटहो फिरावियो,
यह तो जाणो हो मोटा राजा री रीति ॥३०॥
(अनुकम्पा ढाल —७)

तीर्थ कर चक्री मोटका,
ज्याँरे नामे हो था किणे पखपात ।
मतिमार घोषणा नहीं करी,
थारा मुख थी हो (थारो) उत्थप गईवात ॥१२०॥
जो रीत मोटा राजा तणी,
ते चक्री हो पाली नहीं केम ।
अनुकम्पा रा द्वेष थी,
नहिं सूझे हो निज बोल्या रो नेम ॥१२१॥
'मतिमारो' ने 'दीक्षा' री घोषणा,
राज-रीती हो केवल ते नाय ।
समदृष्टी राजा तणी,
कृष्ण, श्रेणिक हो कीधी सूत्र रे माँय।१२२।
दीक्षा रा उदघोषणा,
कृष्ण छोडी हो दूजा राजा री नाय ।
(पिण) निषेध नहीं इण बात रो,
करी होसी हो कोई समदृष्टिराय॥१२३॥
ब्रह्मदत्त चक्री भणी,
चित मुनि हो समझावण आय ।
आरज कर्म ने आदरो,

परजा री हो अनुकम्पा लाय ॥१२४॥

पिण भारी- कर्मा रायजी,

जीवरक्षा रो हो नहीं कीनो उपाय ।

तुमे अनुकम्पा रा द्वेष थो,

मतिसारमें हो (श्रेणिक ने)देवो पाप बताय।१२५।

लाज तजी बके भांड ज्यूं,

वेश्या रा हो देवे दृष्टान्त कूढ़ ।

कुकर्मी अनुकम्पा किम करे,

तो पिण खोटी हो कुगुरु ताणेरूढ़ ॥१२६॥

(कहे) "दो वेश्या कसाइवाड़े गई,

करता देखी हो जीवां रा संहार ।

दोनो जणी मतो करा,

मरता राख्या हो जीव दोय हजार ॥१२७॥

एक गहणो देई आपणो,

तिण छोड़ाया हो जीव एक हजार ।

दूजी छोड़ाया इण विधे,

एक दोय सूँ हो चोथो आस्रव सेवाड़" ॥१२८॥

इम कही पूछे साध ने,

धर्म पाप हो कहो किण ने होय ।

जीव वेहू छोडाविया,
 *सरख्या सरखो हो फरक नहिं कोय॥१२९॥
(उत्तर) भोला ने भडकाविया,
 दृष्टान्त नो हो रचो मायाजाल।
(हिवे) करडो उत्तर विन दिया,
 नहीं कटे हो थारी जाल कराल ॥१३०॥
काँटा थी काटो काढणो,
 तेथी सुणने हो मत करज्यो रीस।
कुहेतु शल्य उधारवा,
 करडा दृष्टान्त हो देऊं विश्वा वीस ॥१३१॥
दो धाया अनुरागण तुम तणी,
 पूज्य दर्शण हो गई गेल रे माय।
किणविध आई धाया तुम्हे,
 पूज्य पूछ्या हो वार्ता कयो सुणाय ॥१३२॥

---

* जैसा कि वे कहते हैं —
एकण सेवायो आश्रव पाचमो,
 तो उण दूजी हो चोथो आश्रव सेवाय।
फेर पड्यो तोई ते इण पाप में,
 धर्म हांमा हो ते तो सरिखो थाय ॥भ०॥५४॥
 (अनु० ढाल—७)

(एक) गेणो वेंच्यो म्हें आपणो,
रोक रुपैया हो कीना दर्शन काज।
खरची गांठे बांध ने,
तुम दर्शन हो आई महाराज ॥१३३॥
(छे महिना) सेवा करसूँ थाहरी,
खरचो खासूं हो थाने बेरास्यूं माल।
दूजी कहे मुझ सांभलो,
इणविध से हो में आई चाल ॥१३४॥
खरची नहीं थी मुज कने,
आवण री हो तुम पासे चाय।
एक दोय सेठ री जाय ने,
खरची लोधी हो चोथो आश्रव सेवाय ॥१३५॥
तुम दर्शन खरची कारणे,
चोथो आश्रव हो (स्वामी) सेव्यो चित चाय।
खासूं ने माल बेरावस्यूं,
इम बोली हो पूज्य (री) भगता बाय ॥१३६॥
(एक) समदृष्टी सुणियो तिहां,
वांरा (वायां रा) पूज्यने हो पूछ्यो प्रश्न एक।
(यामें) धर्मणी पापणी कोण छे,

बतावो हो थॉरी श्रद्धा ने देख ॥१३७॥
सेव्यो आश्रव एक पॉचमो,
तो दूजी आई हो चोथो आश्रव सेव ।
दोया रो भेद बताय दो,
आश्रव सरखा हो थारे कैवा रा टेव ॥१३८॥
सुण घबराया पूज्यजी,
उत्तर देता हो ऊडे श्रद्धा री टेक ।
(दोनो) सरीखी कह्या शोभे नही,
लोक निन्दे हो (लागे) कलक री रेख ॥१३९॥
डरता इणविध बोलिया,
गणा वेंची हो कीधा दर्शन सार ।
तिणरी बुद्धि तो निरमली,
तेने हुवो हो धर्मफल अपार ॥१४०॥
बीजी कुलक्षणी नार है,
दर्शन काजे हो चोथो आश्रवद्वार ।
सेव्यो तो महापापणी,
(विवेक)विकलणी रे हो धर्म नही लिगार॥१४१॥
तब बोल्यो तिहा समकिती,
थारो श्रद्धा हो थार कथने कूड ।

आश्रव सेव्या विहुजणी,
फर्क भाख्यो हो तुमे तज ने रूढ़ ॥१४२॥
दर्शन, सेवा, वांरा सारीखो,
फेर पड़ियो हो क्यों थांरे मांय ।
एक धर्मी एक पापिणी,
किम होवे हो थारा मत रे मांय ॥१४३॥
एक सेव्यो आश्रव पांचमों,
चोथो आश्रव हो दूजी सेवी ने आय ।
फेर पड़्यो इण पाप में,
धर्म होसी हो ते तो सरिखो थाय ॥१४४॥
तब सिद्धा ते बोलिया,
"दोनां री हो मति एक सो नाय ।
गेणा बेच्या व्रत जावे नहीं,
पाप मोटको हो ते नाय गिणाय ॥१४५॥
(वलि) लोभ छोड़्यो सिणगार रो,
ममना मारी हो समता दिल धार ।
(तेथी) पेलो हुवे धर्मातमा,
ज्ञानदृष्टि हो इम करणो विचार ॥१४६॥
दूजी दुरगुणां थी भरी,

दर्शन रा हो भाव किणविध होय।
बात असम्भवती दिसे,
दृष्टान्ते हो कदा माना सोय ॥१४७॥
तो मति खोटी तेहनी,
कुकर्मिणी हो मोटो कीनो अन्याय।
पाप सेव्यो अति मोटको,
फिट फिट हो हुवे जगत रे माय ॥१४८॥
(वलि) लोभ मिट्यो नहिं तेहनो,
तीव्र वधियो हो निणर मोह जजाल।
तेथी पापणी दूजी नार हूं,
दर्शन रो हो थोथो आल पपाल" ॥१४९॥
न्यायपक्षी तव बोलियो,
सेवारो हो थारे दीखे राग।
तेथी सिद्धा बोलिया,
(पिण) जीवरक्षा मे हो दोनो सत्य ने त्याग॥१५०॥
कथन विचारो तुम तणो,
दो वेश्या रो हो था लीनो नाम।
गेणाने व्यभिचार थी,
जीवरक्षा रा हो त्या कीदा काम ॥१५१॥

वेश्या हुवे व्यभिचारणी,
खोटीमति री हो करणी शुद्ध केम ॥१६१॥
विपरीत-मति थी जे करे,
तेनी करणी हो विपरीत ही जोय ।
तिणरा पक्ष री थापना,
जे करे हो ते मिथ्याती होय ॥१६२॥
मिथ्यातणी व्यभिचारणी,
तेनी करणी हो नहीं धर्म रे मांय ।
कर्मबन्ध फल जेहने,
तेनो प्रश्न हो पूछो किण न्याय ॥१६३॥
हाथी ना स्नान सारखी,
मिथ्यामति री हो करणी शुध नांय ।
अल्प सो पाप उतार ने,
महापाप ने हो ते तो बांधे प्राय ॥१६४॥
मिथ्यामति व्यभिचारणी,
तेनी करणी हो श्रद्धे धर्म रे मांय ।
ते उत्तर तुमने दिये,
में तो श्रद्धां हो तेने धर्म में नाय ॥१६५॥
वेश्या-वेश्या मुख बसी,

लज्जा छोडी हो देवे दृष्टान्त कूड ।
जीवा री रक्षा उठायवा,
खोटी कथनी री हो माडो अति रूढ ॥१६६॥
(कहे) "एक वेश्या सावज कृत (काम) करी,
सहस्र नाणो हो ले घलि घर माय ।
दूजो कर्त्तव्य करो आपणो,
मरता राख्या हो सहस्र जीव छोडाय ॥१६७॥
धन आण्यो खोटा कर्त्तव्य करी,
तिण रे लाग्या हो दोनो विध कर्म ।
तो दूजो छुडाया तेहने,
उणें लखे हो हुवो पापने धर्म" ॥१६८॥
एवो खोटो न्याय लगाय ने,
आप मते हो करे खोटी थाप ।
बिहु विध पाप पेली कियो,
दूजी रे हो कहो धर्म ने पाप ॥१६९॥
होवे कथन हमारो साभलो,
में (तो) नहीं करा हो धर्म-पाप री थाप ।
मिथ्याहेतु मिथ्यामति कथे,
तेने उत्तर हो म्हें देवाँ साफ ॥१७०॥

(एक) नारी कुकर्म सेव ने,
सहस्र नाणो हो लाई घर मांय।
दूजी सेवी व्यभिचार ने,
द्रव्य खरचे हो साधु सेवा रे मांय ॥१७१॥
धन आणो खोटा कर्म करी,
तिण रे लग्या हो दोनों विध कर्म।
तो दूजी सेवा करी थांहरी,
थारे लेखे हो हुवो पाप ने धर्म ॥१७२॥
पाप गिणे व्यभिचार सें,
उणरी सेवा सें हो ते न गिणे धर्म।
पोते श्रद्धा री खबर पोते नहीं,
दया उठावा हो बांधे भारी-कर्म ॥१७३॥
इम कह्या ज्वाब न ऊपजे,
चर्चा में हो अटके ठामोठाम।
तो पिण निर्णय ना करे,
जीवरक्षा में हो लेवे पाप रो नाम ॥१७४॥
जीव, द्रव्य, अनादी शासतो,
प्राण-प्रजा हो पलटे वारंवार।
ते प्राणों री घात हिंसा कहो,

रक्षा ने हो दया कही सुखकार ॥१७५॥
ते रक्षा करे समभाव थी,
समदृष्टि हो मवर गुण पाय।
मोक्षमार्ग रक्षा कही,
मोक्ष-अर्थी हो कर अति हर्षाय ॥१७६॥
पृथ्व्यादिक छह काय ना,
प्राणरक्षा में हो कहे पाप अजाण।
जो हिंसा-रक्षा जाणी नहीं,
खोटी कर रया हो निजमत नी ताण ॥१७७॥
(वलि) त्रसथावर नहीं मारवा,
जारा प्राणा मे हो कह्यो फरक अपार।
तेथी हिंसा माही फरक छे,
स्थूल सूक्ष्म हो सूत्तर निरधार ॥१७८॥
तिम शक्य अशक्य रा भेद ने,
हिंसा रक्षा मे हो समझो चतुर सुजाण।
(केई) समुचय नाम बताय ने,
शक्य छोड़ने हो कर अशक्य (री)ताण॥१७९॥
थावर रक्षा करी ना सके,
त्रस जीवाँ री हो करे देह ने साय।

तिण में पाप रो भर्म घुसावियो,
   रक्षा रो हो द्वेष घणो घट माय ॥१८०॥
त्रिविध जीव रक्षा करे,
   परिग्रह री हो ममता ने हटाय ।
तेने मोल रा धर्म रो नाम ले,
   पाप बतावे हो कुबुद्धि चलाय ॥१८१॥
ममता उतारयां धर्म (हुवे) मोलरो,
   इम बोले हो तेने पूछणो एम ।
वस्त्र ममता परिग्रह गृस्थ रो,
   साधु (ने) दियां हो धर्म होवे केम ॥१८२॥
(कहे) ममता उतारयां धर्म है,
   अमोलक हो मोल रो नहिं थाय ।
तो जीवरक्षा रे कारणे,
(परिग्रह)धन ममता हो मेटे मोल में नाँय॥१८३॥
भगवती अठारवें शतके,
   परिग्रह उपधि रो भिन्न-भिन्न न एक ।
ममता थी परिग्रह कह्यो,
   उपकारे हो उपधि ने लेख ॥१८४॥
उपकार ममता एक है,

इम बोले हो कुगुरु निशंक ।
सूत्र वचन उत्थाप ने,
मिथ्यात रा हो मारे माठा डंक ॥१८५॥
दान, शीयल, तप भावना,
मोक्षमारग हो चारों सुखकार ।
अभयदान भय मेटे कह्यो,
जो देवे हो पावे भवपार ॥१८६॥
अनुकम्पा अर्थ प्रकाशिनी,
ढाल जोडी हो चूरू शहर मॅजार ।
उगणोसे छियासी तणे,
श्रावण सप्तमी हो सुखदायी वार ॥१८७॥

सातवीं ढाल सम्पूर्णम् ।

दोहा

न हणे हणावे जीव (छकाय) ने, स्व-दया कहे जिनराय
औरां री रक्षा करे, ने पर-दया कहाय ॥१॥
न हणे तेने दया कहे, रक्षा ने कहे पाप ।
एह वचन कुगुरु तणा, दी पर-दया उत्थाप ॥२॥
स्व-दया पर-दया बिहु कही, ठाणाअंग रे मांय ।
चोथे ठाणे देखलो, मिथ्या तिमिर मिटाय ॥३॥
वेषधारी भर्म्या घणा, मिथ्या उदय विशेष ।
भोलां ने भरमाविया, काढ़ दया री रेष ॥४॥
पर-दया उठायवा, पड़पंच रच्या अनेक ।
सूत्र-न्याय (सूँ) खण्डन करूँ, सुणज्यो आण विवेक॥

ढाल—आठवीं

(तर्ज—अनुकम्पा सावज मत जाणो)

द्रव्यलाय मे बले जद प्राणी,
आरत ध्यान पावे दुख भारी ।
बिल-बिलता रुद्रध्यान जो ध्यावे,
अनन्त ससार बधे दुखकारी ॥
चतुर धरम री निर्णय कीजे ॥१॥

कोई दयावन्त दया दिल धारी,
अग्नि मे बलता ने जो बचावे ।
द्रव्य भाव दया तिणरे हुई,
विवरो सुणो तिणरो शुद्ध भावे ॥च०॥२॥

द्रव्ये तो उणरा प्राण री रक्षा,
भावे खोटा ध्यान घटाया ।
यह उपकार इणभव परभव रो,
विवेक विकल यो भेद न पाया ॥च०॥३॥

द्रव्य आगसे बलता राख्या,
भाव आग तिणरी टल जावे ।

आरत रूद्र ध्यान घट्या सुं,
शान्तिभाव तिणरे मन आवे ॥च०॥४॥
सम्यदृष्टी शुद्ध ज्ञानसे जाणे,
लाय बले खोटो ध्यान ते ध्यावे।
तेथी अनुकम्पा लाय बचावे,
समकित लक्षण ज्ञानी बतावे ॥चतु०॥५॥
भावदया तिणरे शुद्ध भावे,
द्रव्यदया थी भाव ते आवे।
ते थी अनुकम्पा जीव बचाया,
पड़त-संसार सूत्र बतावे ॥चतु०॥६॥
केइएक जीव, जीवाँ ने बचाया,
अणलाधो समकित गुण पावे।
पड़त संसार करे तिण अवसर,
अभयदान देवे शुद्ध भावे ॥चतु०॥७॥
दव बलता जीव शरणे आया,
हाथी अनुकम्पा दिल लायो।
संसार पड़त अरु समकित पायो,
ज्ञातासूत्र में पाठ बतायो ॥चतुर०॥८॥
शून्यचित सूत्र वांचे मिथ्याती,

द्रव्य, भाव रो नाही निवेरो ।
दयाहीन कुपन्थ चलायो,
त्याँ कुगति सन्मुख दियो डेरो ॥चतु०॥९॥
स्वारथत्यागी परउपकारी,
दुखी दर्दी रो दर्द मिटावे ।
ते पिण माठा ध्यान मिटावण,
तिण मे पाप मिथ्याती बतावे ॥चतु०॥१०॥
(कहे) "साधु गृहस्थ ने ओषध देने,
दुःख आरत तिणरो न मिटावे ।
तेथी पाप में गृहस्थ ने केवा,
साधु न करे ते पाप मे आवे" ॥च०॥११॥
(उत्तर) चौमासे उत्पत्ति जीवा री जाणी,
गामानुगाम विहार न करणो ।
त्रिविधे (त्रिविधे) साधू त्यागज कीना,
सूत्र मे साधु ने बतायो निरणो ॥च०॥१२॥
साधु न करे ते पाप मे गावो,
तो चौमासे (मे) साधु ने आणो न जाणो ।
गेही चौमासा मे वन्दण जावे,
(तो) तिणमे एकान्त-पाप बताणो॥च०॥१३॥

वन्दण का तो बन्धा करावे,
चौमासे सेवा रा भाव चढ़ावे।
पन्थी, पन्थ वढ़ावण कारण,
धर्म कही-कही ने ललचावे ॥चतु०॥१४॥
जो साधु न करे ते पाप में आवे,
तो गृहस्थ ने पाप थें क्यो न बतावो।
चौमासे दर्शन अर्थे न जाणो,
इण विध त्याग क्यों न करावो ॥चतु०॥१५॥
राते वखाण सुणावण काजे,
आंतरो पाड़ण त्याग करावो।
वर्षते पाणी वह सुणवा ने आवे,
तिण सुणवा में धर्म बतावो ॥चतु०॥१६॥
गेही रो आणो जाणो सावज,
त्रिविध-त्रिविध भलो नहीं जाणो।
(तो) वखाणादिक ने पाप में केणा,
आया विना किम सुणे वखाणो॥चतु०॥१७॥
जो वखाणादिक सुणवा में धर्म है,
आवा-जावा रो साधु न केवे।
तो आरतध्याण मेटण में धर्म है,

औपधादिक साधू नहिं देवे ॥चतु०॥१८॥
बाहण चढ बखाण मे आवे,
औपधादि देई आरत मिटावे।
दोनो कारज सरीखा जाणो,
शुद्ध भावा रो वेहु फल पावे ॥चतु०॥१९॥
एक में भाव रो धर्म बतावे,
बीजा मे पाप रो बोले वाणी
भोला ने भ्रम मे पाड विगोया,
तेपिण डूबे छे कर कर ताणी ॥च०॥२०॥
(कहे) "उपदेश देई म्हे हिंसा छुडावा,
आहार छोड़ी उपदेश ने जावा।
कोश आतर हिंसा छूटे तो,
आलस छोड म्हे तुर्त ही धावा" ॥च०॥२१॥
(उत्तर) धर्मी नाम धरावण काजे,
भोला जाणे दयागुण खाणी
हिंसा छोडावा मुख से बोले,
पिण काम पड्या बोले फिरती वाणी॥२२॥
किडियाँ, मारा, लटा, गजायाँ,
गेही र पग हेटे चींथ्या जावे।

भेषधारी कहे म्हें हिंसा छोड़ावां,
(तो) उपदेश देवा ने क्यों नहिं जावे॥२३॥
ठोड़ (घर) बेठा उपदेश देवे तो,
दस-बीस जोवां ने दोरा समजावे।
(जो) उद्यम करे चार महिना रे माहीं,
तो लाखां जीवां री हिंसा टलावे ॥२४॥
सौ घरां अन्तर तपस्या करावण,
आलस तज उपदेशण जावे।
सौ पग गया (लाखां कीड़ां री) हिंसा छुटे छे,
तो हिंसा छुड़ावण क्यों न सिधावे॥२५॥
दोक्षा लेनो जाणे सौ कोस ऊपर,
(तो) भेषधारी भेष पेरावा जावे।
एक कोस पर (कीड़ा री) हिंसा छुटे छे,
कोड़ां री हिंसा क्यों न छुड़ावे ॥२६॥
जब तो कहे "बकरादि पँचेन्द्री,
हिंसक री हिंसा छोड़ावण जावां।
कीड़ा-मकोड़ा तो हणे घणाई,
(त्यांरी)हिंसा छोड़ावा कहां-कहां धावां॥२७॥
कीड़ा-मकोड़ादि हिंसक री हिंसा,

छोडावा में म्हें धर्म तो जाणा ।
(पिण) सगले ठिकाने जाय ने हिंसा,
छोडावा रो उद्यम किम ठाणा ॥"॥२८॥
तो इमहिज समझो रे भाई,
कोडादि रक्षा धर्ममें जाणा
मार्गादिक में सगले ठिकाणे,
बचावण रो उन्यम किम ठाणा ॥च०॥२९॥
हिंसा छुडावा सगले न जावो,
तिम ही जीव बचावा रो जाणो ।
जीवरक्षा रो द्वेष धरी ने,
मिथ्यामति क्यों ऊधो ताणो ॥च०॥३०॥
आपणा व्रत री रक्षा कर ओर,
परजीवा रा प्राण बचावें ।
हिंसक थी मरता जाणी ने,
उपदेश देई जीव छुडावे ॥चतुर०॥३१॥
हिंसादि अकृत्य करता देखी,
भेषधारी कहे झट समझावाँ ।
गृहस्थ पग हेटे जीव आवे तो,
तिण ने तो कहे म्हे नाय बतावा ॥३२॥

श्रद्धा जाँरी पग-पग भटके,
न्याय सुणो ज्ञानी चितलाई ।
दोनों पक्ष रा सुण ने वानां,
सत्य ग्रहो तो है चतुराई ॥चतुर०॥२३॥
बकरा री हिंसा छुड़ावण काजे,
(कहे कसाई ने)"पापोने उपदेशदेवा नेजावां"
भोला भरमावण इणविध बोले,
चतुर पूछे तब ज्वाब न पावां ॥च०॥२४॥
श्रावक पग तले चिड़ियो मरे छे,
हिंसा हुवे छे थारे सामे ।
उपदेश देई ने क्यों न छुड़ावो,
श्रावक उपदेश तत्क्षण पामे ॥चतुर०॥२५॥
तब तो कहे म्हें मौनज साधां,
मतमार कह्या म्हां ने पापज लागे ।
थें केता म्हें तो हिंसा छुड़ावां,
बोल ने बदल गया क्यों सागे ॥चतु०॥२६॥
कदी कहै म्हें हिंसा छुड़ावां,
कदी मतमार कह्या पाप केवे ।
देवलध्वज ज्यों फिरे अज्ञानी,

बोल बदल मिथ्यामत सेवे ॥चतु०॥३७॥
(कहे) "हिंसादि अकृत्य करता देखी,
उपदेश देई मे हिंसा छुडावा ।
अकृत्य करता रा पाप मेटण मे,
फुरती करा मे देर न लावा" ॥चतु०॥३८॥
*डफोरसख ज्यो बात या थारी,
काम पड्या से झट नट जावो ।
गृहस्थी रा पग हेटे जीव मर जय,
हिंसा छोडावण तुम नहीं चावो ॥३९॥
तेल ढुलण दृष्टान्त रे न्याय,,
पगतल जीव बचावणो खोटो ।
से दृष्टान्त थी थारो श्रद्धा मे,
हिंसा छुडावण मे होसी टोटो ॥४०॥
युक्ति पे युक्ति सुणो चित लाई,
जीव बचावणो धर्म रे भाई ।
जो जीव बचावा मे पाप बतावे,
वाने उतर (यो) दो समजाई ॥४१॥

*जो कहते हैं, पर करते नहीं, उन्हें डफोरसख कहा जाता है।—सम्पादक

*गृहस्थ रे घर साधु गोचरी पहुंच्या,
गृहस्थ ने अकृत्य करतो देखे।
तेल घड़ा ने फोड़े ने ढोरे,
कीड़ियां रा दर मांहो जावे विशेखे ॥४२॥
(बीचसें) जीव आवे ते तेल से वहता,
तेल वह्या-वह्यो अग्नि में जावे।

---

* जसा कि वे कहते हैं:—

गृहस्थ रे तेल जाय मूण फुट्या,
कीड़ियां रा दल मांहि रेला आवे।
वीच मे जीव आवे तेल सूं वहता,
तेल वह्यो-वह्यो अग्नि मे जावे॥
वेशधारी भूलां रो निर्ण्य कीजे॥ १८ ॥
जो अग्नि उठे तो लाय लागे छे,
त्रसथावर जीव मारया जावे।
गृहस्थ रा पग हेटे जीव वतावे,
तो तेल ढुले ते वासण क्यो न वतावे॥ १६ ॥
पग सूं मरता जीव वतावे,
तेल सूं मरता जीव नहीं वतावे।
यह खोटी श्रद्धा उघाड़ी दीसे,
पण अभ्यंतर अंधारो नजर न आवे॥ २० ॥
(अनुकम्पा ढाल—८)

जो अग्नि उठे तो लाय लागे छे,
(तब) गृहस्थ ने अनरथ रो पाप थावे ॥४३॥
तिणने वर्जे ने पाप छुडावो,
अनरथ होता ने अटकावो ।
जो तिणने तुमे वर्जो नहीं तो,
हिंसा छुडावा यू झूठ सुणावो ॥४४॥
हिंसा छुडावॉ यू मुख से बोले,
तेल सू होतो हिंसा न छुडावे ।
यह खोटी श्रद्धा उघाडी दीसे,
अन्तर अधारो नजर न आवे ॥४५॥
(कहे) "पग से मरता जीव तुमे बतावो,
तेल से मरता तो थें न बतावो" ।
(उत्तर) खोटा बोलो मन र मॅते थे,
म्हारे तेल पगा रो सरीखो दावो ॥४६॥
पग से मरता ने तेल से मरता,
मुनि जीवा री रक्षा में धर्म बतावे ।
म्हारी तो श्रद्धा कठेइ न अटके,
तो अणहूंता सन,पर ते कलक चढावे॥४७॥
कठे कहे "हिंसक (ने) समझावा,"

तेल थी हिंसा करता न वरजो ।
वलि तुमारा हेतु रा उत्तर,
देऊं ते सुण ने रोस म करजो ॥च० ॥४८॥
(कहे) "श्रावक रा पग तल अटवी में,
जीव मरे त्याने क्यों न बचावो*" ।
(उत्तर) थाँ पिण सैं तो जीव बतावाँ,
झूठी वातां क्यों थैं उठावो ॥ चतु० ॥४९॥
थाँरा हेतु थी थारी श्रद्धा सैं,
दूषण आवे विचारी देखो ।
मिथ्या-ज्ञान मिटावण काजे,

---

*जैसा कि वे कहते हैं:—
एक पगहेठे जीव बतावे,
त्याँ मे थोड़ा सा जीवाँ ने बचता जाणी।
श्रावकाँ ने उजाड़ सों मार्ग घाल्यां,
घणा जीव बचे त्रसथावर प्राणी ॥ २४ ॥
थोड़ी दूर बतायाँ थोड़ो धर्म हुवे,
तो घणो दूर बतायाँ घणो धर्म जाणो ।
घणा दूर रो नाम लियाँ बक उठे,
ते खोटी श्रद्धा रो अहिनाणो ॥ चे० ॥ २५ ॥
(अनुकम्पा ढाल—८)

थारा हेतु रो भाखू लेसो ॥ चतुर०॥५०॥
करता विहार मारग मे थारा,
श्रावक मामा मिलवा आवे ।
मार्ग छोडो ने ऊजड जावे,
त्रसथावर री हिंसा थावे ॥चतुर०॥५१॥
श्रावक ने उपटपथ जाता,
त्रसथावर (री) हिंसा करता देखा ।
(जो) हिंसा छुडावा मे धर्म थें मानो,
तो श्रावक ने वर्जणो इण लेखे ॥५२॥
हिंसा छोड़ावणो मुख से बोले,
थोथा बादल जिम ते गाजे ।
श्रावक वन (उजाड) में जोव ने चौंथे,
मौन साजे वर्जता क्यों लाजे ॥चतुर०॥५३॥
कहो पकरा हणना ने समझावा,
(तरा तो कमाई) समझे निश्चय नहिं जाणा
श्रावक ने वन में हिंसा थो न वर्जे,
जहां छूटे हिंसा त्रसथावर प्राणो ॥चतु०॥५४॥
कसाई वेणां माने न माने,
श्रावक ता थारा अनुरागी ।

जो थें वर्जो हिंसा नहीं होवे,
नहिं वर्जो थांरी श्रद्धा भागी ॥चतुर०॥८५॥
हिंसा छोड़ावणो जो थें मानो,
धर्म रो काम यु मुख से बखाणो ।
(तो) श्रावक पग री हिंसा छुड़ाया,
धर्म हुवा रो क्यों नहिं मानो ॥चतुर०॥८६॥
* दोपग (हिंसा) छोड़ाया थोड़ो धरम हुवे,
घणा पग छुड़ाया घणो धर्म जाणो ।
घणा (पगां) रो नाम लिया बक उठे,
तो खोटी श्रद्धा रो अहिनाणो ॥ ८७ ॥
*अन्धा पुरुष रो हेतु देने,

---

* जैसा कि वे कहते हैं:—
थोड़ी दूर बताया थोड़ो धर्म हुवे,
तो घणी दूर बतायां घणो धर्म जाणो ।
घणी दूर रो नाम लियां बक उठे,
ते खोटी श्रद्धा रो अहिनाणो ॥वेश० ॥२५॥
(अनुकम्पा ढाल—८)

*जैसा कि वे कहते हैं:—
कोई अन्धा पुरुष गामान्तर जातां,
आंख विना जीव किणविधि जोवे ।

जीव बतावा मे पाप बतावे ।
तो तेहिज हेतु थी हिंसा छुडावा मे,
तेनी श्रद्धा मे दूषण आवे ॥ चतुर० ॥५८॥
(कोई) अन्धा पुरुष गामान्तर जाता,
आख विना हिंसा किम टाले ।
कीडो मकोडा मारता जावे,
त्रसथावर (जीव)पर पग देई चाले ॥च०॥५९॥
थे पिण सहजे माथे हो जावो,
अन्धा ने हिंसा करता देखो ।
पग पग हिंसा थे न छुडावो,
(तिथो) खोटा बोलण रो तुम लेखो ॥च०॥६०॥
(त्या अध। ने) जताय जनाय ने हिंसा छुडाणी,

काडी माकाडि चींथतो जावे,
त्रसथावर जीवा रा घमसाण होवे ॥निश०॥२६॥
वेषधारी सहने माथे हुइ जाता,
अधा रा पग सू मरता जाताने देखे ।
यह पग-पग जाता ने नहीं बतावे,
तो खोटा श्रद्धा जाणज्यो इन लेखे ॥नि०॥ २७॥

(अनुकम्पा ढाल—८)

पापबन्ध थी करणा दूरा ।
इण कार्य किया थी पोते जो लाजो,
तो जीव बतावा में दोष दे कूरा ॥च०॥६१॥
* आटा री ईल्याँ रो नाम लेई ने,
जीव बचावा में दोषण केवे ।
तेइज हेतु थी त्यारी श्रद्धा में,
हिंसा छुड़ाया में दूषण रेवे ॥चतुर०॥६२॥
ईल्यादि जीवां सहित आटो छे,
गृहस्थ ढोले छे मारग मांयो ।
तपती रेत उनालारी तिण में,

---

* जैसा कि वे कहते हैं:—
इल्यां सुलसुलियां सहित आटो छे,
गृहस्थ सूं ढुले मार्ग मांयो ।
यह तपती रेत उन्हाले री तिण मे,
पड़त प्रमाण होत जुदा जीव काया ॥वेश०॥२६॥
गृहस्थ नहीं देखे आटो ढुलतो,
ते वेषधारियां री नजरां आवे ।
यह पग हेठे जीव बतावे तो,
आटो ढुलता जीव क्यों न बचावे ॥वेश०॥३०॥
(अनुकम्पा ढाल—८)

पड़न मरे हिंसा बहु थायो ॥चतुर०॥६३॥
गृहस्थ रे ज्ञान न पाप लागण रो,
ते कदा थारे समझ मे आयो।
थें हिंसा देखो छोडावणी वेत्रो,
[नो]आने हुरता हिंसा थी क्यों न मुकावो ॥६४॥
[कहे] "गृहस्थ री उपरी सूं जीव मर छे,
सर ठाड़ रताबा ने क्यों नहि जावो*।"
तो उत्तर लिह्वो थारा हेतुरो
हिंसा छुडावा ने थें [क्यों] नहीं धावो ॥६५॥
किणहिक ठार हिंसा छुडावे,
किणहिक ठोर शका मन आणे।
मिथ्या उदय थी समझ पडे नहीं,
अज्ञानी जन तो ऊंधी ताणे ।चतुर०॥६६॥

---

* जैसा कि वे कहते हैं —
उत्यादिक गृहस्थ रे अनेक उपधि सू,
त्रसथावर जीव मुवा ने मरसी।
एक पग हेठे जीव बतावे,
त्यां ने सगलो हा ठौर बतावणा पडसी ॥ ३१
(अनुकम्पा ढाल—८)

गृहस्थ विविध प्रकार री वस्तु थी,
(त्रसथावर) जीवां री हिंसा किधी ने करसी
[जो] हिंसा देखी छोड़ावणो केवे,
तो सगलेई ठोड़ छोड़ावणि पड़सी ॥६७॥
पग-पग ज्वाब अटकता देखो,
तो पिण खोटी रूढ़ न छोड़े।
मोह मिथ्यात में डूब रह्या छे,
जीवरक्षा रा धर्म ने तोड़े ॥चतुर०॥६८॥
हिंसा छोड़ावणो जीव बचावणो,
दोनों ही काम धर्म रे जाणो।
अवसर ज्ञानी जन आदरता,
कर्म निर्जरा ठाण पिछाणो ॥
या श्रद्धा श्री जिनवर भाखी ॥ चतुर० ॥६९॥
हिंसा छुड़ावा में धर्म बतावे,
जीव बचाया में पाप जो केवे।
ऊँधा बोलां री थाप करीने,
खोटा हेतु बहुविधि देवे ॥चतुर०॥७०॥
(मुनि) सब ठामे हिंसा छुड़ावा न जावे।
सब ठामे जीव बचावा न धावे।

अवसर थो हिंसा छुडावे,
अवसर जीव बचावा जावे ॥चतुर०॥७१॥
जीव बचावणो हिंसा छुडावणो,
दोना रो एक ही समझो लेखो ।
एक मे धर्म दूजा मे पापो,
इम श्रद्धे ते मिथ्यामति देखो॥चतुर०॥७२॥
गृहस्थी रा पग हेठे जीव आवे तो,
साधु बताबे तो पाप न चाल्यो ।
भेषधारी तिणमे पाप बतावे,
परतख धोचो कुगुरॉ घाल्यो ॥चतुर०॥७३॥
(कहे) "समवसरण जन आता ने जाता,
केई रा पग से जीव मर जाता ।
जो जीव बचाया मे धर्म होवे तो,
भगवन्त कठेही न दीसे बताया ॥चतुर०॥७४॥
नन्दण मनिहार डेंडको होय ने,
वीर वन्दण जाता मारग मांये ।
तिणने घोड़ मार्‌यो श्रेणिक ना बछेरे,
वीर साधु मामामेल क्यों न बचायो' ॥७५॥
"तेथी जीव बताया मे पाप बताया"

पिण काम पड़े जब फिरता ही देखो ॥८५॥
साधु, साधु थी मरता जीव बतावे,
पाप टले अनुकम्पा गावे।
श्रावक, श्रावक थी मरता जीव बतावे,
झटपट तेने पाप बतावे ॥चतुर० ॥८६॥
श्रावक श्रावक ने(मरता) जीव बतावे,
(तो) किसो पाप लागे किसो व्रत भागे।
तिण रो तो उत्तर मूल न आवे,
थोथा गाल बजावा लागे ॥ चतुर० ॥८७॥
सिद्धान्त (रा) बल विना बोले अज्ञानी,
संभोग (रो) नाम अनुकम्पा में लावे।
गालां रा गोला मुख से चलावे,
ते न्याय सुणो भविजण चित चावे ॥च०॥८८॥
साधु रे संभोग श्रावक से नाहीं,
(तेथी) जीव बतावा में पाप बताओ।
(तो) श्रावक साधु ने जीव बतावे,
तिण में तो धर्म तुमे क्यों गावो ॥८९॥
जद कहे म्हारी हिंसा टलाई,
(तेथी) धर्म रो काम किये सुखदाई।

(तो) श्रावक श्रावक ने (मरता) जो द
(तो) यो पिण धर्म मानो क्यों न भाई॥९०॥
साधु थी मरता जीव बचाया,
श्रावक थी मरता तिम ही बचाया।
एक मे धर्म ने दूजा मे पापो,
ई झगडा थारी श्रद्धा मे मचिया ॥च०॥९१॥
बारा प्रकार रा सभोग भाख्या,
सूत्र समायग माहि देखो।
जीव बताया सभोग लागे,
इसो नाही सूत्तर मे लेखो ॥चतु०॥९२॥
श्रावक, श्रावक ने जोव बताया,
पाप लागे यो मत काढ्यो कूरो।
तिण लेखे जीवॉ रा भेद सिखाया,
थॉरी श्रद्धा मे (होसी) पाप रो पूरो॥९३॥
(कहे) "जीवा रा भेद तो ज्ञान र खातिर,
(वली) दया रे खातिर म्हे पिण बतावॉ।
भूत भविष्य मे जीव बताया,
धर्म रो काम म्हें कहि समझावॉ ॥च०॥९४॥
वर्तमान (काल) पग हेठे आया बताया,

पाप हुवे म्हारी श्रद्धा रे मांई ।"
तो भूल्या रे भूल्या थें मूल से भूल्या,
धर्म तो करणो तिहुंकाल सदाई ॥च०॥९५॥
पापत्याग अरु धर्म रो उद्यम,
तिहुंकाले किया हुवे सुखदाई ।
भूत-भविष्य में धर्म हुवे तो,
वर्तमाने पाप कदापि न थाई ॥च०॥ ९६ ॥
(जो) वर्तमान (में) जीव बताया पापो,
तो भूत भविष्य में (थारे) पाप संतापो ।
(जो)परोक्ष बताया (परोक्षमें)भावो दया करसो,
प्रतख (बताया) सें मिटे प्रतख पापो ॥९७॥
गृहस्थ रा पग हेठे उन्दिर बताया,
परतख पाप गृहस्थ रो टलियो ।
उन्दिर रे-आरत रूदर रो,
महाक्लेश टलवा रो फल मिलियो ॥९८॥
जो थिन संभोगी रो पाप टालण में,
पाप लागे यूं थें कदा भाखो ।
(तो) उपदेशो गृहस्थ रा पाप टालण में,
थारी श्रद्धा सें पाप ने राखो ॥चतु०॥९९॥

इण श्रद्धा रो निर्णय न काढे अज्ञानी,
दया मेटण लियो सभोग शरणो।
पाप छुडाणो सभाग मे नाहीं,
शङ्का हो तो करो भवि निरणो ॥च०॥१००॥
नहीं मारण ने जीव बताया,
सभोग लागे ऐसो बतावे।
तो पाप छुडावण परतख बतावो,
भागलपणो थ.रो श्रद्धा मे आवे ॥च०॥१०१॥
लाय लागी गृहस्थो जब देखे,
(तो) तुर्त बुझावे रक्षा मन धारी।
इण रक्षा रो काम गृहस्थ कर छे,
तिण मे एकात पाप कहे सागधारो॥१०२॥
(कहे) "लाय मे बले जार करज चुके छे,
(बाध्या) कर्म छुटग री निजरा भारी।
बिच पड ज्याने जो कोइ काढे,
वह होवे पाप तणो अधिकारो" ॥१०३॥
इम बळता रे कर्म कटता बताने,
काढणवाला-ने पाप बतावे।
स्यारो तो तब परतोतो आवे,

जो लाय से निसर बाहर न जावे ॥१०४॥
(कहे) "बलता परिणाम सैंठा नहीं रेवे (तो),
अकाम मरण थी दुर्गति जावे ।
(तेथी) थिवरकल्पी ने बाहर निकलणो,
(म्हारो)उपसर्ग मिट्या मन निर्मल थावे"॥१०५॥
रे तुम्हें कहता बलता जावां रा,
कर्म छुटे निर्जरा बहु थावे ।
निज बलवा री बात आई जद,
बाल मरण री तुमें याद आवे ॥च०॥१०६॥
(जो) साधु नामधारी पिण बलता,
परिणाम बिगड़्या दुर्गति जावे ।
(तो) गृहस्थो बलतो बिलबिल बोले,
ते लाय बल्या कर्म केम चुकावे ॥च०॥१०७
ते तो महाआरत रे बस थी,
लाय बल्या संसार वधावे
ते अनन्त संसार रा पाप मुकावा,
दयावन्त त्याँने बाहिर लावे ॥च०॥१०८॥
ज्यां-ज्यां गृहस्थ रा गुण रो वर्णन,
त्यां-त्यां अल्पारम्भी भाख्या ।

बली हलुकर्मीपणो गुणा मे,
  तुमे कहो थारा ग्रन्थ मे दाखया॥च०॥१०९॥
अल्पारम्भी गुण श्रावक केरो,
  उवाइ सुगडाअग मे देखो।
महारम्भो श्रावक नहीं होवे,
  (तेथी) अल्पारम्भी श्रावक रो लेखो॥११०॥
लाय लगावे ते महा अवगुण मे,
  सूत्र माहीं जिन इणविध भाख्यो।
(अत्यन्त) ज्ञानावर्णा आदि कर्म रो कर्त्ता,
  तेथी महाकर्मा प्रभु दाखयो ॥ १११ ॥
महा क्रियावन्त तेने जाणो,
  महा आश्रव कर्मबन्ध नो करता।
परजीव ने महा वेदनदाता,
  एहवा दुर्गुण नो ते धरता ॥ च० ११२ ॥
लाय बुझावे तेना गुण तो,
  भगवती माहीं इणविध बोले।
अल्पकर्म ज्ञानावर्णादि,
  तेथी हलुकर्मा इण तोले ॥ च० ॥ ११३ ॥
अल्पक्रिया अल्प आश्रवो ते छे,

तेथी साठा-कर्म न बांधे।
जीवाँ ने वहु वेदना नहिं देवे,
(तेथी) अल्प वेदना शुभ ने साधे ॥ ११४ ॥
सूत्र रो न्याय विचारी जोवो,
अग्नि लगावे महारंभी (महा) पापी।
तिणने वुझावे ते अल्पारम्भी,
हलुकर्मी यूं वीरजी थापी ॥च० ॥११५॥
(सहजे) लाय वुझावे दो अल्पारम्भी,
तो वलता नर वंचिया (महा) गुण कहिये।
अभयदान रो पिण ते दाता,
शुद्ध परिणामी ते धर्म में लहिये ॥११६॥
(कहे) "लाय वुझावे ते अल्पारम्भी,
तो पिण पापी-धर्मी तो नाहीं।
थोड़ा आरम्भ ने गुण में न श्रद्धां,
आरम्भ सगला पाप रे माहीं" ॥च०॥११७॥
(उत्तर) इम वोले तो जाणो अज्ञानी,
अल्प-महारम्भ (रो) भेद न पाया।
अल्पारम्भी तो स्वर्ग में जावे,
(तेथी)अल्पारम्भीने गुण में वताया ॥११८॥

थारा भ्रम विध्वसन माहीं,
अल्पारम्भो ने स्वर्ग * बतायो।
अल्पारम्भे महार म नाहीं,
यो पिण गुण है बठे हो* गायो॥च०॥११९॥
अग्नि थी मरता जीव बचया रा,
द्वेष थी तुम इहाँ अवगुण बोलो।
"अल्पारम तो गुण में नाही",
[यो]सत्य छोड्यो तुम हिरदामे तोलो।१२०।
अल्पारभ श्रावक [रा] गुण बोले,
निरारभो साधु [रा] गुण जाणो।
तेथी साधु-श्रावक रो धर्म है जुदो,
दो विध धम (इम) सूत्र बखाणो।च०।१२१।

---

* जैसा कि वे कहते हैं —
अन इहां तो भद्रकालिक घणा गुण कह्या। सहजे क्रोध,मान माया, लोभ, पतला, अल्प इच्छा, अल्प आरम, अल्प समारभ एहवा गुण करी देवता हुवे छे॥
(भ्रम विध्वसन—पृ० ४८)

*जैसा कि वे कहते हैं —
परम अल्प आरम्भ, अल्प समारम्भ, अल्प इच्छा कह्या। तिवारे इम जाणिये जे घणी इच्छा नहीं ए गुण छे॥
(भ्रम विध्वसन—पृ० ४८)

(कहे) "अल्पारंभ गुण लाय वुझाया,
साधु वुझाया ने क्यों नहिं लावे।"
सन्दमतो एहो तर्क उठावे.
ज्ञानी उत्तर इण विध देवे ॥चतुर० ॥१२२॥

अल्पारंभ गुण लाय वुझाया,
निरारंभ गुण साधु रो जाणो।
अग्नि आरम्भ रा त्याग न तोड़े,
मिथ्या तर्क थी न करो ताणो ॥ १२३ ॥

सतिचार टल ने व्रत पले जे,
ते काम श्रावक रा धर्म माहीं।
साधु करे नहीं त्याँ कामाँ ने,
ते काम साधु रे कल्प में नाहीं ॥च०॥१२४॥

"जो साधु न करे ते गृहस्थ रे पाप,"
यूँ भोलाने भरमाया काठा।
जे चातुर होय ने ज्वाब पूछे जब,
न टिके मिथ्याति जावे नाठा ॥च०॥१२५॥

(जो) नर, पशु, श्रावक भूखा राखे,
तो हिंसा लागे पेलो व्रत भागे।
अन्न दिया करुणा नहिं जावे,

अतिचार टलवा रो धर्म है मागे ॥१२६॥
साधु रा मातपितादि गृहस्थो,
(जाने) साधु जिमावे तो दूषण लागे ।
गृहस्थी (अपना) मनुष्याँ ने भूखा राखे तो,
दूषण लागे पेलो व्रत भागे ॥चतुर०॥१२७॥
गृहस्थी, गृहस्थी रो थापण नहिं देवे,
दूजो तीजो व्रत तिण रो भागे ।
थापण देदे साधु न केवे,
विण गृहस्थ दिया व्रत रेवे सागे ॥च०॥१२८॥
इम अनेक बोल साधु रे दूषण,
ते गृहस्थी र व्रत रक्षा रा टाने।
(तिथी) गृहस्थ ने साधु रो आचार जुदो,
एक कहे ते मिथ्यात रा धामो ॥च०॥१२९॥
सुणे (वखाण) धर्म आई पडने पाणी,
एकान्त पाप तो तिणने न केवे ।
लाय मे काढ मनुष्य बचाया,
एकान्त पापी रो पद देवे ॥चतु०॥१३०॥
(इम) उलटी कथनी क्यो-कथी ने,
भोला ने कुपन्थ चढाया ।

परगण पूछ्या ज्वाब न आवे,
  शर्म छोड़ी ने भेष लजाया ॥चतु०॥१३१॥
अग्नि थी बलता मनुष्य बचाया,
  अग्नि री हिंसा तिण में थावे।
जो इणविध धर्म मनुष्य बचाया,
  तिण पर खोटा न्याय बनावे॥च०॥१३२॥
(कहे) "पाँच सौ नित्य-नित्य जीवां ने मारे,
  करे कसाई अनारज कर्मों।
जो मिश्र-धर्म होवे अग्नि बुझायाँ,
  तो इणने ही मार्‌याँ हुवे मिश्र धर्मों ॥१३३॥
जो लाय बुझाया जीव बचे तो,
  कसाई (ने) मार्‌या बचे घणा प्राणी।
लाय बुझाया कसाई ने मार्‌या,
  दोयाँ रो लेखो सरीखो जाणी"॥च०॥१३४॥
(उत्तर) खोटा न्याय इम देवे अज्ञानी,
  परतख बोले अनारज वाणी।
अग्नि बुझावणो मनख ने मारणो,
  सरिखो कहे महाअधर्म-प्राणी ॥च०॥१३५॥
मनुष्य मार बकरा ने बचावे,

अग्नि थी बलता मनुष्य निकाले ।
दोया रो एक हो लेखो बतावे,
वे अन्याय रे मारग चाले ॥चतुर०॥१३६॥
कुगुरु रा मत रा श्रावक श्राविका,
अग्नि तो नित हो लगावे बुझावे ।
(ते) मनुष्य रा मारण जेसा महापापी,
थारो श्रद्धा रे लेखे थावे ॥चतुर०॥१३७॥
मोटी मे मोटो मनुष्य रा हिंसा,
अग्नि री हिंसा सूक्ष्म भाखी।
लाय बुझावे ते अल्पारम्भो,
भगवती सूत्र के तिण री साखी ॥१३८॥
बकरा बचावण मनुष्य ने मारे,
अग्नि थी बलता मनुष्य बचावे ।
दोया ने सरीखा कुगुरु केवे,
ते महा मिथ्याति चोडे दावे॥च०॥१३९॥
बकरा बचावण मनुष्य ने मारे,
ते तो परतख के कुकर्मा ।
अग्नि थो बलता मनुष्य बचावे,
अल्पारम्भी ने दया धर्मा ॥च०॥१४०॥

बिन आरंभ नर मरता बचावे,

तिण में जो एकान्त-पाप बतावे।

ते अग्नि रा आरंभ रो नाम लेइ ने,

फोकट भोला ने भरमावे ॥चतु०॥१४१॥

जीवदया रा द्वेषी वेषो,

अणहूंताई चोज लगावे।

बुद्धिवन्त न्याय सूतर रो देवे,

पग-पग कुगुरु ने अटकावे ॥चतुर०॥१४२॥

उगणीसे छीयासी सम्मत,

श्रावण द्वादशी सुखदाई।

ढाल रसाल कुमति मत खण्डण,

चूरू-शहर में हर्षे बनाई ॥चतुर०॥१४३॥

इति आठवीं ढाल समाप्तम्

दोहा

जीवहिंसा छे अति बुरो, तिण मे दोष अनेक।
जीवरक्षा में गुण घणा सुणजो आणि विवेक ॥१॥

ढाल-नवमी

(तर्ज—यो भव, रतनचिन्तामणि सरिखो)

रक्षा देवी सब (ने) सुखदाई,
या मुक्तिपुरी नी माई जी।
साठे नामे दया कही जिन,
दशामा अग रे माई जी ॥
रक्षा धरम श्री जिनजी री वाणी ॥ १ ॥
त्रसथावर रे खेम री करता,
अहिंसा दु:खहर्ता जी।
द्वीप तणी परे त्राण शरण या,
गणधर एम उचरताजी ॥रक्षा०॥२॥
'निर्वाण' 'निर्वृत्ति' नाम छे इणरो,
'समाधि' 'शक्ति' स्वरूपो जी।

'कीर्ति'[५] जग प्रसिद्ध (रो) करता,
 'कान्ति'[६] अद्भुत रूपोजी ॥रक्षा०॥३॥
'रति'[७] आनन्द रे हेतुपणा थी,
 'विरति'[८] पाप निवरती जी ।
'श्रुताङ्गा'[९] श्रुतज्ञान थी उपनो,
 तृप्त करे ते 'तृप्ति'[१०] जो ॥ रक्षा०॥४॥
देही री रक्षा थी 'दया'[११] कहीजे,
 'मुक्ति'[१२] अरु 'क्षान्ति'[१३] (खन्ती या क्षमा) उदारोजी
'समकितनी'[१४] आराधना सांची,
 भवजीवा हिरदा में धारोजी ॥रक्षा०॥५॥
सर्व धर्म अनुष्ठान बढ़ावे,
 'महन्ती'[१५] इणरो नामो जी ।
बीजा व्रत इण रक्षा रे काजे,
 जिन भाखे अभिरामो जी ॥रक्षा०॥६॥
जिन धर्म पावे इण परतापे,

[18] तेथी 'बोधि' कहिये जो।
[17] 'बुद्धि' [18] 'धृति' [19] 'समृद्धि' [20] 'ऋद्धि' [21] वृद्धि,
[22] 'स्थिति' शाश्वतो एथी लहिये जो ॥र०॥७॥
[23] 'पुष्टि' पुण्य रो उपचय इण थी,
[24] समृद्धि लावे 'नन्दा' जो।
जीवा रे कल्याण री कर्ता,
[25] 'भद्रा' भणे मुनिन्दा जो ॥रक्षा०॥८॥
[26] 'विशुद्धि' निर्मलता दाता,
[27] लब्धि री दाता 'लब्धि' जो।
सब मत मे प्रधानता इणरी,
[28] विशिष्ट 'दृष्टि' प्रसिद्धो जो ॥रक्षा०॥९॥
[29] 'कल्याणा' कल्याण री दाता
[30] 'मंगलिक' विघ्न मिटावे जो।
[31] हर्ष कर तेथी यह 'प्रमोदा'

[३२]
'विभूति' इणथी आवे जी ॥रक्षा०॥१०॥

जीव बचायां जीवां री रक्षा

[३३]
'रक्षा' इण रो नामो जी ।

ज्ञानी होवे समझे ज्ञान सें

रक्षा धर्म रो कामो जी ॥रक्षा०॥११॥

भारीकर्मा लोगां ने भ्रष्ट करण ने

(जीव) रक्षा में पाप बनावे जी ।

त्यांने कुगुरु थे' प्रत्यक्ष जाणो'

'ते दीर्घ संसार वधावे जी ॥रक्षा०॥१२॥

जीवरक्षा सूत्तर री वाणी

तो पाप कहो किण लेखे जी ।

अन्तर आंख हिया री फूटी,

ते सूत्र सामो नहीं देखे जी ॥रक्षा०॥१३॥

[३४] [३५]
'सिद्धिआवास' अरू 'अनाश्रवा'

[३६]
केवली केरो 'स्थानो' जी ।

[३७] [३८]
'शिव' 'समिति' सम्यक पर वृत्ति,

[३९]
'शील' मन समाधानोजी ॥रक्षा०॥१४॥

४०
हिंसा उपरति 'संयम' कहिये,
४१
'शीलपरोवर' जाणो जी।
४२ ४३ ४४
'संवर' गुप्ति 'व्यवसाय' नामे,
निश्चय स्वरूप थी जाणोजी ॥रक्षा०॥१५॥
४५
'उच्छय' भाव उन्नतता समझो,
४६
'यज्ञ' भाव पूजा देवा री जी।
गुण आश्रय रो स्थानक निर्मल,
४७
'आयत्तन' नाम छे भारी जी॥रक्षा०॥१६॥
४८
'यजन' अभयदान थी जाणो
जीवरक्षा रो उपायोजी।
तेथी यतना दया ने कहिये,
पर्याय नाम कहायो जी ॥रक्षा०॥१७॥
जीव बचाया मे पाप बतावे,
ते कुपथे पड़िया जी।
परतख पाठ देखे नहीं भोला
हिरदा मिथ्यात से जड़ियाजी ॥र०॥१८॥

४९
'प्रमादअभाव' इणो ने कहिये

आरते धीर वंधाये जो ।

५०
'आश्वासन' छे नाम इणो रो,

सूत्र में गणधर गावे जो ॥ रक्षा० ॥ १९ ॥

५१
'विश्वास' पावे अन्य ने देवे,

दया भणोतो जाणो जो ।

भयभीत प्राणी ने अभय जो देवे,

५२
ते 'अभय' नाम परमाणो जो ॥२०॥२०॥

५३
'अमाघात' ते अमारी कहिये,

(इण रो) श्रेणिक पड़ह पिटायो जो ।

दयाहीण तो पाप बतावे,

सूत्र रो पाठ उठायो जो ॥ रक्षा० ॥ २१ ॥

५४ ५५
'चोखा' 'पवित्रा' अति ही पावन,

दोनां रो अथ एको जो ।

५६
'भावशुचि' सर्व भूत दया थी,

५७
पवित्र 'पूता' देखो जो ॥ रक्षा० ॥ २२ ॥

अथवा पूजा अर्थ अणो रो,
भाव से देव पूजिजे जो।
द्रव्य सावज पूजा हिंसा मे,
ते इहा नाय गणोजे जी ॥ रक्षा० ॥ २३ ॥

५८ ५९ ६०
'विमल' 'प्रभासा', अरु 'निर्मलतर',
साठ नाम प्रभु भाख्या जो।
प्रवृत्ति और निवृत्ति रा योगे,
भिन्न-भिन्न नाम ये दाख्या जी ॥र०॥२४॥

नहिं हणनो निवृति जाणो,
परवरतो गुण रक्षा जो।
प्रवृति निवृति दोनों ओलखाया,
या (साठ) नामा रो दीनो शिक्षा जी ॥२५॥

त्रिविधे-त्रिविधे छ काय न हणनो,
हणने तो धर्म बतावे जी।
त्रिविधे-त्रिविधे जो रक्षा करण में,
पाप कहि धर्म लजावे जी ॥ रक्षा० ॥२६॥

नहिं हणनो ने रक्षा करणो,
ते प्रभु आज्ञा आराधे जो।

याही बात सभामें परूपे,
(त्याँने) वीर कह्या न्यायवादी जो॥र०॥२७॥

प्राणी, भूत, जीव, सत्व री,
अनुकम्पा कोई करसी जी ।
सातावेदनी कर्म ते बांधे,
पुण्यश्री ने वरसी जी ॥ रक्षा० ॥ २८ ॥

भय पाया[१] ने शरणो देवे,
दया जीव विश्रामो जी ।
पंखी[२] गगन तिसिया[३] ने पाणी,
भूखो[४] भोजन रे ठामो जी ॥रक्षा०॥२९॥

जहाज[५] समुद्र तिरण उपकारो,
चोपद[६] आश्रम थानो जी ।
रोगी[७] औषध बल सुख पावे,
अटवी[८] माथ (सु) प्रमाणो जी ॥ र० ॥३०॥
(इण) आठाँ थी अधकी अहिंसा,

सूत्रपाठ पिछाणो जी ।
थोडो थोडो गुण आठ में दाख्यो,
सम्पूर्ण रक्षा में जाणो जी ॥ रक्षा० ॥३१॥
अश तो रक्षा आठा में होवे,
ते एक देश दया जाणो जी ।
सब अश रक्षा सर्व दया में,
(तेथी) उत्कृष्ट इणने पिछाणो जी ॥र०॥३२॥
सरजोर| खेमकरी कही इणने,
मूलपाठ र माहे जो ।
रक्षा खेम रा अर्थ ही परगट,
तेथा रक्षा धर्म सुखदाई जी ॥रक्षा० ॥३३॥
जोवरक्षा रा द्वेषी ऐसी,
रक्षा में पाप बतावे जा ।
दया-दया तो मुख से बोले,
देही-रक्षा दया उठावे जी ॥ रक्षा० ॥ ३४ ॥
माहण माहण कह्यो अरिहता,
(तेथी) मनमार कह्या नहिं पापो जी ।
अन्तर नयन हिया रा फूटा,
(कर) मतमार में पाप री थापो जी ॥३५॥

(कहे) "रक्षा करतां प्राणी मर जावे,
(तेथी) रक्षा में पाप वतावाँ जी ।
जो धर्मकारज में हिंसा होवे,
ते धर्म ने पाप में गावां जी" ॥
चतुर सत्य रो निर्णय कीजे ॥रक्षा०॥३६॥
जिण रक्षा में जीव मरे नहीं,
केवल जीवां री रक्षा जी ।
तिण में भी थें पाप वतावो,
तो खोटो थांरी शिक्षा जी ॥ रक्षा०॥ ३७ ॥
श्रावक वन्दण ने नित आवे,
जीव घणा नित मारे जी ।
ते वन्दणा ने पाप में केणो,
तुम श्रद्धा निरधारे जो ॥रक्षा०॥३८॥
(कहे) "आवण-जावण में जीव मरे छे,
ते तो आरंभ माँई जो ।
वन्दणा ने म्हें धर्म में मानां,
भाव अच्छा सुखदाई जो" ॥रक्षा०॥३९॥
(उत्तर) तो इमहि तुम समझो चतुरनर,
रक्षादि धर्म रे माँई जो ।

हलण चलण थी जीव मरे तो,
आरँभ समझो भाई जो ॥रक्षा०॥४०॥
आरंभ ने अगवाणी करने,
रक्षा में पाप न भाखो जी।
परिणाम आछा है धर्म रे मॉई,
थे श्रद्धा सूधी राखो जो ॥रक्षा०॥४१॥
थावर त्रस हिंसा सूतर में,
अल्प महारंभ बोले जो।
थावर सूक्ष्म हिंसा कहिये,
त्रस री मोटी खोले जी ॥रक्षा०॥४२॥
त्रस में स अपराधी री छोटी,
निर-अपराधी री मोटी जो।
छोटी रा योग थी मोटी छूटे तो,
छूटी ते किम हुवे खोटी जो ॥रक्षा०॥४३॥
(इम) छोटी रा जोग थी मोटी हिंसा,
छोडे छोडावे भल जाणे जो।
निजनी, परनी, हरकोई नी,
(तन) जानो तो शुद्ध पराणे जी॥रक्षा०॥४४॥
इम मोटी हिंसा छाडे छोडावे,

ते (तो) धर्म रो मारग जाणो जी,

तिण मांही जे पाप बतावे,

ते पूरा मन्द अयाणो जी ॥रक्षा०॥४५॥

(इम) पंचेन्द्रिय मारे मांस रे अर्थे,

तेनी हिंसा छोड़ावे अनेको जी।

(तेने) अचित दिया में पाप परूपे,

ते डूबे छे विना विवेको जी ॥ रक्षा० ॥४६॥

जीव बचाया में पाप कहे छे,

कुयुक्ति लगावे खोटी जी।

ते रक्षा रा द्वेषी अनार्य यूं बोले,

राखण आपनी रोटी जी ॥ रक्षा० ॥४७॥

(कोई) अनुकम्पा-दानमें पाप परूपे,

त्यांरी जीभ वहे तरवारो जी।

पेहरण सांग साधां रो राखे,

धिक त्यांरो जमवारो जी ॥ रक्षा० ॥४८॥

साधु रो विरुद धरावे लोकाँ में,

बाजे भगवन्त-भक्ता जी।

जीवरक्षामें पाप बतावे,

(त्याँरा) तीन व्रत भागे लगता जी॥रक्षा०॥४९॥

जोव बचाया मे पाप परूपे,
ते जोव दया ने त्यागे जी।
तोन काल री रक्षा ने निन्दो,
(निगर्थ)पहिलो महाव्रत भागे जो॥रक्षा०॥५०
रक्षा मे पाप तो जिनजी कह्यो नहीं,
(रक्षा मे) पाप कह्या झूठ लागे जो।
इसडा झूठ निरन्तर बोले,
त्यॉरो दूजो महाव्रत भागे जो॥रक्षा०॥५१॥
जोव बचाया पाप जो केवे,
वा जोवा री चोरी लागे जो।
वले आज्ञा लोपी श्री अरिहन्त नी,
तीजो महाव्रत भागे जो ॥ रक्षा०॥५२॥
जीव बचावामे पाप बतावे,
ज्यारा श्रद्धा घणो छे गन्दो जो।
ते मोह मिथ्यात मे जाडिया अज्ञानी,
त्याने श्रद्धा न सूझे सूं सोजो ॥रक्षा०॥५३॥
(याने) पूछ्या कहे म्हें दयाधर्मी छा,
दया तो देगे री रक्षा जो।
तिण रक्षा मे पाप बतावो,

थें दया रो न पाया शिक्षा जो ॥रक्षा०॥५४॥

जीव-रक्षा ने दया नहीं माने,

ते निश्चय दया रा घाती जो ।

त्यां दयाहीनने साधू श्रद्धे,

ते पिण निश्चय मिथ्याती जो ॥ रक्षा० ॥५५॥

(कहे) "साधु ने जीव बचावणो नाहीं,

(जीव) रक्षा ने भली न जाणे जी ।"

(उत्तर) ते रक्षाधर्म रा अजाण अज्ञानी,

इमही चर्चा आणे जी ॥ रक्षा० ॥५६॥

(कहे) "साधु तो जीवां ने क्याने बचावे,

ते तो पच रह्या निज-कर्मों जी ।"

त्यांरे लेखे ओ जीव-दया रो,

उपदेशणो नहिं धर्मो जी ॥ रक्षा० ॥५७॥

जीव मारे ते कर्म पचे छे,

(तिण ने) उपदेशे केम छुड़ाओ जी ।

जद कहे कर्म-बन्ध टलावां,

तो मरे तेना क्यों न टलाओ जी ॥रक्षा०॥५८॥

(हिंसक ने) पाप कर्म करता थी बचावे,

तिण में तो (थें) करुणा बतावो जी ।

(तो) मरणवालो पिण पाप थी बचियो,
तेनो करुणा मे पाप क्यो गावोजी॥र०॥५९॥
हिंसक (री) करुणा मे धर्म बतावे,
मरणेवाला री मे पापो जी।
या खोटी श्रद्धा परतख दीसे,
जे थापे ते पामे सन्तापो जी ॥रक्षा०॥६०॥
(कहे) "छकाया रा शस्त्र जीव अव्रती,
(त्यांरो) जीवणो-मरणो न चावे जी।"
तो पाणी थी उन्दिर माखा काढो,
(तेथी] थारी श्रद्धा खोटी थावेजी ॥रक्षा०॥६१।
(कहे) 'म्हें तो जीवणो मरणो न चावाँ,
पाप टालणो चावा जी।"
(उत्तर) ना जीवरक्षा विण पाप टालण मे,
स्व-पर नो पाप बचावां जी ॥रक्षा०॥६२॥
मारण ने मरणेवाला रो,
पाप छोडावा बचावा जी।
मरणेवाला री दया किया सू,
घातक रा पाप छुडाया जी ॥रक्षा०॥६३॥
जीव गरीब, अनाथ दुखी री,

अनुकम्पा जिनजी बताई जी ।
त्यांने बचावा में पाप बतावे,
या श्रद्धा दुःखदाई जी ॥रक्षा० ॥६४॥
जीवां री हिंसा असंजम जीतव,
ते तो मुनि नहिं चावे जी ।
जीवां री रक्षा संजम जीतव,
ते [तो] चावे गुण पावे जी ॥रक्षा०॥६५॥
जीवां री हिंसा असंजम जीतव,
[तिणरा] त्याग सूतर में आया जी ।
जीवरक्षा रा त्याग न चाल्या,
[प्रभु] जीवरक्षा रा गुण गाया जी ॥रक्षा०॥६६॥
जीवां री रक्षा में पाप होतो तो,
रक्षा रा त्याग करातां जी ।
[पिण] रक्षा में तो बहु धर्म बतायो,
जीवरक्षा जिन चाता जी ॥रक्षा०॥ ६७॥
त्रिविधे-त्रिविधे मुनि त्राता कहिये,
त्राता रक्षक जाणो जी ।
(तेथो) छकाया रा पीयर साधु,
रक्षा रो गुण पिछाणो जी ॥रक्षा०॥ ६८ ॥

मरता जीव ने कोई बचावे,
जामे पाप बतावे जी ।
ते पाप बताया समकित नासे,
जारा मूल-उत्तर व्रत जावे जी ॥र०॥६९॥
(जो कहे)"त्रिविधे-त्रिविधे जीव-रक्षा न करणो"
(उत्तर] तो हिंसक री हिंसा छोडाया जी
मरता जीवा री रक्षा होसी,
थारी श्रद्धा सु पाप कमाया जी ॥र०॥७०॥
"बीच मे पड़ पाप नाय छोडावणो,'
इमहो थे धर्म बतावो जी ।
तो हिंसक पाप करे तिण बीच मे
उपदेश देण क्यों जावो जी ॥ र०॥ ॥७१॥
छे कारण जीव हिंसा करे कोई,
अहित अबोध ते पावे जी ।
जीवरक्षा थी समकित पावे,
अहित त्रिकाल न थावे जी ॥रक्षा ॥७२॥
जीवहिंसा प्रभु खोटी बताई,
(आठ) कर्मा री गाठ बधावे जी ।
जीवरक्षा प्रभु आछी भाखी,

कर्म-बंध खपावे जो ॥ रक्षा० ॥ ७३ ॥

हिंसा माहीं धर्म श्रद्धे तो,

बोध-बीज रो नासो जी ।

जीवरक्षा में पाप बतावे,

मिथ्यात में होवे वासो जो ॥ रक्षा० ॥७४॥

प्राणी जीवने दुःख जो देवे,

ते दुःख पामे संसारो जी ।

अनुकम्पा कर दुःख छुड़ावे,

सुख पावा रो (सूत्र) विस्तारो जी॥रक्षा०॥७५॥

केई साधु नाम धराय करे छे,

जीवरक्षा में पाप री थापो जो ।

(कहे) "प्राण, भूत, जीव ने सत्तव,

रक्षा में एकंत-पापो जी" ॥ रक्षा० ॥७६॥

(एवी) ऊंधी परूपणा करे अज्ञानी,

(त्याँने) ज्ञानी बोल्या धर प्रेमो जी ।

थां भूंडो दीठो भूंडो साँभलियो,

भूंडो जाण्यो एमो जो ॥ रक्षा० ॥ ७७ ॥

जीव बचाया पाप परूपे,

या मूरख नर री वाणी जो ।

ते भारीकर्मी जीव मिथ्याती,
 (त्यॉ) शुद्धबुद्धि नाहिं पिछाणीजो॥रक्षा०॥७८॥
त्या निरदयी ने आरज पूछ्यो,
 थाने बचाया धर्म के पापो जो।
तब कहे "म्हाने बचाया धरम छे,"
 मॉंच घोल ने किधो(शुद्ध)थापोजी।रक्षा०।७९।
(ज्ञानीकहे) थाने बचाया थे धरम जो श्रद्धो,
 तो सर्वजीवा रो इम जाणो जी।
ओरा ने बचाया पाप परूपो,
 थें खोटी क्यों करो ताणो जी॥रक्षा०॥८०॥
रक्षा मे पाप बतावे त्याने,
 कीधा धर्म सू न्यारा जो।
अग उपाग रा मूलपाठ में,
 गणधरजो विस्तारा जो॥ रक्षा० ॥ ८१ ॥
पर ने बचाया पाप परूपे,
 निज ने बचाया में धर्मो जी।
या श्रद्धा विकलॉं री ऊंधी,
 नहि जाणे पूरो मर्मो जी ॥ रक्षा० ॥ ८२ ॥
अर्थ अनर्थ धर्म रे काजे,

हिंसा ने हिंसा जाणे जो ।
त्यांने शुध समदृष्टि कहिये,
जिन-आगम यों बखाणे जो ॥ रक्षा० ॥८३॥
(कहे) "धर्म रे काज आरम्भ करे तो,
समकितरत्न गमावे जो ।"
(उत्तर) तो साधुवन्दण ने आरंभ करता,
हर्षी-हर्ष्या क्यों जावे जो ॥ रक्षा० ॥ ८४ ॥
साधु रो वन्दण धर्म रो कारज,
ते आरम्भ धर्म रे काजे जो ।
वन्दणकाज आरम्भ करे त्यांने,
'मिथ्याती' कहना क्यों लाजे जो॥रक्षा०॥८५॥
(कहे) "वन्दन (दर्शन) काजे आरंभ कोधो,
ते आरंभ खोटो जाणो जी ।
आरम्भ करने दर्शन कीदा,
ते दर्शन धर्म पिछाणो जो ॥ रक्षा० ॥८६॥
जो आरम्भ ने धर्म में जाने,
तिण री श्रद्धा खोटो जो ।
आरम्भ ने आरम्भ पिछाणे,
दर्शन शुद्ध कसोटो जो" ॥ रक्षा० ॥ ८७ ॥

पोता रो सेवा रो लाभ धरीने,
भोला ने यो भरमावो जी।
श्रावक वत्सलताने उठावा,
थे इमही गाथा क्यों गावो जी ॥रक्षा०॥८८॥
(कहे) "छकाय जीवा रो घमसाण करने,
श्रावक ने जीमावे जी।
उणने मन्दबुद्धि कह दियो भगवन्ते,
तिणने धर्म किसी विध थावे जी"॥रक्षा०॥८९॥
[उत्तर] जो छकाय जीवा रो घमसाण करने,
साधु ने वन्दन आवे जो।
उणने मन्दबुद्धि थे मानो ?
थारे धर्म किसी विध थावे जी॥रक्षा०॥९०॥
(कहे] "आरम्भ कारज मन्दबुद्धि म।
वन्दन आवतो आछो जो"।
[तो] श्रावक वत्सलता थी जिमावे,
तिणरो उत्तर देवो साचो जो ॥रक्षा०॥९१॥
[कहे] "साधर्मी वत्सलता जाणी,
श्रावक ने जिमावे जो।
तिण मे एकान्त पाप बताता

धर्म श्रद्धे तो समकित जावे जी"॥रक्षा०९२॥

(उत्तर) या श्रद्धा थांरी प्रत्यक्ष खोटी,

वन्दन रा थें भूखा जी।

तिण हेते आरम्भ करे जद,

भाव बतावो चोखा जी॥ रक्षा० ॥ ९३ ॥

साधर्मी-वत्सलता मोटी,

समकित रो आचारो जी।

तिण में एकान्त-पाप बतावो,

मिथ्या थारो व्यवहारो जी॥ रक्षा०॥ ९४॥

वन्दन आरम्भ (श्रावक) वत्सल आरंभ,

दोनों सरिखा जाणो जी।

वन्दन भाव निर्मल साखो,

थें वत्सल खोटा मानो जी॥ रक्षा०॥९५॥

ज्ञानी तो दोनों ही सरिखा जाणे,

थांने ज्वाब न आवे जी।

एक ने थापे ने एक उथापे,

ते मूरख ने भरमावे जी॥ रक्षा० ॥ ९६ ॥

कोई तो जीवां ने मरता बचावे,

कोई करे सेवा साधर्मी जी।

तिण मे एकान्त पाप बतावे,
ते एकान्त मिथ्याकर्मी जो ॥रक्षा०॥ ९७ ॥
कोई जीवॉ रा दु ख मेट्या मे,
एकान्त पाप बतावे जो
त्याने जाण मिले जिन धर्म रो,
(तब) किण विध मारग लावे जी ॥रक्षा०॥९८॥
लोह नो गोलो अग्नि तपायो,
ते अग्निवर्णे कर तातो जी ।
[ते] पकड सडासा लायो तिण पासे,
(कहे) बलतो गोलो झेलो हाथो जी ॥र०॥९९॥
(जब) दयाद्रोही हाथ पाछो ले ज्यो,
तब जाण पुरुष कहे त्याने जी ।
थे हाथ पाछो ल्यो रो किण कारण,
थारी श्रद्धा मन राखो छाने जी ॥र०॥१००॥
जद कहे गोलो म्हे हाथ मे ल्या ता,
(म्हारो) हाथ बले दु ख पावा जी ।
(तो थारा) हाथ बालता ने जो म्हे बरजा,
तो धर्म के पाप कमावा जी ॥र०॥१०१॥
(कहे) "(म्हारा) हाथ बलता ने जो कोई बरजे

तिणने तो होसी धर्मो जी।"

[तो] दूजा रा हाथ बालता [ने] वरजे,

ते में क्या कहो अधर्मो जी ॥ रक्षा०॥१०२॥

इम सर्व जाव थे सरीखा जाणो,

थें सोचा देखो मन मांई जी।

दुःख मेटण में पाप बतावा रो,

कुबुद्धि तजो दुःखदाई जी ॥रक्षा०॥ १०३॥

थारा हाथ जलाता ने वर्जे,

ते में तो धर्म बतावो जी।

औरां रा राखे तो पाप बताओ,

[थें] एसीं क्यों कुमति ठावो जी ।रक्षा०।१०४।

जो जीव बचवा में पाप कहे छे,

रुले ते काल अनन्तो जी।

विपरीत श्रद्धा रा फल है खोटा,

भाख गया भगवन्तो जी ॥रक्षा०॥१०५॥

साधां रे काजे छःकाय हणी ने,

जागा करे छे त्यारो जी।

ढोले, लीपे, छावे, संभाले,

ते साधु करे इखत्यारो जी ॥ र०॥१०६ ॥

अनन्त जोवा री घात हुई तिहा,
हर्ष से करे निवासो जी।
पूछ्या थो कल्पनीक बतावे,
विकला रो जीवो तमाशो जी॥रक्षा०॥१०७॥
(कहे) "धर्म रे कारण हिंसा कीधा,
बोध बीज रो नासो जो।"
तो साधु काजे हिंसा करा ते,
तिण घर मे क्यो करो बासोजी॥रक्षा०॥१०८
'पुरुपान्तकड' रो नाम लेई ने,
सेज्जातर धर्म बतावो जी।
धर्म रे काजे हिंसा हुई यहा,
तेने मिथ्यात क्यों न बतावोजी॥रक्षा०॥१०९॥
(कहे) "दर्शन धर्म अरु हिंसा पाप मे,
दोनो माना न्यारा जी।"
(उत्तर) तो साधर्मी वत्सलता धर्म मे,
हिंसा पाप मे धारा जी ॥रक्षा०॥११०॥
उगाडे मुख बोलो (थाने) आहार आमत्रे,
(वलि) मुख खुले बोल बेरावे जी।
जोव असख्य, रुप्या तुम काजे,

(इणसें) धर्म पाप सूं धावे जी ॥रक्षा०॥१११॥
(कहे) "दान देवा रो तो धर्म है मोटो,
अजतना रो पाप सें मानां जी।"
(उत्तर) तो वत्सलता रो तो धर्म है मोटो,
अरंभ पाप वखाणां जी ॥रक्षा०॥११२॥
एवा अनेक निज कामां में,
पाप ने धर्म बतावे जी।
अनुकम्पा उपकारे (जो कदा) आरंभ,
तो अनुकम्पा पाप में गावे जी ॥रक्षा०॥११३॥
एकेन्द्रिय मरे पँचेन्द्री रक्षा,
(तिण में) एकान्त-पाप सिखावे जी।
एकेन्द्री मारी ने साधाँ (पंचेन्द्रिय) ने देवे,
तिण ने तो धर्म बतावे जी ॥रक्षा० ॥११४॥
छः काया हणतो साथे जावे,
(तिण ने) रस्ता री सेवा बतावे जी।
त्याग कराय साथ ले जावे,
धर्म रो लोभ दिखावे जी ॥ रक्षा० ॥११५॥
निज स्वारथिया आहार रा अर्थी,
भोलां ने भरमावे जी।

गाडी घोड़ा लश्कर रे साथे,
उमाया उमाया जावे जी ॥ रक्षा० ॥११६ ॥
स्वारथे हिंसा याद न आवे,
पर-उपकार मे [झटपट] गावे जी ।
अट्टार पाप रो नाम लेई ने,
मूरख ने भरमावे जी ॥ रक्षा० ॥ ११७ ॥
[कहे] "आरम्भ लागा उपकार हुवे तो,
झूठ चोरी थो पिण होसी जी ।"
[उत्तर] [इम] अठारहो पापा रो नाम वनावे,
ते पर-उपकार रा रोपो जी ॥रक्षा०॥११८॥
चोरी करा थारा दर्शन खातिर,
[कोई] कूडो माख भरो धन लावे जी ।
तिन धन था थारा दर्शन कीधा,
[थलो] थारी भावना भावे जी॥रक्षा०॥११९
आरम्भ कर आयो दर्शन काजे,
तिणने धर्म यतावो जी ।
तो चोरी-जारी रा धन थो वधा,
तिण मे पिण धर्म दिखावो जी ।रक्षा०।१२०॥
(कहे) "चोरी, जारी खोटो गवारी,

दर्शन अर्थी न सेवे जी।
आरम्भ बिन तो आइ न सके,
(तेथो)आरम्भ कर दर्श लेवे जो"॥रक्षा०॥१२१॥
(उत्तर) (तो) उपकार में तुम्हें इमहिज जाणो,
उपकारी चोरी न सेवे जी।
कुशीलाख व्यभिचार पाप ने,
उपकारी तज देवे जी ॥ रक्षा० ॥ १२२ ॥
इमहिज जीवरक्षा में जाणो,
चोरी आदिक नहिं सेवे जो।
अल्पारम्भ बिन (महा) रक्षा न हो तो,
आरम्भ ने आरम्भ केवे जी ॥रक्षा०॥१२३॥
आरम्भ उपकार जुआ-जुआ छे,
इमहिज रक्षा जाणो जी।
उपकार रक्षा धर्म रो अंग,
आरम्भ अलग पिछाणो जो ॥रक्षा०॥१२४॥
जिन-मारग री नींव है रक्षा,

खोजो हुवे ते पावे जो।
जीव बचाया धर्म है निर्मल,
दधि मथिया घी आवे जो ॥ रक्षा० ॥१२५॥
जीवरक्षा में पाप बतावे,
ते जल मे लाय लगावे जो।
अमृत थी मरणो कोई केवे,
ते मिथ्यावादी कहावे जो। रक्षा० ॥१२६॥
जीवरक्षा श्री जिनजी रो वाणो,
दशमे अग बखाणी जो।
जो करसी भवसागर तिरसी,
मनवछित सुखदानी जो ॥रक्षा०॥१२७॥
उगणीसे छ्यासी सम्मत में,
सुदी भादव एकादशमी जो।
ढाल जोडी रक्षा दीपावणी,
तिमिर मिटावण रश्मी जो ॥रक्षा०॥१२८॥
मालचन्द कोठारी र कमरे,

चूरू कियो चोमासो जी ।

काठारचां शुद्ध श्रद्धा धारी,

थामो ज्ञान प्रकाशो जी ॥रक्षा० ॥१२९॥

इति नवमी ढाल सम्पूर्णम् ।

ॐ शान्तिः ॐ शान्तिः ॐ शान्तिः

दयादान प्रतिपादक

श्रीगब्बूलालजी महाराज

विरचित—

पद्य-संग्रह

॥ श्रीगन्नूलालजी कृत ढाल

दानके गुण को लेवो जान
दान से पावोगे कल्याण ॥टेक॥
प्रथम श्री ऋषभदेव भगवान,
हुए श्रीचौविसमे वृषमान।
सभी ने दिया है वर्षो दान,
शास्त्रमे है जिसका परमान ॥

दोहा

एक क्रोड आठ लाख सोनैया
हाथसे देते दान।
दु ख मिटाया दुखी जीवका,
पाया पद निर्वान ॥
इसीसे समझा सकल जहाना ॥दान०॥१॥
सुत्र ठाणायग मझार,
दान फरमाया दस प्रकार।
यथा अर्थ लो हिरदयमें धार,
तिरने चाहो यदि ससार ॥

दोहा

अनुकम्पा सग्रह भय, कालुणि लज्जा जान।
गारव अधर्म धर्म आठवा, काहोइ कृत दान ॥

शास्त्रका क्रम लिया है जान ॥दान०॥२॥

दुःखी दीन और अनाथ, अन्न पाणी विन दुखपात।
अचित वस्तु दे मिटावे दुःख, दयासे करदेवे सब सुख।

दोहा

अपना धर्म जावे नही, बांधे पुण्य अपार।
प्राणीमात्रके लिये ये दान जो देवे सुख श्रीकार
कहा अनुकम्पा दान बयान ॥दान० ॥३॥

उदाहरण देते इसपे खास,
सूत्र रायप्रसेनी लोविमास
राय परदेशीको समझाय,
दिया अनुकम्पा दान बताय

दोहा

सतरे सौ पचास गाँवकी,
जितनी आमद आय।
उसी खर्चसे दानकी शाला,
उसने दी खुलवाय॥
अन्तमें पाया स्वर्ग विमान ॥दान०॥४॥

भगवती सूत्रके मंझार,
चला है श्रावकका अधिकार।

तुगिया नगरी थी सुखकार,
वसें वहा श्रावक व्रतके धार ॥

दोहा

दान देनेके कारण,
उनके रहते खुले किंवाड।
भिक्षाचरका प्रवेश चाहते,
दिलके वडे उदार ॥
वे थे जैन धर्मके जान ॥दान०॥७॥

सभी श्रावकका यही आचार,
वीर फरमाया शास्त्र मझार।
खुलासा किया है टीकाकार,
देख लो अपने नयन उघार ॥

दोहा

दुखी जीवको दान जो देना,
है अनुकम्पा प्रसिद्ध।
शास्त्र वचनको प्रमाण करके,
छोडो अपनी जिद्द ॥
इसीमें है सबका कल्याण ॥दान॥६॥

दान अनुकम्पा उठाना चाय,

युक्तियाँ खोटी मनसे लगाय ।
सदा ही अपना स्वार्थ चाय,
औरको देना दिया उठाय ॥

दोहा

अनन्त संसार बढ़ाय के,
जावे जन्म को हार ।
प्राणीमात्रसे द्वेष बँधे है,
देखो शास्त्र मँझार ॥
दसवें अंगमें है यह ज्ञान ॥दान०॥७॥
क्षमादि धर्म्म निभाने काज,
मुनीको दे संजमका साज ।
अशनादिक चतुर्दश जानो,
फ़ासुक निर्दोषो मानो ॥

दोहा

भव परम्परा घटायके,
बाँधे पुण्य अपार ॥
स्वर्गादिकको ऋद्धी पावे,
पावै मोक्ष दुवार ॥
यही करता सबका कल्याण ॥दान०॥८॥

ई सुरस ऋषभ देव पाया,

कुंवर श्रीयास वहराया।

वहराया दाखोका पानी,

शरसरूप जशोमति रानी ॥

दोहा

नेम राजुल हो गये,

धाइसमाँ जिन राज।

तोरण जाकर पशु बचाये,

अभयदानके काज ॥

मोक्ष गये करके अक्षनध्यान ॥दान०॥९॥

धन्ना शालिभद्र कुमार,

दानसे पाये सुख अपार।

सुबाहु कुंवर आदि सुखदाय,

गये जो स्वर्ग मोक्ष सुख पाय ॥

दोहा

अनन्त जीव जो तर गए,

भव संसार महान।

सभी तरहका सुखको पाते,

देओ सुपात्र दान ॥

कहां तक मैं कर सकूं बयान ॥दान०॥१०॥

धर्म दान है दो परकार,
सुपात्र अभयदान विचार
कह दिया सुपात्र दानका हाल,
सुनो अब अभयदानकी चाल ॥

दोहा

मरण भय सबसे बड़ा,
मरना न चाहै कोय ।
मरण भय जो कोइ मिटावै,
तन धन देकर सोय ॥
कमावे जगमें धर्म महान ॥दान० ॥११॥

श्रेष्ट ये सब दानोंमें दान,
कहा अंग दुसरेमें भगवान ।
इसीसे हुए हैं शांतीनाथ,
सुनो मेघरथ राजाकी बात ॥

दोहा

भय पाया परेवड़ा,
आया गोद मंझार ।
अपना तन दे उसे बचाया,

सफल किया अवतार ॥
लिया सर्वार्थ सिद्ध विमान ॥दान०॥१२॥
श्री श्री गर्दभालो मुनिराय,
केसरी वनमें ध्यान लगाय ।
सजती कपिलपुरका राय,
शिकार करनेको वन जाय ॥

दोहा

एक मृगके वाण लगा है,
आया मुनिके पास ।
देख मुनीको सजति राजा,
पाया अति ही त्राम ॥
कपता थोरे है राजान ॥दान०॥१३॥
कहे मुनि देता हूं अभयदान,
तू भी दे इनका ये दान ।
जगलके जीव दुखी महान,
अभय दे करले तू कल्याण ॥

दोहा

मुनि वचनको मानके,
लिया है सजम भार ।

कर्म खपाके मोक्ष पधारे,
है सूत्रमें अधिकार ॥
सार ये जिनमतका लो जान ॥दान०॥१४॥
पाखण्डो पाखण्ड फैलावे,
पाप अनुकम्पामें केवे ।
कंद और मूल मुख लावे,
भद्रक जीवोंको बंहकावे ॥

दोहा

अभयदानका अर्थ बदलकर,
उलटा देत दिखाय ।
नहीं मारे हैं अपने हाथसे,
वही अभय कहलाय ॥
इसीको कहना महा अज्ञान ॥दान०॥१५॥
मनमानी गप्पां चलाई,
नहीं पर भव चिन्ता आई ।
मनो कल्पित ये पंथ चलाय,
अभय अनुकम्पा दान उठाय ॥

दोहा ॥

अनन्त सँसार में हो अब रूलना,

करते ऐसे काम ।

बीतरागका आशय छोडो,

करते अपना नाम ॥

धाम नरकोंके लो पहिचान ॥दान०॥१६॥

अपना पेट भरनके काज,

प्रथम ही बांधो गाढी पाज ।

बोलत मुखसे न आई लाज,

आपही बन बैठे ए जहाज ॥

दोहा ॥

हम सिवाय संसारके,

सब कुपात्र नर नार ।

पात्र हमारे भरदो पूरण,

बोले बारबार ॥

औरको देना पाप महान ॥ दान०॥ १७॥

हमको दिया धर्म फल पाप,

औरको दिया पाप बतलाय ।

भूलसे दो दूसरेको दान,

तो पीछे से करलो पछतान ॥

दोहा ॥

ऐसी वात अनेक बनाकर,
फसा दिये नर नार ।
समझाना हो गया है मुश्किल,
चाहे आप करतार ॥
आती इनको करुणा महान ॥दान० ॥१८॥

ढाल दूसरी

म्हाने आवे अनुकम्पा किस विध,
तिरसी रे थांरी आतमा ।
प्रभु कृपा करीने सद्बुद्धि,
देवो तीरे आतमा ॥ टेर ॥
शासन नायक वीर प्रभू जी,
चौबिसमां जिनराज ।
साधु साध्वी श्रावक श्राविका,
सुमिरण करते आज ॥
भवोदधि और कलिकालमें,

यही तिरणकी जहाजरे ॥म्हा० ॥१॥
माताका उपकार परम है,
देव गुरू समान।
विनय भक्ति आज्ञाका पालन,
सुकृत माय बखान ॥
स्वर्ग सुखोंका साधन समझो,
यही प्रभूकी यानरे ॥म्हा० ॥ २ ॥
तीन ज्ञान धर थे जब प्रभुजी,
गर्भावास दरम्यान।
जननी की अनुकम्पा करके,
धर दिया निश्चल ध्यान ॥
जीवत रहते सजम न लू,
अभिग्रह पहिचानरे ॥ म्हा० ॥ ३ ॥
इस करणी मे पाप बताते,
कलियुगके सरदार ॥
चार ज्ञान धर चूके कहकर,
चढावे सिर पर भार ॥
पाप कहें वे पापी नर हैं,
पाखड मतके धार रे ॥ म्हा० ॥ ४ ॥

सर्वज्ञ मुखसे सुना है मैंने,
सुन जम्बू अणगार।
छद्मस्थपन में पाप न कीन्हा,
वीर एक भी वार ॥
आचारंग में सुधर्म स्वामी,
यह कीन्हा निर्धार रे ॥ म्हा० ॥ ५ ॥
कलीकाल के जन्मे कहते,
वीर गये हैं चूक।
अनुकम्पाका द्वेषी वेशी,
झूठ मचाई हूक।
अर्हन्त अवगुण वाद बोलकर,
सत्यसे गये हैं सूखरे ॥ म्हा० ॥ ६ ॥
छे लेश्या छद्मस्थ वीर में
इसको करके थाय।
चूका कहते वीर प्रभूको,
सूतर वचन उत्थाप।
झूठी कथनी कथी अज्ञानी,
सुनके उपजे ताप रे ॥ म्हा० ॥ ७ ॥
हाथ जोड़ कर शीश नमाऊं,

सुणो वीर भगवान ।
निन्दव मुखकी सुनी वार्ता,
मेरे दुखते प्राण ॥
कोप भाव मुझको मत आवो,
मागू प्रभुसे दान रे ॥ म्हा० ॥ ८ ॥
लेश्याका लक्षण फरमाया,
गणधरजी यू गाय ।
चातीसमा अध्येनको देखो,
सुणजो तुम चुलमाय ।
किंचित लक्षण तुम्हें सुनाऊ,
धारो हिरदय माय रे ॥ म्हा० ॥ ९ ॥
हिंसा कर्ता झूठ बोलता,
चोर लम्पटी जानो ।
महा ममत्वी प्रमादी पूरा,
तीव्र आरम्भी मानो
मन वच काया रखे मोकला,
कर छकायकी हानोरे ॥ म्हा० ॥ १० ॥
मयका अहित करनेवाला,
क्षुद्रिक जानजो भाई ।

पाप करन में साहसीक है,
इह परलोक डरनाईं ॥
जीव घात करते नहीं डरता,
हृदय कठोर दुखदाई रे ॥ म्हा० ॥ ११ ॥
नहीं जीती है इन्द्रयों पांचो,
भोगोंमें भरपूर ।
कृष्ण लेश्याका ये है लक्षण,
जानो महा कस्रूर ॥
(ऐसो) कृष्ण लेश्या कहे वीर जिनेन्द्रमें,
ज्यांसे मुक्ति दूर रे ॥ म्हा० ॥ १२ ॥
दूजेका गुण देखके करता,
ईर्षा जो तत्काल ।
तपस्या रहित कदाग्रही पूरा,
अज्ञानी कहो या बाल ॥
अनाचारी निर्लज्ज जो जानो,
विषय लंपट संभाल रे ॥ म्हा० ॥ १३ ॥
द्वेषी सबका महा धूर्त है,
आठों मदका करता ।
रस लोलुपी और आरंभी,

क्षुद्रिक दुर्गुण धरता।
लक्षण नील लेश्याका ऐसे,
वीरमें क्योंकर पाता ॥ म्हा० ॥ १४ ॥
टेढा बोले टेढा चाले,
टेढा ही करे काम।
कपटी अपना दोष छिपावे,
मिथ्या दृष्टी नाम ॥
अनार्य वज्र सरीसा बोले,
कर चोरीका काम रे ॥ म्हा० ॥ १५ ॥
गुणी जनो का मत्सर धरता,
कपोत लेश्या मानी।
ऐसी लेश्या वीरके कहते,
वे हैं बडे अज्ञानी।
कलीकाल की महिमा देखो,
कैसे ए अभिमानी रे ॥ म्हा० ॥ १६ ॥
प्रशस्त लेश्या पावे मुनि मे,
भगवती मे फरमाया।
प्रथम शतक उद्देशा पहिला,
पूरा भेद बताया ॥

महावीरके वचन अराधो,
सफल करो सब काया रे ॥ म्हा० ॥ १७ ।
द्रव्य भावसे प्रशस्त लेश्या,
वीर प्रभू में जानो ।
छ लेश्या पानेको अब तुम,
झूठी हठ मत तानो ॥
परभव निश्चय जाब नो सरे,
छोड़ देवो दुर्ध्यानोरे ॥ म्हा० ॥ १८ ॥
तीन भुवनमें रूप अनूपम,
कंचन वर्णी काया ।
पद्मगंधसे सुगन्ध अनन्ता,
श्वासोच्छ्वास सुखदाय ॥
उज्वल लोही मांस प्रभूका,
यही अतिशय कहाय रे ॥ म्हा० ॥ १९
महावीर की छद्मस्थअवस्था,
कैसे करूं बखान ॥
बारा वर्ष छःमास अधिक में,
पाये केवल ज्ञान ॥
घोर तपस्या करी वीर प्रभु,

काटे कर्म महान रे ॥ म्हा० ॥ २० ॥
ग्यारा वर्ष छेमास पचीस दिन,
तपस्या करी दयाल।
अन्न जल त्याग्यो सर्व प्रकारे,
तज निद्रा की चाल ॥
धर्म ध्यान अरु शुक्ल ध्यान में,
व्यतित कियो शुभ काल रे ॥ म्हा० ॥२१॥
किया न कोप किसी जीव पे,
किन्तु किया कल्याण ॥
पाली सुमती गुप्ति प्रेम से,
महाव्रत पांचो महान ॥
शीत ताप की ले आतापना,
खींचो ध्यान कमान रे ॥ म्हा० ॥ २२ ॥
देव मनुष्य तिर्यच कास रे,
सह्या परीषह भारी।
दुःख दिया नहि किसी जीव को,
थन सब के हितकारी ॥
गुण अनन्ता कहा तक गाऊं,
अल्प बुद्धि है म्हारी रे ॥ म्हा० ॥ २३ ॥

रिजु वालिका नदी किनारे,
ध्यायो शुक्ल ध्यान ।
नाश किया घनघाती कर्म जब,
प्रभु पाया केवल ज्ञान ॥
बहुत जीव को तारे प्रभु ने,
पाये पद निर्वाण रे ॥ म्हा० ॥ २४ ॥
अवधि मन पर्जव ज्ञान,
और पांचवाँ केवल ज्ञान ।
जो जो भाव देखा उन मांही,
वही किया वृद्धमान ॥
ऐसा प्रभु का सरणा लेवे,
निश्चय होत कल्याण रे ॥ म्हा० ॥ २५ ॥
जवाहिर लाल जो पूज्य प्रसादे,
जोड़ी गब्बू लाल ।
सरदार शहर के माय ने सरे,
सित्यासी के साल ॥
गावे जो कोई नर नारी,
तो पावे मंगल माल रे ॥ म्हा० २६ ॥

ढाल तीसरी

दान की महिमा अति भारी,
भाव शुद्ध से है सुखकारी ॥ टेर ॥
आज इस कालो काल माई,
निर्दयता रही जग छाई।
अनुकम्पा दान कौन देवे,
खोटो मौजा मे रेवे ॥

दोहा ॥

इण ऊपर कुगुरु मिले,
दी अनुकम्पा उठाय ॥
सहाय करे दुखिया को दान से,
उसमें पाप बताय ॥
ऐसे है जैन—वेश धारी ॥ दान० ॥ १ ॥
साधु हम भरत खड माई,
सुपातर हमहिज है भाई।
कुपात्तर और सभी जानो,
ऐसी तो कुगुरु करे ताणो ॥

दोहा ॥

पुण्य धर्म हम को दिया,
और को दियां पाप ।
पेट भराई परतक्ष दीखे,
कुगुरां को या साफ ॥
धरावे साधु नाम धारी ॥ दान० ॥ २ ॥
औरों को दान कोई देवे,
मांस खावे और वेश्या सेवे ।
तीनों ये सरीखा बतलावे,
ग्रंथमें लिख के दिखलावे ।

दोहा ॥

शंका हो तो देख लो,
भ्रम विध्वंशन मांय ।
महा कुकर्म दूजे को देना,
लिखते नहि शरमाय ॥
भ्रम ये फैलाया भारी ॥ दान० ३ ॥
अचित वस्तुकी देके सहाय,
दुखी का दुखड़ा देय मिटाय ।

कुकर्म इसको दिया बताय,
कुगुरु थोथा गाल बजाय ॥
दोहा ॥
कद मूल का नाम ले,
अचित को दिया छिपाय ।
भूले को भर्मावे भारी,
भरम की बात बनाय ॥
अवज्ञा सत्य की कर डारी ॥ दान० ॥ ४ ॥
अब तो सुधरो रे भाई,
कुगुरुकी तज दो कपटाई ।
रखो अनुकम्पा दिल माई,
मौज का मोह मेटो भाई ॥
दोहा ॥
अनुकम्पा से सभी सुधरते,
लो जिनवर का नाम ।
देश धर्म समाज का,
हितकारी है काम ॥
यही सुमति है हितकारी ॥ दान० ॥ ५ ॥

चौथी ढाल

मतो वांधोरे द्यांवबरोटी की वारियांरे ।
जासे होय संजमको खुवारियाँ रे ॥मतो०॥
जैनागम वीर फरमाया,
नहीं कहीं यह पाठ आया ।
नहीं कोई ज्ञानी दिखलाया,
नहीं किसी ने धारिया रे ॥ म०॥ १ ॥
सूत्र आजाण नरनारी भोले,
गुरुस्थानक में आकर वोले ।
घर वस्तु का भेद जो खोले,
हम घर है यह त्यारियां रे ॥ म० ॥ २ ॥
विविध माल को सुन कर वात,
गुरू जी मन में खुश हो जात ।
वचन मात्र से अति फूलात,
तुम हो बाई गुण कारिया रे ॥ म० ॥ ३ ॥
सिंघाड़े को पूछा जावे,

कहो तुम्हारे क्या क्या चावे ।
चीज कौन सी तुम को भावे,
लिखा ने को यह बीरिया रे ॥ म० ॥ ४ ॥
विविध तरह के पकान गिनावें,
मन मानो सागें मगवावें ॥
घी दूधका प्रमाण बतावे,
पड़े स्वाद की लारिया रे ॥ म० ॥ ५ ॥
श्रावक श्राविका हाजिर रेवे,
अमुक वासमे गोचरी केवे ।
नर नारी नेवता देवे,
खड़े रहे घर द्वारिया रे ॥ म० ॥ ६ ॥
भोजन लेख की होवे खबर,
चट पट त्यारी करे जबर ।
नहीं पर भव का रखते डर,
यह मोह की छारिया रे ॥ म० ॥ ७ ॥
अन्य भिक्षु भावना दिन आवे,
गुर्रा करके दूर भगावे ।
हरजा पापी पाप लगावे,
गुरु जो पधारिया रे ॥ म० ॥ ८ ॥

मन मान्या माल जो पावे,
चुप्प चाप पातर भर लावे ।
नहीं तरकई टुकड़ा करावे,
हाथ लगा लो नारियां रे ॥ म० ॥ ९ ॥
नर नारी परदेशां जावे,
भावना स्टेशन पर भावे ।
निन्दव शीघ्र वहां पर ध्यावे,
नही करे अवारियां रे ॥ म० ॥ १० ॥
पक्‍वानो से पात्र भरावे,
नर नारी को खुशी बनावे ।
देखो सदगुरु नाम धरावे,
लोप सूत्रकी कारियां रे ॥ म० ॥ ११ ॥
हमको अचम्भा अधिका आवे,
टुकड़ा वदले धर्म लजावे ।
फिर भी क्षमा क्षमा करवावे,
कलियुग की वलिहारियां रे ॥ म० ॥ १२॥
भूमर भिक्षा प्रभु फर्माई,
अण चिन्ती गोचरी वताई ।
ऐसो विधि शास्तर में आई,

खोलो अज्ञान किवारियाँ रे ॥ म० ॥ १३॥
जवाहिर लालें पूज्य गुरु राया,
करके कृपा थलीमे आया ।
इसका हम को भेद सुनाया,
जब समझे सुख कारिया रे ॥ म० ॥ १४ ॥
सरदार शहर सित्यासी साल,
जोड़ बनाई जैन ढाल ।
शुद्ध आहार से होत निहाल,
आई तिरन की वारिया रे ॥ म० ॥ १५ ॥

पाचवी ढाल

ब्रह्मचारी होतो कहो, थारं वारिया रे ॥ टेर ॥

साधु स्थान में रात पड्यां,

मत आओ नारियां रे ॥ ब्र० ॥

उत्तराध्ययन सूत्र के मांय,

सोलमा अध्ययन है सुखदाय।

ज्यामें भाष गया जिन राय,

प्रथम गथा देखो चित लाय॥

खोल हृदय किवाड़ियां रे ॥ ब्र० ॥ १ ॥

आचारंग को भावना देखो,

नववाड़ हृदय से देखो ।

सुनिये प्रश्न व्याकरण को लेखो,

अब तो काम राग ने छेको ॥

सीख सुख कारियां रे ॥ ब्र० ॥ २ ॥

स्त्री सहित मकान में रेवे,

और कथा उनही कोकेवे।
नशीथ, सूत्र प्रायश्चित देवे,
अष्टम उद्देशे देख लेवे,॥
किया निरधारिया रे॥ ब्र० ॥ ३ ॥
जैनी साधू नाम धराये,
सेवा बायों से कर वावे।
नहीं शरम जरा पिण आवे,
पुरुष पास में नहीं रहावे ॥
या सेवा दुख कारिया रे ॥ ब्र० ॥ ४ ॥
जिनेश्वर की आज्ञा को लोप,
मिथ्या धर्म को खूटो रोप ॥
भोले नर नारी है चोप (द)
बाधन वाले यही गोप ॥
न किसी ने विचारिया रे ॥ ब्र० ॥ ५ ॥
नारी स्वरूप शास्त्र में गाया,
जिसका पूरा भेद बताया।
महा ज्ञानी ध्यानी डिगाया,
तुम तो हो कलिकाल के जाया ॥
है नागन सी मारिया रे ॥ ब्र० ॥ ६ ॥

अग्नि पास गाळा घी रेवे,
सुर्त नोर स्वरूप कर देवे ।
संगत लाग्यां भस्मि नहिं रेवे,
यही उपमा ज्ञानी लेवे ॥
दूर रहे नारियां रे ॥ ब्रह्म० ॥ ७ ॥
मेरी हित शिक्षा सुन लीजे,
बन्दोवस्त शील का कीजे ।
नारि जात से दूर रहीजे,
जैनागम पर चित अब दीजे ॥
करके दिल उदारियां रे ॥ ब्र० ॥ ८ ॥
महावीर सुनो अरदासा,
'जैन बाल' की पूरो आशा ।
दो ब्रह्मचर्य समाधि वासा,
ज्यों भ भव मे सुख पासां ॥
मिले मुक्ति दुवारियां रे ॥ ब्र० ॥ ९ ॥

छठवीं ढाल

कुमति घट दर्शाई रे ॥ टेर ॥

अनुकम्पा दया को सावज
ठेराई रे ॥ कुमति घट० ॥

आचारग आदि बत्तीस सूतर,
सब ही जैन सिर धारा रे।

मूल पाठ अर्थ टीका अन्दर,
नहीं (यह) शब्द उचारा रे ॥ कु० ॥ १ ॥

कई व्याकरण कोष कितेई,
प्रसिद्ध दुनिया माई रे।

सावज अनुकम्पा शब्द पाया,
न व्युत्पत्ति पाई रे ॥ कु० ॥ २ ॥

टीका चूर्णि भाष्य बहुत है,
अवचूरि दीपिका जाणो रे।

न्याय अलकार वेद पुराण मे,
नहीं परमाणो रे ॥ कु० ॥ ३ ॥

अनुकम्पा कहो करुणा कहो चाहे,
दया शब्द उचारो रे।
तीनु ही शब्दका रक्षा करना,
अर्थ विचारो रे ॥ कु० ॥ ४ ॥
अवद्य कहते पापको भाई,
स शब्द आदि लगावे रे ॥
पाप सहित सावद्य शब्द बना है,
लो सूत्र दिखावें रे ॥ कु० ५ ॥
सहस्र किरण सूरज ऊगा मक,
अंधेरा अति छाया रे।
दोनों साथ में कभी नहीं रहते,
यही भ्रम माया रे ॥ कु० ॥ ६ ॥
शीतल चन्द्रमा कह दिया फिर,
अग्नि असा बनावे रे।
मूढ़ मती यों ही दया कह कर,
फिर सावज लगावे रे ॥ कु० ॥ ७ ॥
कारण कारज समझे नहीं मूरख,
बोधाने बहकावे रे।
कारण ने तो कारज बताई,

दया उठावे रे ॥ कु० ॥ ८ ॥
साधु ने असाधु कहे तो,
मिथ्यात लग जावे रे।
बेले हो कारण ने कारज बतावे,
तो मिथ्यात फैलावे रे ॥ कु० ॥ ९ ॥
गुरु भक्ति में तो लाभ बतावे,
दरशन करवा जाव रे।
गाडी घोडा ऊट रेल चढे जब,
जीव मर जावे रे ॥ कु० ॥ १० ॥
कारज तो गुरु भक्ति करना,
कारण असवारी जाणो रे ॥
कारणमें आरंभ पिण होवे,
लाभ कारज जाणो रे ॥ कु० ॥ ११ ॥
तिर्यंच हो कर दया जो पाली,
श्रेणिक नृप घर जाया रे।
मेघरथ राजा दया जो पाली,
तीर्थंकर कहलाया रे ॥ कु० ॥ १२ ॥
हरण गमेष्यादि कई देवता,
दया जीवा की कीधीरे।

महावीर अपने शास्त्र अंदर,
साक्षी दीधोरे ॥ कु० ॥ १३ ॥
धर्मरुचि दया करी तन देकर,
भव भय दुःख मिटाया रे।
जीव बचे जब नेमीनाथ जी,
धन बखशाया रे ॥ कु० ॥ १४ ॥
मन वचन से जीव बचावे,
जिसका पार नहीं पावे रे।
इसी तरह कोई जीव बचावे,
वे आनन्द पावे रे ॥ कु० ॥ १५ ॥
पशु होकर जीव बचावे,
संसार सिन्धु तिर जावे रे।
परम पशु वो नर है इसमें,
पाप बतावे रे ॥ कु० ॥ १६ ॥
अज्ञान पड़दा दूर करो अब,
अंतर आंखे खोलो रे।
जीव बचाये धर्म होत है,
यों मुख से बोलो रे ॥ कु० ॥ १७ ॥
दुखी देख कर करुणा कर लो,

मरते जीव बचावो रे।
जीव दया के प्रताप सभी दिन,
साता पावो रे ॥ कु० ॥ १८ ॥
मोह अनुकम्पा और सावज दया,
अब तो कहना छोड़ो रे।
पूर्व पाप का पश्चाताप करी ने,
कर्म को तोड़ो रे ॥ कु० ॥ १९ ॥
सवत उन्नीसौ साल मित्यासी,
सरदार शहर माही रे।
असोज बदी अष्टमी दिन में,
जोड़ बनाई रे ॥ कु० ॥ २० ॥
पूज्य जवाहिरलाल प्रसादे,
'जैन बाल' सुख पाया रे।
दया धर्म का मर्म भाव से,
गाय सुनायो रे ॥ कु० ॥ २१ ॥

अब करवाता रे ॥ इच० ॥ ८ ॥

अविधि से साधु स्थान में,
अगर आरज्यां जावे रे ।
ऊतरे बोल करे यदि वहां पर,
तो प्रायश्चित आवे रे ॥ इच० ॥ ९ ॥

व्यवहार सूत्र में साफ मना है,
देखो आंखे खोली रे ।
बिन कारण व्यावच नहि करता,
लो हिरदै तोली रे ॥ इच० ॥ १० ॥

गच्छाचार पईन्ना में लिखा,
आरज्यां आहार लावे रे ।
नपुंसक गच्छ कहा है वो,
जो आहार खावे रे ॥ इच ॥ ११ ॥

सुख सेज्जा बताई प्रभू जी,
ठाणायंग के माईं रे ।
साधु अपने हाथ से गोचरी,
लावे सदाई रे ॥ इच० ॥ १२ ॥

सरल होय कर शिक्षा सुनो,
हिरदै मांही धारो रे ।

पुरुषा कार पराक्रम करके,

मुगती पधारो रे ॥ इष० ॥ १३ ॥

॥ गजल ॥

कलियुग के ओ नाम धारी जैन,

श्रावक सुनिये जरा ।

दर्द हमको होत है

करतूत, तुम देखो जरा ॥ टेर ॥ १ ॥

लाकर दया गरीब को कोई,

दान अनुकम्पा करें ।

उसको पाप बताते हो तुम,

कैसे वाक्य ऊचरे ॥ २ ॥

बचावें मरते जीव को,

अभय दान प्रभुजोने कहा ।

धर्म के बदले में अब जो,

पाप ही तुम ने कहा ॥ ३ ॥

न्याये नीति युक्त कोई कर,

हे देशोत्थान हे ।

स्वार्थ अन्दर लिपटाय के,
कहते पाप जो महान है ॥ ४ ॥
माता पिता का पुत्र पे,
उपकार शास्तर में कहा ।
पाप एकन्त तुमने तो
सेवा करने में कहा ॥ ५ ॥
पतित पावन जैन दर्शन,
के नियम विशाल हैं ।
जिसके सहारे गर कोई,
चाले तो होवे न्याल है ॥ ६ ॥
राय परदेशी की निर्दयता,
बड़ो जो क्रूरता ।
देखो न गई चित सारथी से,
उसकी वही निष्ठुरता ॥ ७ ॥
प्रत्यक्ष ज्ञानी केसी स्वामी को,
कहे सरनाय के ।
सदुपदेश देवो प्रभुजी,
हम पे कृपा लाय के ॥ ८ ॥
अनेक पशुपक्षी को वे,

मौत से ये मारता।
जीवों की रक्षा होवे और,
राजा बने दया पालता ॥ ९ ॥
मानी अदानी है राजा,
तकलीफ भिक्षु को देत है।
दीजिये अब ज्ञान ऐसा,
सबसे भलाई लेत है ॥ १० ॥
कठोर कर से इनकी प्रजा,
सारी बनी व्याकुल है।
संतोष सबको हो प्रभु जी,
इन्हें ज्ञान दो अनुकूल है ॥ ११ ॥
पास में वा मेर आवे,
ज्ञान जरूर पायगा।
जो हजूर दास तेरा,
चरणों में उन्हें लायगा ॥ १२ ॥
अश्व का बहना बना के,
लाया मुनी के पास में।
युक्ति या दे ज्ञान की,
मुक्त किया मोह पास से ॥ १३ ॥

ज्ञानी बना ध्यानी बना,

दानी बना तपसी महा।

दुःख मिटाया सुखी बनाया,

धन गुरू केशी महा ॥ १४ ॥

मिथ्या श्रद्धा छोड के,

अब चित्त सम बन जाइये।

होयगा कल्याण सबका,

ये वात हिरदै लाइये ॥ १५

साल अठ्यासी भादरा में,

पूज्य जवाहिर लालजी ।

द्वादस सन्त साथ में,

विराजे शेष काल भी ॥ १६

इति शुभम्

शुद्धि पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध शब्द	शुद्ध शब्द
२४	११	भूल	मूल
२८	११	कृष्णजीका	कृष्णजीकी
३१	२	वा	(वा)
३२	१८	एयवो	एद्‌वो
४२	२	टाडा	ढाडा
४४	१२	टू सो	टूसी
४७	३	दृष्टाात	दृष्टात
४७	१८	ठाणा	ठाणो
६७	१८	गान	गाथा ८
७१	१८	तियच	तिर्यं च
८१	१८	आनो	आणो
९३	१	छोडो	छोडी
९५	१६	व्रतनेम	व्रतनेनेम
९७	४	डुबयो	डुबोयो

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध शब्द	शुद्ध शब्द
९९	१८	धम	धर्म
१०२	७	प्रत्येक वोसी	प्रत्येकवोध
१०७	१	काउसरग	काउसग्ग
१०७	९	सोगल	सोमल
११३ सें ११ से १३वीं लैन तक		दोवार छप गयाहै	
१२९	२	वोलणरा	वोलणरी
१४०	६	यावे	ध्यावे
१४२	१४	आवे	भावे
१४३	१५	"क	एक
१५५	३	बकरो	बकरा
१६८	४	बहुगण	बहुगुण ।
१७१	७	घाल्यो	घाल्यो ।
१७४	९	दावा	दाव
१८०	११	जा	जो
१८२	४	मिन्ना	मिन्नी
१८४	१२	बचाय	बचाया
१८५	१२	कुत्ता	कुत्ता
,,	,,	ि ड़िया	चिड़िया

पृष्ट	पक्ति	अशुद्ध शब्द	शुद्ध शब्द
१८५	१८	टावडो	झावडा
१८७	६	जा	जो
१८९	१४	जाव	जीव
,,	,,	जा	जा
१९६	१८	बचया	बचाया
२०२	७	घम	धर्म
२०५	११	मारता	मरता
*२०९	४	याड़यारोतियारे	पाडणरी निणरे
२१७	१८	करनेको	करने हो
२१९	११	३९	५९
,,	१५	हो	हो
२२४	५	सेणिक	श्रेणिक
,,	६	तुम्हे	म्हे
२२६	१०	तणो	तणी
२२७	१७	वारजो	बीरजो
२२९	७	चीरो	चोर
२३६	३	बारा	बारी
२४१	११	उणों	उण

* कुछ प्रतियों में शुद्ध छपा है।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध शब्द	शुद्ध शब्द
२४२	४	लग्या	लाग्या
२५८	१६	थोड़ी	थोड़ा
२५९	७	देखा	देखें
२६६	५	पापोण	पापो
२८५	१२	पतावे	बतावे
३०४	१२	बचवा	बचावा
३०५	७	करा	करो
३०७	१३	धनथा	धनथी
३१३	१३	जहाना	जहानं
३२४	१४	थाय	थापं
३२६	७	कुष्ण	कृष्ण
३३४	७	आजाण	अजाण
३४०	१४	भ	भव
३५१	[illegible]	बहना	बहाना